

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180599

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—44-69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82

Accession No. G·H·3580

Author M21A

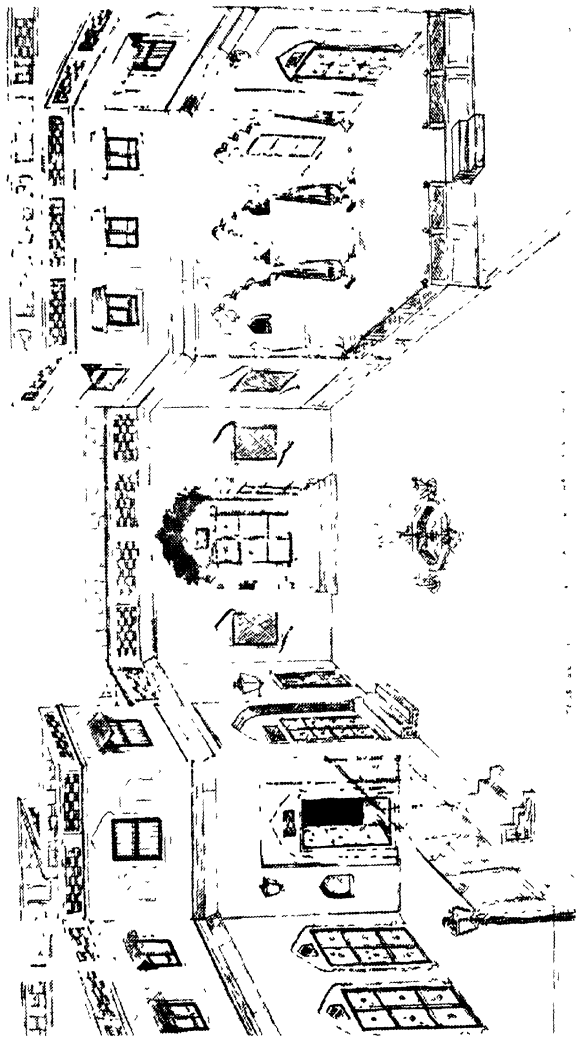
Author महेश्वरदयाल .

Title १८५७ की दिल्ली . 1959 .

This book should be returned on or before the date
last marked below.

लेखक की अन्य रचनाएँ

१. भक्की और दूसरे ड्रामे
(रेडियो ड्रामे)
२. दो सौ वर्ष पहले की दिल्ली में हिन्दुओं का रहन-सहन
३. रेडियो की भलकियाँ



यह नाटक इस ढंग से लिखा गया है कि उसमें पदों के बदलने की आवश्यकता नहीं रही है ।

१८५७ की दिल्ली

लेखक

महेश्वरदयाल

प्रस्तावना-लेखक

डा० ताराचन्द

भूतपूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय;
शिक्षा सेक्रेटरी, भारत सरकार; एवं ईरान में
कूटनीतिक प्रतिनिधि

१९५६

भारती साहित्य मन्दिर

फव्वारा — दिल्ली

भारती साहित्य मन्दिर

(एस० चन्द एण्ड कम्पनी से सम्बद्ध)

आसफअली रोड

नई दिल्ली

फव्वारा

दिल्ली

माई हीरां गेट

जालन्धर

लालबाग

लखनऊ

मूल्य २.५०

गौरीशंकर शर्मा, भारती साहित्य मन्दिर, फव्वारा, दिल्ली, द्वारा
प्रकाशित एवं इण्डिया प्रिंटर्स, एस्प्लेनेड रोड, दिल्ली में मुद्रित

पं० गोविन्दवल्लभ पन्त
गृह-मन्त्री, भारत सरकार
के
कर-कर्मियों में

प्रस्तावना

१८५७ की दहकती आग में पुराना हिन्दुस्तान राख में मिल गया । यह वह हिन्दुस्तान था जिसका एक समय सारे संसार में डंका बजता था । ईरान, तूरान, अरब और रोम में ही नहीं, चीन से लेकर इंग्लिस्तान तक इसके धन-दौलत और पराक्रम, ज्ञान और साहित्य, कला और कौशल का सिक्का माना जाता था । इसकी संस्कृति और सभ्यता का सूरज बीच आसमान पर चमकता था और लोग पतंगों के समान यहाँ खिंचे चले आते थे । यूरोप से पुर्तगाली और वलंदेजी आये फिर फ्रांसीसी और अंग्रेज । पहले तो उन्होंने राजों-महाराजों, अमीरों और नवाबों की खुशामद की, रियायते मांगने के लिये तोहफे और उपहार पेश किये, दरबार में नंगे पैर खड़े होकर सलाम, वण्डवत् और माथा टेकने की रस्मे अदा कीं । फिर आपस में होड़ शुरू हुई । अन्त में तीन जातियों की पराजय हुई और अंग्रेजों ने बाजी जीती । इनका व्यापार जम गया । इधर इनका कारोबार बढ़ा उधर मुगल साम्राज्य अपने वैभव की ऊँची चोटी पर पहुँचकर पतन की सीढ़ियों पर उतरने लगा । सम्राट के घराने की घरेलू लड़ाइयों और मनसबदारों और प्रान्तों के पालकों की ईर्ष्या और स्पर्धा ने अराजकता की आग को भड़काया । साम्राज्य की नींवें डगमगाने लगीं । अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान की फूट और कर्मचारियों के स्वार्थ से फायदा उठाया । पहले मद्रास फिर बंगाल में राज के कामों में हाथ डालना शुरू किया । मीर जाफर को साधन बनाकर सिराजुद्दौला को सिंहासन से गिरा दिया । अब उनका बंगाल पर प्रभुत्व जम गया । पर इस डर से कि कहीं हिन्दुस्तानी सावधान न हो जायें दिल्ली सम्राट शाहआलम से सूबे की दीवानी का पट्टा ले लिया । और मुगल साम्राज्य के कर्मचारियों की पंक्ति में शामिल हो गये । अंग्रेज कम्पनी का खजाना बंगाल की लूट से मालामाल हो गया ।

मोह बढ़ा और कम्पनी राज्य का स्वप्न देखने लगी । नेपोलियन ने अंग्रेज जाति को हुकानदारों की क्रौम कहा था । अंग्रेजी कम्पनी सारी हुकानदारी के सिद्धान्तों पर निर्भर थी । अपना खर्च कम हो

और काम पूरा । उन्होंने अपनी फ़ौज बनाई तो उसमें सस्ते दामों पर हिन्दुस्तानी सिपाही भरती किये, और उन्हीं को हिन्दुस्तान की विजय का साधन बनाया । उस पर भी तुरा यह था कि न उनके धर्म का सत्कार था, न उनकी इज्जत-आबरू की परवाह । हिन्दुस्तान का धन अंग्रेजों जहाजों में लद-लद कर इंग्लिस्तान जा रहा था । हिन्दुस्तान के व्यवसायियों को जबरदस्ती बन्द किया जाता था । व्यापार के ऐसे नियम बनाये थे कि हिन्दुस्तान इंग्लिस्तान का गुलाम होकर रहे । डलहौजी ने रही-सही रियासतों की अधमूई स्वाधीनता का भी अन्त करने की ठहराई । अवध के ताजदार वाजिद अलीशाह को सिंहासन से उतारा और देश से निकाल दिया । हिन्दू राजाओं की गोद लेने की पुरानी रीति जो शास्त्रों के अनुसार थी उसे रद्द कर दिया । इस तरह के प्रयोगों ने ऊंची श्रेणियों में उदासी और व्याकुलता की लहर दौड़ा दी । लगान और मालगुजारी के बन्दोबस्त से गाँव-गाँव में असन्तोष के भाव फैल गये । अन्त में जब फ़ौज में नये कारतूस चलाये जिन पर सूअर और गाय की चर्बी से लिपे-पुते कागज चढ़े थे जिन्हें खोलने के लिये दाँतो से काटना पड़ता था तो क्रोध की ज्वाला भड़क उठी । सिपाहियों की शिकायतों के बारूदखाने में कारतूसों ने चिंगारी का काम दिया । बारकपुर से लपट उठी और उसने दम के दम में सारे हिन्दुस्तान में आग लगा दी । दस मई के दिन भेरठ छावनी के सिपाही उठे । उन्होंने अंग्रेज अफ़सरों को कुचल डाला, कैदखानों के दरवाजों को खोल दिया । बन्दियों को लिया और “दिल्ली चलो” के नारे लगाते हिन्दुस्तान की राजधानी की राह ली ।

हिन्दुस्तान के जर्जर क़लेवर की रगों में नये रक्त की धारा ने प्रवाह किया । विदेशियों के आतंकों और उपद्रवों से जो लज्जाजनक घटना उपजी थी, उसने स्वाभिमान और आत्मगौरव के भावों को उत्तेजना दी । एक बार फिर अपने प्रताप और मान के चित्र आँखों के सामने फिरने लगे, जिन्होंने मुग़ल साम्राज्य के विधान को अन्त करने में ज़रा भी संकोच नहीं किया था । उन्हीं के वारिसों ने केन्द्रीय शक्ति की ज़रूरत को पहचाना और उसके पुनर्जीवन का बीड़ा उठाया ।

पेशवा के वारिस नाना साहब ने बहादुरशाह की आधीनता स्वीकार की । अवध के अध्यक्ष बिरजीसक्त्र ने दिल्ली की आशाओं को सिर पर रखा । रहेलों के सरदार खान बहादुरखां ने रहेलखण्ड में बहादुरशाह के नाम पर शासन चलाया । बिहार के ताल्लुकदारों, बंगाल के जमींदारों, राज-पूताना के राजाओं, मराठा सरदारों, पंजाब और हैदराबाद में एक ही भाव प्रेरित था । अर्थात् अंग्रेजों को निकालकर मुगल साम्राज्य की परम्परा को दुबारा स्थापित करना । ११ मई के सबेरे मेरठ के सिपाही लाल किले के दरवाजे पर आ खड़े हुए । सम्राट की सेवा में उनका एक निवेदन था । वह चाहते थे कि बहादुरशाह हिन्दुस्तान के सिंहासन पर बैठे और राज-मुकुट धारण करे । बहादुरशाह बूढ़े थे, कमजोर थे । उन्होंने बहुत आपत्तियाँ सही थीं । उनके लिये जीवन-मृत्यु का सवाल था । इसीलिये संशंक होना स्वाभाविक था । लेकिन बूढ़े सम्राट ने अन्त में निश्चय किया । जो कुछ भी हो वह अपनी सेना का साथ देगा । किले में फौजों की धमाधमों थी । अंग्रेजों को दिल्ली से बाहर करने की तदबीरों पर विचार हो रहा था । बादशाह किसे सेनापति का स्थान देंगे । एक तरफ शाही घराने के शाहजादों का सवाल था । दूसरी तरफ रण की कठिनाइयों का विचार था । शाहजादों की उम्र खेल-कूद में कटी थी, लड़ाई का तजुर्बा न था पर हर एक के सिर पर सेना की नेतागिरी का भूत सवार था । ऐसे अफसर जिन्हें लड़ाई का अनुभव हो और लड़ाइयों की चालों की समझ हो कम थे । लड़ाई की गुत्थियों को सुल-झाना और शहर को लूटमार और उपद्रवों से बचाना था । समय बड़ा नाजुक था । अंग्रेजी व्यवस्था समाप्त हो चुकी थी । लुच्यों और गुण्डों को अच्छा मौका हाथ आया था । कोई हिन्दू-मुसलमानों को एक दूसरे के खिलाफ भड़का रहा था, तो कोई पुराने बदले चुकाने में लगा था । शहर में कोलाहल था । शहर के सभी रईसों, शरीफों, साहूकारों का किले से सम्बन्ध था, किले की एक-एक बात शहर में गूँजती थी । हिन्दुस्तानी सिपाहियों के मन में अंग्रेजों से घृणा और उनसे प्रतिकार के चर्चे दिल्ली के मुहल्लों में हर-एक की जबान पर थे । ११ मई की घटनाओं से व्याकुलता बढ़ी, क्रोध और उद्वेग की नदी उमड़ पड़ी । हर

आदमी सोचता था, किस तरह अंग्रेजों को शहर से भगायें। अंग्रेजी बल के केन्द्रों पर कब्जा करे। स्वतन्त्रता का उत्सव मनाये। इस १०० वर्ष पहले की दिल्ली में जहाँ मुगल संस्कृति फली-फूली थी। इन घटनाओं का असर हुआ, सन् १८५७ में दिल्लीवालों पर क्या बीती, इसे महेश्वरदयालजी ने इस नाटक में दर्शाया है। महेश्वरदयाल इस पुरानी दिल्ली के एक प्रसिद्ध घराने के नौनिहाल है। इन्होंने अपने उन बड़े-बूढ़ों की आँखें देखी हैं जो सन् सत्तावन के हत्याकाण्ड के साक्षी थे। दिल्ली की पुरानी सभ्यता की छाया में इनका पालन-पोषण हुआ था। यह दिल्ली के रंग-ढंग से अच्छा परिचय रखते हैं। दिल्ली की बोलचाल और मुहावरों से परिचित है। प्रस्तुत नाटक में इन्होंने सन् सत्तावन की दिल्ली का सफल चित्र खींचा है।

इस नाटक की विलक्षणता यह है कि यद्यपि लाल क़िले के रंगमंच के साथ खेल का सम्बन्ध है। पर यह गुप्त ही रहता है और इसके सभी पात्र दिल्ली के कूचे और बाजारों में ही दिखाई देते हैं। यह पात्र जनसाधारण की श्रेणी से लिये गये हैं और इन्हीं की कृतियों से ड्रामे का ढंका बना है। अमीर शाहजादे और यहाँ तक कि बादशाह भी सामने नहीं आते हालाँकि सारा नाटक इन्हीं के चारों ओर चक्कर काटता है। सन् सत्तावन की घटनाओं के बादशाही केन्द्र हैं पर वह नाटक में पर्दे के पीछे रहते हैं। कला की कसौटी पर नाटक खरा उतरता है। नाटक की कला का आधार मनुष्य की वह सर्व-व्यापक वृत्तियाँ हैं जो नैतिक, सामाजिक और मानसिक संघर्षों से उत्पन्न होती हैं। इन वृत्तियों का एक इतिहास है। पहले दो ही शक्तियाँ एक दूसरे के सामने आकर खड़ी होती हैं फिर उनमें टक्कर होती है और अन्त में हारी और जीती शक्तियों का क्षोभ शान्त होता है। इन्हीं तीन मात्राओं के मेल से ड्रामे का साँचा तैयार होता है। ड्रामा जो हमारे सामने है इसकी रचना इसी ढंग पर हुई है। १८५७ का नाटक एक ट्रेजेडी है। देखने की हिन्दुस्तानियों की हार होती है। विप्लव के हिन्दुस्तानी नेता अंग्रेजी प्रतिकार के शिकार होते हैं या गुमनामी में रोटियों को तरसते अपनी सारी उन्नति बिताते हैं। बहादुरशाह के बेटे बड़े बाप

के सामने सीनों पर गोलियाँ खाते हैं और दम तोड़ते हैं । मुगल घराने का आखिरी ताजदार स्वदेश से दूर जेलखाने की मुसीबतों को भेलता हुआ अपने असफल जीवन को समाप्त करता है लेकिन काले बादलों के अंधेरे में एक सुनहरी किरण की झलक दिखाई देती है । क्षितिज पर धुंधले आकाश की कालिमा उजाले में बदलती दृष्टिगोचर होती है । आधी रात की गहरी अधियारी में आशा की ज्योति फूटती है और सन्देशा देती है कि 'स्वतन्त्रता का सूरज उगने वाला है' ।

राज्य सभा, नई दिल्ली

डॉ० ताराचन्द

[परदा उठने से पहले]

भाट : यह दिल्ली वो दिल्ली है, जिसका मुहाग बार-बार लुटा फिर भी सदा मुहागन ही कहाई । सल्तनते आवाद हुई, बरखाद हुई पर इसका चमन यूँही हरा-भरा रहा । इसकी जमीन में वो कशिश है जो यहाँ आया बस यहीं का हो रहा । दिल ले लेती है हर किसी का ! जभी तो इसका नाम दिल्ली है । आइये ! आज आपको भी १८५७ की उग दिल्ली में लिये चलते हैं जिसकी बोली-टोली का लुत्फ ही कुछ और था ।

यह दिल्ली और दिल्लीवालों की कहानी है । कहानी नहीं हकीकत है । आप इस ड्रामे में न बादशाह सलामत देखेंगे न बेगमात और गहजादे, न अंग्रेज और न देसी सिपाही । बस सिर्फ दिल्ली के चन्द शहरी । शरीफ और भलेमानस, गुण्डे और बदमाश, कमजोर और डरपोक, बहादुर और जवांमर्द ।

हाँ, तो फागुन का समां है और मुंशीजी का मकान ।

पहली मजलिस

[परदा उठता है । मुगलिया जमाने का एक दुमंजिला मकान । बीचोंबीच एक सहन है, सहन में एक फुवारा है ।

स्टेज के बाईं तरफ दीवानखाना है और दाहिनी तरफ जनानखाना है। सहन के सामने महाराबदार ड्योढ़ी है। ड्योढ़ी में ऊपर की मंजिल में जाने की सीढ़ियाँ हैं। ड्योढ़ी का दरवाजा खुलता है। नत्थू ऊपर की मंजिल से नीचे आता है। कंधे पर भाड़न पड़ा है, हाथ में भाड़ू है। मसनद पर बिछे फर्श की सिलवटें निकालता है। सब चीजें करीने से रखता है। काम करता जाता है, गुनगुनाता जाता है। गली का चौकीदार दाखिल होता है। एक हाथ में लठ और दूसरे में लालटेन है।]

चौकीदार : नत्थू भैया ! होली गा रहे हो क्या ?

नत्थू : (मुड़कर) ओ ! चौकीदार जी ! तुम ? राम-राम ।

चौकीदार : जै रामजी की । (तम्बाकू फाँकते हुए) कहो, क्या इरादा है ? छिनेगी क्या ?

नत्थू : अरे भैया कैसी भंग और कैसी दारू ! नत्थूराम तो यूँही मस्त है। मुंशीजी के बच्चे भले और हम भले। हमें कहाँ फुर्सत इन बातों की और फिर आज तो होली का दिन है। आज तो वैसे ही ऊधम मचेगा, महमानों का आना-जाना रहेगा।

चौकीदार : शहर में आज बड़ी हलचल है। जिधर देखो आदमी ही आदमी।

नत्थू : होली का दिन जो हुआ। लोग रंगरलियाँ मना रहे हैं।

चौकीदार : नहीं भाई ! यह बात नहीं, मामला कुछ और ही है।

नत्थू : तो फिर क्या बात है ?

चौकीदार : लोग बहुत बेचैन दिखाई देते हैं।

नत्थू : क्यों ?

चौकीदार : किसी ने कल रात जामा मस्जिद की दीवार पर एक इश्तहार चिपका दिया । बस, भड़क उठे हैं सब लोग ।

नत्थू : कैसा इश्तहार ?

चौकीदार : एक कागज का पुर्जा-सा । कहते हैं, कोई लगा गया ... और पता नहीं कहाँ गायब हो गया ?

नत्थू : यह तो सुन लिया ! पर लिखा क्या था उसमें ?

चौकीदार : कहते हैं, थोड़े दिनों में जंग होने वाली है । बाहर से बादशाह आ रहे हैं ।

नत्थू : ऐसे ही किसी ने उड़ा दी होगी...यह दिल्ली है दिल्ली ! होगा कोई मस्त कलंदर ।

चौकीदार : मस्त कलंदर नहीं—एक फ़रिश्ता ! रात को आममान मे उतरा और इश्तहार लगाकर उड़ गया ।

नत्थू : तू चौकीदारी करे है, या सोवे है ? फ़रिश्तों के सुपने आ रहे हैं तुझे ?

चौकीदार : तू तो कभी मेरी बात मानता ही नहीं । हर वक्त हँसी उड़ाता है । बाहर जायेगा तो खुद ही पता चल जायेगा ।

[चौकीदार ड्योढ़ी की तरफ़ जाता है ।]

नत्थू : (आवाज़ लगाकर) ए भैया ! चौकीदार ! ये लालटेन ड्योढ़ी में मत रखना । होली खेलने वाले आते होंगे । कोई ऐसी ठोकर मारेगा कि लालटेन की किरचें भी नही मिलेंगी ।

चौकीदार : तो कहाँ रखूं फिर ?

नत्थू : ऊपर ले जा, कुठरिया में मेरी ।

[चौकीदार ऊपर जाता है, गुलशन आती है ।]

गुलशन : अय हय, फिरते-फिरते कमर टूट गयी ! अय नत्थू !

ओ नत्थू !! जरा टोकरा तो उतरवाइयो !

नत्थू : ओ, हो ! आ गई बी नखरीली हुकुम चलाती । सबेरा हो गया बी गुलशन का !

गुलशन : बोझ-तले दम निकला जा रहा है । ले अब उतरवा भी दे ।

नत्थू : जरा सबर करो बी । कमरा तो साफ कर लूँ ।

गुलशन : (परेशान होकर) खुदा की कसम । देखो तो सही—
कैसा इंसान है ? जरा हाथ लगवा दे ना ।

नत्थू : नजाकत तो देखो ।

गुलशन : तुझे दिल्लगी सूझ रही है, यहाँ जान पर बनी है ।

नत्थू : चार चूड़ियाँ टोकरे में हैं और कहती है जान पर बनी है ।

गुलशन : हाय अल्ला ! इतना झूठ ? तौबा-तौबा इतने लच्छे चूड़ियों के सिर पर धरे है । इस दीदे-फूटे को चार ही नजर आ रहे हैं ।

नत्थू : अच्छा, ना करने दे काम । चल पहले तेरा टोकरा ही उतरवा दूँ ।

[नत्थू टोकरा पकड़ता है ।]

गुलशन : (टोकरा उतरवाने से पहले) अल्ला तेरी उमर में बरकत दे, माहिबे इक़बाल बनाए !

नत्थू : फिर वो ही बात ? खबरदार जो मुझे कोसा ।

गुलशन : अय, तुझ पर खुदा की मार ! कैसा जुल्मी है । मैं तो दआएँ दे रही हूँ और यह उल्टा मुझे बरा-भला कह

रहा है ।

नत्थू : न मुँह मे दाँत, न पेट में आँत । बददुआएँ दे-देकर
मुझे मारने का इरादा है क्या ? मैं कौए खाकर थोड़े ही
प्राया हूँ । अब कब तक जिऊँगा ।

गुलशन : अच्छा, अब उतरवा भी दे । बोझ, सहा नहीं जाता ।

[नत्थू टोकरा उतरवाता है । गुलशन फसकड़ा मारकर
बैठ जाती है । चौकीदार नीचे आता है । गुलशन के पास
आकर खड़ा हो जाता है ।]

चौकीदार : बी सलाम ।

गुलशन : सलाम भाई सलाम ! अच्छे हो ?

चौकीदार : क्यों नत्थू ! गुलशन से पूछूँ शायद इसे मालूम हो ।

नत्थू : तुझे तो एक बात की धुन लग जाती है । इस बेचारी
को क्या मालूम !

गुलशन : क्या हुआ ?

नत्थू : अरी भागवान, अपने सर से इडवी तो उतार ले ।

गुलशन : हाय ! मैं तो भूल ही गई ! (इंडवी उतारकर)
हाँ, अब सुना ।

चौकीदार : तूने सुना ? यह सब लोग इश्तहार की बात... ..!

गुलशन : (चौककर) इश्तहार, कैसा इश्तहार ?

चौकीदार : जामा मस्जिद पर रात बड़ी भीड़ थी ।

गुलशन : जामा मस्जिद पर भीड़ न होगी तो क्या तेरे घर पर
होगी ?

चौकीदार : ऐसी भीड़ तो न ईद पर देखी न बकराईद पर ।

गुलशन : अय मैं भी कहूँ क्या कह रहा है । वो जामा मस्जिद
वाले इश्तहार की बात ! ईरान का बादशाह आ रहा है ।

हजूर । जहाँपनाह ने बुलाया है, अपनी मदद को ।

नत्थू : (चौकीदार की तरफ इशारा करके) इसने फरिश्ता देखा । (गुलशन की तरफ इशारा करते हुए) और इसने ईरान का बादशाह ! (अपनी तरफ इशारा करते हुए) हम कोरे के कोरे रह गये ।

चौकीदार : हैं गुलशन ! ईरान का बादशाह ? और क्या लिखा था इश्तहार में ?

गुलशन : अय ! मैं क्या जानूँ, मेरे लिए तो काला अच्छर भैस बराबर ।

चौकीदार : बी, कुछ सुना तो होगा ।

गुलशन : हाँ ! हाँ !! यही कि, रूस की फ़ौजे आ रही है, इन मुए फिरंगियों को मारने ।

नत्थू : सुन लिया चौकीदार—फ़ौजों की सरदार है यह ! जा भई जा ! अपना काम कर । इसकी बातों में कहाँ आ गया ? यह सब चण्डूखाने की खबरें हैं—आ जायगा जिसे आना होगा । हमें क्या ? (जाने की चेष्टा करता है)

गुलशन : अरे हाँ, तेरा क्या जाय, कोई भी आए तू तो बस पड़ा पड़ा ऐड़ा कर । (चौकीदार से) क्यों जी, चौकीदार जी ! अब तुम ही बताओ हमारा मुल्क, हमारा बादशाह, हमारा रुपया-पैसा, सब छीन लिया, इन मुए फिरंगियों ने—गुस्सा न आए ?

नत्थू : (पलटकर) हथौड़ा दे मार इनके सर में……जैसे यह ही कुछ कर लेगी ।

गुलशन : तू मत बोल । तू तो चूड़ियाँ पहन ले चूड़ियाँ । हाँ !

हाँ !! हमारे बस का जो कुछ होगा, करेगे । औरतों को समझा क्या है तूने ?

[नत्थू अन्दर चला जाता है ।]

चौकीदार : लेकिन गुलशन इन फिरंगियों से कौन लड़ेगा, किस की ताकत है ?

गुलशन : जिसे दुख होगा, जिसे तकलीफ पहुँचेगी । आज दिल्ली में कौन ऐसा है जो खुश हो । सब तग आ चुके हैं । क्या बादशाह, क्या रैयत, सब को तबाह कर डाला इन फिरंगियों ने । गुलाम होकर रह गए हैं ।

चौकीदार : तू ठीक कहती है गुलशन ! इस गुलामी की जिन्दगी से तो आजादी की मौत अच्छी ।

गुलशन : और तो और ये कमबख्त हमारा दीनो-ईमान बिगाड़ने पर तुले हैं । मजहब बदलने की कोशिश.....

चौकीदार : क्या कहा गुलशन ! हमारे धर्म पर हमला ?

गुलशन : हाँ ! हाँ !! चाहते हैं सब ईसाई हो जाएँ । ये मन्दिर और मस्जिद गिरजाघर बन जाएँ ।

चौकीदार : क्रिस्तान बनाना चाहते हैं हमको ?

गुलशन : गरीब गुरबा क्या करें बेचारे, जबान खोल नहीं सकते, उनके पंजे में आ जाते हैं ।

चौकीदार : (कड़ककर) अगर इन फिरंगियों ने हमारे धर्म का नास किया तो हम उनका सर कुचल देंगे ।

[गामी खाँ ड्योढ़ी से भाँकता है ।]

गुलशन : (चौंककर) हैं, यह कौन ?

चौकीदार : (पलटकर) क्या हुआ गुलशन ?

गुलशन : अभी-अभी ड्योढ़ी से कोई भाँक रहा था ।

चौकीदार : (ऊँची आवाज में) कौन है बाहर ?

[गामी खाँ अन्दर आता है ।]

गामी खाँ : माधो है ? जरा बुला दो उसे—कहना गामी खाँ आया है, होली मिलने । (आवाज देता है) माधो !

गुलशन : होली मिलने तू ? माधो से ? तू उसका कब से दोस्त हुआ ?

गामी खाँ : तू कौन है बीच में दखल देने वाली ... मनिहारन कही की !

गुलशन : अय खबरदार जो ज्यादा ची-चपड़ की । गुद्दी से खीच लूँगी जबान । समझा क्या है तूने ? हाँ नहीं तो ... मैं तेरी सब बातें जानू हूँ ।

गामी खाँ : जा जा ! किसी और पर धौंस जमा । जानती नहीं मैं कौन हूँ ?

चौकीदार : (लट्ट उठाकर और गामी खाँ के करीब जाकर) कौन हो जी तुम ? शर्म नहीं आती, औरतों से लड़ते और घर में घुसते ? जाओ, बाहर जाओ—(गामी खाँ बाहर जाता है । माधो आँखें मलता हुआ आता है, रात का बासी हार सूँघ रहा है ।)

माधो : यह सवेरे-सवेरे हमें किमने पुकारा ? जानते नहीं हम आराम फरमा रहे हैं । शर्म नहीं आती हमें जगाते ! हाय ! हाय ! कैसा हसीन स्वाद था, मजा किरकिरा हो गया ।

गामी खाँ : (बाहर से) माधो ! माधो !

माधो : यह कौन कम्बख्त चिल्ला रहा है, गला फाड़ रहा है ?

चौकीदार : अपना नाम गामी खाँ बताता है । कहता है मैं

हजूर का दोस्त हूँ ।

माधो : कौन ? गामी खो, भई कमाल कर दिया । पहले से क्यूँ न बताया । दोस्त कहते हैं मियाँ ! वो तो मेरा जिगरी है जिगरी...आया ! प्यारे आया ! (माधो गुनगुनाता है—मारे नैनवा के बान.....)

[माधो गाता हुआ जाता है ।]

गुलशन : खुदा खैर करे । मुझे तो लच्छन अच्छे नजर नहीं आते ! माधो की इससे दोस्ती अच्छी नहीं ।

चौकीदार : कौन था ये गुलशन ?

गुलशन : (चौकीदार को करीब बुलाकर समझाती है) बस ध्यान रखियो, मैने जतला दिया है तुम्हे ।

चौकीदार : तू फ़िकर न कर गुलशन ! ऐसे-ऐसे मैने कितने ही देखे हैं ।

[नत्थू आता है । हाथ में दो पीढ़े हैं ।]

नत्थू : क्या बात है चौकीदार ! अभी तक यहाँ डटे हो ? उलझ गये गुलशन की बातों में ।

गुलशन : (चौकीदार से) तू बड़ा बहादुर मालूम होता है । तेरे जैसे ही तो बेड़ा पार करेगे ।

[चौकीदार मूँछों पर ताव देता है ।]

चौकीदार : एक दफ़ा मेरे हथे चढ़ जाँँ ये फ़िरगी फिर देखियो । मार-मारकर कचूमर निकाल दूँगा । (नत्थू हँसता है) नत्थू भैया ! तुम्हारे बस का कुछ नहीं, तुम तो इमली के पत्ते पर डण्ड पेलो ।

गुलशन : क्यूँ रे नत्थू ! बहूजी से कह दिया । मनहारिन बैठी है ।

नत्थू : हाँ ! हाँ !! कह दिया । अभी आ रही हैं । (चौकीदार

जाता है। गुलशन चूड़ियाँ खोलती है और लच्छे जमीन पर रखती है। नत्थू पीढ़े बिछाकर जनानखाने की तरफ जाता है। बहूजी आती हैं।)

बहूजी : (जनानखाने की ड्योढ़ी से) अय गुलशन, तुमने तो गजब कर दिया। इतना दिन चढ़ आया। (पास आकर) त्योहार के दिन तो जल्दी आना था ! अभी सब लोग आते होंगे, हम तो.....

गुलशन : अय क्या बताऊँ बहूजी, एक घर जाना हो तो कहूँ। कहाँ जाऊँ, कहाँ न जाऊँ ? लालाजी के, दीवानजी के, पंडितजी के ; घर से निकली सीधी दरीबे गई, मोती बाज़ार रुकी, मालीवाड़े अटकी और अब.....

बहूजी : अच्छा गुलशन ! सारे घरों में भाँकती फिरो हो। कोई लड़का बन्नो के लिये भी तो बताओ। स्यानी हो गई अब कब तक घर में बैठी रहे ?

गुलशन : अय बहूजी ! तुम्हें शादी-ब्याह की सूझ रही है, कुछ खबर भी है दिल्ली में क्या होने वाला है ?

बहूजी : मुझे क्या मालूम क्या होने वाला है ? तू ही बता, खबरों का पिटारा है तू तो।

गुलशन : लो और सुनो ! अन्दर घुसी बैठी रहो, सारी दुनिया तो बातें कर रही है इन्हे पता ही नहीं।

बहूजी : अरे बता भी चुक।

गुलशन : अल्ला ने चाहा थोड़े दिनों में सब तरफ़ सुख ही सुख होगा, चैन की बंसी बजेगी, हमारे दुख दिलदूर दूर होंगे, हमारा राज होगा। क़िले की आन, दिल्ली की शान दुगनी हो जायेगी।

बहूजी : ये कैसी बहकी-बहकी बाने कर रही हो गुलशन ?
हमारा राज होगा, किले की आन, दिल्ली की शान... यह
मुए फिरगी जा रहे हैं कही ?

गुलशन : एक भारी तूफान आएगा, आँधियाँ चलेगी, बड़े-बड़े
पेड़ उखड़कर हवा में उड़ेंगे, धरती हिलेगी, और फिर
यह सितारे, यह चाँद, यह सूरज, यह आसमान सब नाच
उठेंगे ।

बहूजी : सुपना देखा है क्या ?

गुलशन : अल्ला करे मेरा सुपना सच्चा हो, मैंने मन्नत मानी
है मन्नत ! मैं तभी चैन से बैठूँगी जब इन फिरंगियों का
देस से निकाला होगा ।

बहूजी : तुम्हारा इन फिरंगियों ने क्या बिगाड़ा ?

गुलशन : तुम भूल गई बहूजी, उन्होंने मेरा क्या नहीं बिगाड़ा !
मुखबरी की झूठी शिकायत पर मेरे मियाँ को सरे बाजार
बन्दूक के कुन्दों से ऐसा मारा कि लहलुहान कर दिया ।
कमबख्तों ने जान लेकर ही छोड़ी । मेरा भाई उन्हें बचाने
गया तो उसको भी जेल में ठूस दिया, मैं इन लाल मुँह
वालों से बदला लेकर ही छोड़ूँगी ।

बहूजी : आहिस्ता बोलो गुलशन, आहिस्ता ! कहीं किसी ने सुन
लिया तो ? दीवार के भी कान होते हैं । दिल्ली में
कम्पनी का राज है ।

गुलशन : भाड़ मे जाय ऐसा राज जहाँ न चैन न आराम !
मुए कहते हैं खलक़त खुदा की, मुल्क बादशाह का और
हुक़म कम्पनी बहादुर का ! (नाक-भौं चढ़ाकर) हूँ हुक़म
भी बादशाह का क्यों नहीं ?

बहूजी : हाँ गुलशन, सच कहती हो । अपना राज अपना ही होता है, इन फिरंगियों को हम से क्या हमदर्दी...लेकिन हम औरतें बिचारी करें तो क्या करे ?

गुलशन : औरतें बहुत कुछ कर सकती हैं बहूजी । चाँदबीबी भी औरत थी, नूरजहाँ भी औरत थी...अहिल्याबाई, पद्मनी, सीता, सावित्री ने क्या-कुछ नहीं किया ?

बहूजी : (बात काटकर) तो क्या सचमुच हमारा राज होगा ? वो दिन कितने अच्छे होंगे ! मेरे तो ये माधो कन्हैया हज़ूर जहाँपनाह के पास ही रहेंगे फिर ।

गुलशन : किला है तो सब कुछ । हजारों की रोटी, हजारों की जिन्दगी इसी से है । अल्ला करे हमारे दिन फिर जायें और किले की शान, दिल्ली की रौनक दुगनी हो जाए ।

बहूजी : आज होली का जश्न है । ये (मुंशीजी) आज लाल हवेली गए हैं, वस आएँगे तो हज़ूर जहाँपनाह की करामात का हाल सुनाएँगे, किले में ये हुआ, किले में वो हुआ ।

गुलशन : जी चाहता है किले की बातें होती रहे और मैं सुनती रहूँ ।

बहूजी : किले में गई हो कभी ?

गुलशन : अय ! मेरी क्या आक्रांत ! पर एक मुँहबोली बहन है मेरी, डंका बेगम की ड्योढ़ी पर ।

बहूजी : (हँसकर) डंका बेगम ?

गुलशन : अय ! तुमने सुना नहीं, नवाब जीनत महल, मल-काए आलिया को अब तो सभी डंका बेगम कहते हैं, किले से लाल कुएँ जब अपने महल को जाती हैं तो डंका बजता है ।

बहूजी : बादशाह सलामत की चहेती बेगम और किले से दूर ।

यह क्यों ?

गुलशन : (आहिस्ता से) कहियो नहीं किसी से ! हजूरवाला मे
रूठ गई हैं शायद । अपने बेटे जवाँ बख्त को वली अहद
बनाना चाहती है ।

बहूजी : अरी गुलशन ! यह तो बता यह गव के सब शहजादे
तख्त पर बैठेंगे क्या ?

गुलशन : हजूरवाला तंग आगए है, पर जानते हैं यह सब
काम फिरंगी का है । बेचारे क्या करें, इसके सिवाय कि
अपने दुख-दर्द को रो लेते हैं । उनके आँसू शेर बनकर
निकलते हैं । तुमने तो सुना ही होगा—(गुलशन जफ़र
का शेर मरसिये के अन्दाज़ में पढ़ती है)

“अए जफ़र, अब है तुभी तक इन्तज़ामे सल्तनत !

बाद तेरे न वली अहदी न नामें सल्तनत !!”

(गुलशन ज़ब्त नहीं कर पाती, आँसू निकल आते हैं, आँसू
पोंछती है । बहूजी चूड़ियाँ पहनाने को हाथ बढ़ा देती हैं ।

गुलशन चूड़ियाँ पहनाने लगती है ।) कन्हैया बेटा कहाँ है
आज ? देखा नहीं चाँद को, बहुत जी भटक रहा है ।

बहूजी : होली खेलने में मस्त होगे ।

गुलशन : वस यूँ कहूँ थी, ध्यान रखना बच्चे का, पता नहीं
जरा-सी देर में क्या से क्या हो जाए ।

बहूजी : क्यों क्या बात है ? बताओ तो सही ।

गुलशन : इस फिरंगी को क्या समझा है तुमने ? रोज़ छोटे-
छोटे बच्चों को पकड़कर ले जाते हैं, और ईसाई बना
लेते हैं ।

बहूजी : हैं ! क्या कहा गुलशन ! ऐसे बुरे हैं ये कम्बख्त ?
धर्म नष्ट कर रहे हैं । (कन्हैया आता है, बहूजी चलती हैं ।)

गुलशन : छोटी-बड़ी बन्नो चूड़ियाँ नही पहनेगी ?

बहूजी : अभी भेजती हूँ । (कन्हैया को देखकर) बेटा कन्हैया !
मेरे चाँद, कहाँ था तू ? जरा यहाँ तो आना ।

कन्हैया : अच्छा गुलशन तुम ! ठहर जाओ, मैं गत बनाऊँगा
तुम्हारी । अभी लाता हूँ पिचकारी ।

[कन्हैया अन्दर जाता है, छोटी-बड़ी बन्नो भागती हुई आती हैं ।]

छोटी बन्नो . बी गुलशन ! आ गई तुम ! फुरसत मिल गई ?
अगली होली पर आ जाती तो क्या बिगड़ जाता ? (पास आकर) कहाँ है मेरी गगा-जमनी चूड़ियाँ ? कहती थी तेरे लिये नौगरियाँ, दस्तबन्द, कड़े, कगन, भूमके, जौशन लाऊँगी । अब ला ! ला !! (गर्दन मटकाती है)

[छोटी बन्नो एक गुच्छा चूड़ियों का उठा लेती है, गुलशन हाथ झटक देती है ।]

गुलशन : सबर कर लड़की सबर ! एक ही साँस में सब कुछ कह गई, मैं चूड़ीवाली हूँ या जौहरन ? जब आएगी, धौस जमाती, (बड़ी बन्नो की तरफ इशारा करके) एक यह बहन भी तो है तेरी, कैसी सीधी है ? मेरी लाड़ो, चाँद-सा बन्ना आएगा इसका और तेरा तो किसी नकटे से ब्याह होगा ।

छोटी बन्नो : तुझ से तो अच्छी ही रहूँगी, तेरा तो बड़े नवाब गुलदुम से ब्याह हुआ था न ।

बहूजी : खबरदार ! अए बन्नो ! न बड़ों का लिहाज न छोटी
की शरम !

गुलशन : अए हाँ ! देखो तो सही लड़की को ! कैसी पटर-पटर
जवान चले है इसकी !

बहूजी : चलो ! चलो ! ज्यादा बातें न बनाओ, पहनो चूड़ियाँ
जल्दी से ।

[गुलशन चूड़ियाँ पहनाना चाहती है लेकिन कभी छोटी
बन्नो और कभी बड़ी बन्नो हाथ बढ़ा देती हैं ।]

गुलशन : अए पहनना है पहनो ! नहीं तो मेरी जान बख्शो !
मैं चली ।

[गुलशन कुछ चूड़ियाँ दोनों लड़कियों के लिए निकालकर
रख देती है और अपनी पोटली बाँधती है । बहूजी बटुआ
खोलकर पैसे देती हैं ।]

बहूजी : लो गुलशन, अपना हिसाब कर लो ।

गुलशन : जुग-जुग जीओ । दूधों नहाओ, पूतों फलो ।

[बहूजी अन्दर जाती हैं, गुलशन टोकरा उठाकर चलना
चाहती है कि छोटी बन्नो सर से इंडवी उतार लेती है ।]

छोटी बन्नो : हम नहीं जाने देगे । पहले एक बात बताओ ।

गुलशन : अरे छोड़ो भी ।

बड़ी बन्नो : अय गुलशन, कल यहाँ एक बुढ़िया आई थी,
लाल-लाल आँखे थी उसकी । गुस्से में भरी थी, कहती थी
मैं फिरंगी का खून पिऊँगी ।

गुलशन : अच्छा !

छोटी बन्नो : शायद एक बनजारन थी, (नकल बनाकर)
बच्चियों ! ज्वाला जाग उठी है, धरती फटेगी, और इन

फिरंगियों को भस्म कर देगी ।

बड़ी बन्नो : कौन थी वह बुढ़िया ?

गुलशन : बात की पक्की, कौल की मच्छी, उसकी बात भूठ नहीं होती ।

छोटी बन्नो : कहती थी सौ वरम हुए इन फिरंगियों के राज को । अब इनका खात्मा समझो ।

बड़ी बन्नो : जिस दिन इनका राज खतम होगा मैं मिठाई बाँटूंगी, अपनी गुड़िया का ब्याह रचाऊँगी ।

[दूर गली में शोर सुनाई देता है, होली खेलनेवाले होली के नारे लगाते हैं ।]

छोटी बन्नो : भाग जाओ, बड़ी बी भाग जाओ ! आ गए होली वाले ।

गुलशन : (बौखलाकर) हाय अल्ला, खैर ! उई अल्ला, खैर ! (टोकरा उठाना चाहती है, उठता नहीं) नत्थू. अय नत्थू, अरे मूंडी काटे तेरा मत्यानास जाए ।

[मुंशीजी आते हैं ।]

मुंशीजी : (गुलशन से) इतनी घबराहट ! तोबा ! (गुलशन दुपट्टा नीचा कर लेती है । छोटी-बड़ी बन्नो मुंशीजी से लिपट जाती हैं) बी गुलशन ! मिजाज ब-खैर ?

गुलशन : अल्ला का फज़ल है, जीती हूँ सरकार !

मुंशीजी : खाम बाजार और खानम के बाजार में सब अच्छे हैं ? काम-काज का क्या हाल है ?

गुलशन : अय हज़ूर ! अच्छे-वच्छे क्या ? सब का काम मंदा है, अलबत्ता लुहारों की चाँदी है आजकल । तलवार, बरछी, भाले का व्योपार अच्छा है । अब तो लाहौरी

सर्वाफ भी ये ही काम कर रहे हैं ।

छोटी बन्नो : पिताजी ! गुलशन कहती है थोड़े दिन में हमारा राज होगा । क्या सच है ?

बड़ी बन्नो : बुढ़िया बंजारन भी यही कहती थी कि प्लासी की लड़ाई को सौ बरस हो गए अब फिरंगी का नाम मिट जाएगा ।

छोटी बन्नो : लड़ाई होगी क्या ?

बड़ी बन्नो : या यूँ ही आँधी-तूफान में मर जाएँगे फिरंगी ?

छोटी बन्नो : अपने आप चले जाएँ तो अच्छा है ।

मुंशीजी : कौन जाता है इस तरह बेटी ! हिन्दुस्तान सोने की चिड़िया है । पिजरे में कैद कर रक्खा है । गुलामी के बन्धन तोड़ने के लिए बड़ी कुर्बानी की जरूरत होती है बेटी ।

[गली में फिर शोर सुनाई देता है । छोटी बन्नो और बड़ी बन्नो अन्दर जाती हैं ।]

छोटी बन्नो : भाग आ ! जीजी भाग आ !! होली खेलने वाले ड्योढ़ी पर खड़े हैं ।

[दोनों लड़कियाँ अन्दर भाग जाती हैं । गुलशन टोकरा उठाना चाहती है, मुंशीजी करीब आते हैं ।]

मुंशीजी : काम ठीक हो रहा है गुलशन । हमें मौलवी साहब ने सब कुछ बता दिया है । तुम बहुत बहादुर हो, निडर हो । जामा मस्जिद की दीवार पर इश्तहार का लगाना खेल नहीं ।

गुलशन : ये क्या फरमा रहे हैं आप ?

मुंशीजी : इश्तहार लग गया और किसी को कानोंकान

खबर न हुई । अभी तो तुम्हारे जिम्मे बहुत काम हैं ।

गुलशन : मेरे जिम्मे ?

मुंशीजी : काम बहुत टेढ़ा है, लेकिन हम जानते हैं कि इन्कलाब की आग फैलाने में जो काम तुम कर सकती हो, कोई नहीं कर सकता ! (मुंशीजी गुलशन के टोकरे को हाथ लगवाते हैं । टोकरे में एक खंजर नज़र आता है । मुंशीजी खंजर निकाल लेते हैं ।)

मुंशीजी : (खंजर का मुलाहिजा करते हुए) मुहम्मद यूसुफ को जानती हो ? वो जो खानम के बाज़ार में रहते है ।

गुलशन : जी हाँ ! खूब अच्छी तरह ।

मुंशीजी : आज रात उनका यहाँ आना जरूरी है, वग़ैर उस नौजवान की मदद के काम नहीं चल सकता ।

गुलशन : किसी न किसी बहाने आपके पास भेज दूंगी ।

मुंशीजी : यह खंजर किस लिए है गुलशन ?

गुलशन : शायद अड़े-भिड़े में काम आ जाए, दिल्ली शहर में जासूसों की कोई कमी नहीं ।

[मुंशीजी हँसकर खंजर फिर टोकरे में रख देते हैं । नत्थू आता है । अबीर-गुलाल की थालियाँ रखता है । मुंशीजी दीवानखाने में जाते हैं । कन्हैया भागा-भागा आता है ।]

कन्हैया : क्यों बी गुलशन, भागती कहाँ हो ? छोड़ूँ बन्दूक ?

गुलशन : खबरदार कन्हैया ! जो—जो मुझे भिगोया । बन्दूक छोड़नी है तो किसी फ़िरंगी को मार, मुझ ग़रीब ने तेरा क्या बिगाड़ा ? ऐसा ही बहादुर है तो जा बादशाह की बछेरा पलटन में भरती हो जा ।

[गुलशन तेज़ी से बाहर निकल जाती है । मुंशीजी अँग-

रखा उतारकर दीवानखाने से बाहर आते हैं ।]

नत्थू : हुजूर ! मुहल्लेवाले होली खेलने आए हैं ।

मुंशीजी : बुला लाओ भाई।

[नत्थू जाता है]

कन्हैया : पिताजी ! आज आप किले गए तो होली के जश्न में हमें क्यों न ले गए ?

मुंशीजी : अभी छोटे बहुत हो बेटा ।

कन्हैया : मैं एक बन्दूक लाऊँगा और बछेरा पल्टन में भरती हो जाऊँगा । फिर रोज किले में जाया करूँगा ।

मुंशीजी : हुजूर जहाँपनाह बहुत खुश होंगे ।

कन्हैया : एक-एक फिंगी को निशाना बनाऊँगा । ताक-ताक कर गोली मारूँगा ।

मुंशीजी : (कन्हैया को सीने से लगाकर) अपने वतन पर मर-मिटनेवालों की जरूरत है बेटा ।

[चन्द शहरियों का प्रवेश । उनके मुँह पर गुलाल लगा है । किसी के गले में ढोल है और किसी के हाथ में मंजीरे हैं । “होली है बे, होली है बे” के नारे बुलंद होते हैं । मुंशीजी से होली मिलते हैं, गुलाल लगाते हैं और अबीर हवा में उछालते हैं । थोड़ी देर बाद एक और शहरी अन्दर आता है ।]

एक शहरी : क्यों भाई चुन्नी, कहाँ रह गए थे ?

दूसरा शहरी : अरे साहब, क्या अर्ज करूँ, गुलशन की जबान है कि तलवार । खूब ताने कसती हुई गई है हम सब को । मैं तो हैरान था यह क्या कह रही है ?

मुंशीजी : गुलशन ने कुछ कह दिया ?

चुन्नी : जी हाँ । कहने लगी, आज तो खूब टेसू की होली खेल

रहे हो, थोड़े दिन में खून की होली खेलनी पड़ेगी ।

[सब हँस पड़ते हैं, मुंशीजी खामोश रहते हैं ।]

मुंशीजी : इसमें हँसने की क्या बात है ? गुलशन ठीक कहती है, आज़ादी की देवी को एक न एक दिन खून से नहलाना ही होगा ।

दूसरा शहरी : जी ! क्या फरमाया ?

मुंशीजी : आपको क्या मालूम मुल्क में क्या हो रहा है, यह कम्पनीवाले क्या कर रहे हैं ?

एक शहरी : कौन, यह फ़िरंगी ?

मुंशीजी : आप तो ऐसे पूछते हैं जैसे कुछ दीन-दुनियाँ की खबर ही ना हो । लूट-मार, क़त्ल और खून, क़ैद, जलावतनी कम्पनी के राज में आम हो गई है । रियासतों की खबरें मुनेंगे तो दंग रह जायेगे ।

दूसरा शहरी : कुछ बताइये तो सही ? हम दिल्लीवालों को क्या खबर, बाहर रियासतों में क्या हो रहा है ।

मुंशीजी : एक-एक रियासत का खात्मा करके आहिस्ता-अहिस्ता सारे मुल्क को निगल रहे हैं ये । नागपुर और सितारा में जो कुछ हुआ वो कोई भूल सकता है ?

एक शहरी : नागपुर और सितारा में ?

मुंशीजी : महलों को लूटा, रानियों की बेइज्जती की, एक-एक को कौड़ी-कौड़ी का मुहताज किया । अब अच्छे-अच्छे राजे-महाराजे दर-बदर की ठोकरें खा रहे हैं ।

दूसरा शहरी : अबध में भी तो इन फ़िरंगियों ने धाँधली और सीनाजोरी से काम लिया ।

एक शहरी : कम्पनी बहादुर ने जबरदस्ती लखनऊ पर कब्ज़ा

कर लिया । नवाब वाजिदअली शाह को कैद कर लिया ।
मुंशीजी : लखनऊ के रहने वाले अपने शाह को याद करते हैं और रोते हैं । तहजीब मिटती जा रही है, रैयत परेशान हो रही है ।

दूसरा शहरी : मगर चुप हैं बेचारे, उफ़ तक जबान पर नहीं ला सकते ।

मुंशीजी : कोई कब तक चुप बैठ सकता है, चुन्नीलाल ? आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों इन सब जुल्मों का बदला लिया जायेगा । आजादी के परवानों की कोई कमी नहीं । फ़िरंगी को मालूम नहीं, वह एक ज्वाला-मुखी पहाड़ पर बैठा है ।

दूसरा शहरी : मगर हम निहत्थे गरीब दिल्लीवाले कर भी क्या सकते हैं, जब तक फ़ौजें उनका मुकाबला न करे ।

एक शहरी : फ़ौजे मुकाबला कर सकती है ? सिपाही तो अंग्रेज़ के नौकर ठहरे उनके वफ़ादार.....इन देसी सिपाहियों ही ने तो १,४०० कोस में फ़िरंगी हकूमत कायम करा दी है ।

मुंशीजी : मगर आपको क्या मालूम इन फ़ौजों के साथ कैसा सलूक हो रहा है ? ये सिपाही, ये हमारे भाई यह जवांमर्द जिन्होंने अपना सर कटवाया, जानें दीं, कलकत्ते से काबुल तक हकूमत कायम कराई अब आग में भोंके जा रहे हैं ।

दूसरा शहरी : आग में भोंके जा रहे हैं ? वो क्यों ?

मुंशीजी : तोपों से उड़ाये जा रहे हैं.....और तो और हमारे धर्म पर भी हमला हो रहा है ।

एक शहरी : धर्म पर हमला ?

मुंशीजी : फ़िरंगी चाहते हैं हम ईसाई बन जाये, अपना मज़हब छोड़ दें, क़ुरान और पुराण भूल जाये ।

एक शहरी : यह क्यों ?

मुंशीजी : सितारा की गद्दी, महाराज शिवाजी की गद्दी छीन ली । भाँसी के राज को मिटानेवाले यह अंग्रेज नहीं, तो कौन है ? लड़का गोद भी न लेने दिया ।

दूसरा शहरी : यह तो वाकई हमारे शास्त्रों की तौहीन है ! (मीर साहब बाहर से आवाज़ देते हैं, कन्हैया मसनद से उतरकर बाहर जाता है ।) जनाब मुंशीजी साहब ! यह तो जुल्म है जुल्म । कुछ मशवरा तो दीजिये । हमें क्या करना चाहिये ?

मुंशीजी : वक़्त आ रहा है, जमाना तेजी से बदल रहा है, ग़म और गुस्से की लहर दौड़ रही है, इन्क़लाब के शोले दहक रहे हैं । दिल्लीवाले क्योंकर चुप रह सकते हैं ?

एक शहरी : हम इन फ़िरंगियों से बदला लेकर छोड़ेंगे ।

दूसरा शहरी : इनको मज़ा चखा देगे ।

मुंशीजी : हर मोहल्ले में तैयारी होनी चाहिए, जितने भी हथियार जमा हो सकें जमा कीजिए । आजादी की जंग में दिल्लीवालों की मदद जरूरी है ।

[मीर साहब अन्दर आते हैं । सब गुलाल लगाते हैं ।]

मीर साहब : बस, बस, बस, ज़रा डाढ़ी-मुँछ बचाकर... (मसनद पर बैठते हुए) वाह ! वाह !! आज तो पूरी चौकड़ी जमा है । अरे भाई चपरगट्टू, गले में ढोल और हाथ में मंजीरे लिये क्यों फिर रहे हो, हो जाये ऐसे में एक होली ।

(सब चिल्लाकर) होली ! होली !! होली !!!
आज हमारे होली है बे ! (सब मिलकर होली गाते हैं)

होली

कन्हैया ने घर लई माधो बन में

आज सखियाँ नहीं मोरे संग में

कन्हैया ने घर लई—

आया फाग उमंग सब सखियाँ श्याम बसे मोरे मन में
नई रे नवेली कैसे बचेंगी क्यों निकलीं फागुन में

कन्हैया ने घर लई—

[लालाजी बाहर से

आवाज देते हैं—जनाब मुंशीजी साहेब !]

मुंशीजी : मालूम होता है, लालाजी आये है ।

कन्हैया : हाँ ! हाँ !! उन्हीं की आवाज है । चाचा आये हैं ।

[कन्हैया बाहर जाता है ।]

दूसरा शहरी : आओ भई आओ, लालाजी को घर ले, जाने न पायें ।

[सब शोर मचाते हैं और होली के नारे लगाते बाहर जाते हैं । सिर्फ़ मीर साहब और मुंशीजी रह जाते हैं ।]

मुंशीजी : जनाब मीर साहब, आप जानते है, शहरवाले काफ़ी जोश मे है, न जाने क्या कर बैठे ?

मीर साहब : काम खामोशी से होना चाहिए, ज़माना बहुत नाजुक है । क्या मालूम कौन ग़दार है और कौन वतन-परस्त ? राज़ की बात राज़ ही में रहे तो अच्छा है ।

मुंशीजी : आज का अख़बार कहाँ है ? पर्चा आज ही से तो निकलना था । (मीर साहब चारों तरफ़ देखते हैं । और

अखबार की एक कापी मुंशीजी को देते हैं। मुंशीजी पर्चा उलट-पलट कर देखते हैं।) यह पर्चा तो खूब है, दिल्ली में आग लगा देगा। इसके बाँटने का भी कोई इन्तजाम किया ?

मीर साहब : यह काम गुलशन को सौंप दिया गया है, शहर के चौकीदार उसके साथ हो गये हैं। रात की तारीकी में हर दिल्लीवाले की ड्योढ़ी पर यह पर्चा डाल दिया जायेगा।

मुंशीजी : गुलशन ने कमाल कर दिया, खूब तरकीब निकाली।

मीर साहब : रास्ते में मिली थी, मौलवी साहब का एक रुकड़ा मुझे दिया, चोटी में उरस रखा था।

[लालाजी रुमाल से चेहरा साफ़ करते हुए आते हैं।]

लालाजी : वाहियात ! वाहियात !! बिलकुल वाहियात !!!
याने चलना दूभर कर दिया।

मीर साहब : अरे भाई, किस पर लाल-पीले हो रहे हो ?

लालाजी : देखा आपने नये का नया अँगरखा नास कर दिया
इन कम्बख्तों ने।

मीर साहब : त्योहार के दिन भी बचकर निकलना चाहते हैं !

लालाजी : (जेब से एक फ़ेहरिस्त निकालकर) हाँ साहब
तो यह रही फ़ेहरिस्त, न्योते सबको देने है। आपका साथ
चलना ज़रूरी है।

मीर साहब : काहे की फ़ेहरिस्त है भाई ?

लालाजी : बन्दा परवर ! होली की गोट है गरीबखाने पर।

मीर साहब : ओ हो महफ़िल के इन्तजाम हो रहे हैं।

लालाजी : मोती जान से कहलवा दिया है और पानीपत की मुश्तरी से । खूब नाचती है ।

मीर साहब : गानेवालो एक ही है ।

लालाजी : अजी मोतीजान ही काफ़ी है । सवेरा कर देगी । आप थक जायेगे, वह नहीं थकेगी । ऐसी पाटदार और लोचदार आवाज, आप तो जानते हो है शहर मे किसी दूसरी की नहीं ..हाँ ! तो फिर क्या इरादा है ? चलिये ।

मुंशीजी : (लालाजी से) आपने देखा ये अखबार । (मुंशीजी लालाजी को अखबार देते हैं ।)

लालाजी : (अखबार देखकर) यह अखबार कहाँ से आया ? किसने शाय किया ?

मीर साहब : क्या खयाल है आपका ?

मुंशीजी : ईरान, रूस, तुर्की, फ्रांस और काबुल को फ़ौजे आ गई तो फिर देखिये ।

लालाजी : हाँ, फिर तो कुछ हो भी सकता है, और अगर आप ये चाहे कि दिल्ली वाले इन अंग्रेजों का तख़्ता उलट दे तो नामुमकिन । ये इनके बस का नहीं ।

मुंशीजी : दिल्लीवाले चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं ।

लालाजी : अजी राम का नाम लीजिये ।

मीर साहब : हिम्मत और इत्तहाद की जरूरत है ।

लालाजी : (ताने से) हिम्मत... इत्तहाद...जी, हाँ ! हिम्मत तो शायद कर बैठे, मगर इत्तहाद—एकता—नामुमकिन ! मक्खियों और चींटियों में इत्तफ़ाक और इत्तहाद हो सकता है, मगर हिन्दुस्तानियों में...नामुमकिन...क़तई नामुमकिन !

मुंशीजी : दुनिया में कौनसी ऐसी बात है जो हो नहीं सकती ? हमारी कमजोरी और बुजदिली ही ने तो हमें गुलामी की जंजीरों में जकड़ लिया है। आप जानते हैं इस वक्त...

लालाजी : (बात काटकर) माफ़ कीजिएगा मुंशीजी। आपने कभी यह भी ग़ौर किया कि फ़िरंगी की यह हिम्मत कैसे हुई ? कैसे उसने यह जाल बिछाया, किस तरह से हमें फाँसा, मुट्ठीभर है और हकूमत कर रहे हैं।

मीर साहब : यह काठ की हँडिया बहुत दिन तक नहीं चढ़ सकती। लालाजी साहब ! जुल्म की इन्तहा हो चुकी है, बादशाह और रैयत सब चीख उठे हैं। अभी सबको इतना बुजदिल और कमजोर ना समझें।

मुंशीजी : यह अंग्रेज़ हमारे बादशाह को ज़लील कर रहे हैं, बात-बात में जवाबतलबी होती है, उनके हर जाती मामले में दखल देते हैं।

मीर साहब : कौन यह तौहीन बरदाश्त कर सकता है ? हर मामले में शरारत ! वलीअहदी के भगड़े कराना इन फ़िरंगियों का ही काम है।

लालाजी : साफ़ बात तो यह है कि यह सब भगड़े-टंटे कराना इन शहज़ादों का ही काम है। जितने शहज़ादे हैं सबके सब निकम्मे ! दुनियाँ के सारे ऐब इनमें मौजूद है। कर्ज़ में डूबे हैं, धेला पल्ले नहीं, दिल्ली के तख़्त के ख़ाब देख रहे हैं।

मुंशीजी : शहज़ादों की बात नहीं, हम हुज़ूर जहाँपनाह की बात कर रहे हैं। हम उनकी बेइज़्जती नहीं होने देंगे।

उनके साथ नाइन्साफी और बदसलूकी की हद हो गयी है ।

मीर साहब : हुजूर जहाँपनाह हमारे बाप है । रैयत के दुख-दर्द के साथी !

मुंशीजी : हिन्दू और मुसलमान उनकी दो आँखें ।

मीर साहब : वह सारे ऐबों से پاک हैं । सारे जहाँ की खूबियों के मालिक । वह फनकार है, शायर है, कवि हैं, खुशनवीस हैं ..

मुंशीजी : बूढ़े तो बेशक है पर हौसला बुलन्द है, सीना उमंगों से भरपूर है । आनेवाला वक्त ही बतायेगा कि उनके मनसूबे क्या है ।

मीर साहब : दिल्ली के नौजवानों को चाहिए, बादशाह सलामत की पलटन में शामिल हो जायें ।

[नत्थू आता है ।]

मुंशीजी : नत्थू !

नत्थू : जी सरकार !

मुंशीजी : माधो कहाँ है ?

नत्थू : आज सुबह ही किसी के साथ बाहर चले गये... शायद गामी खाँ...

लालाजी : हैं ! क्या कहा ? गामी खाँ के साथ...

मुंशीजी : गामी खाँ कौन है ?

लालाजी : गामी खाँ को आप नहीं जानते । दिल्ली का नामी बदमाश है । अपनी सारी दौलत गँवाकर अब औरों को बरबाद करने पर तुला है । मेरा नावां भी जीमना चाहता

था लेकिन दाल नहीं गली, मैंने उसको वो फटकारा कि याद करेगा ।

मुंशीजी : माधो का उससे क्या वास्ता ?

लालाजी : माधो भोला है कहीं उसके फंदे में न फँस जाये ।

मीर साहब : गामी खाँ से होशियार रहने की जरूरत है । खतरनाक आदमी है । शहजादों को ऐय्याशी के जाल में फँसा रखा है, खूब रुपया ऐँठता है और बेवकूफ बनाकर किले की तमाम खबरे फ़िरंगियों तक पहुँचाता है । भोला तो बहुत बनता है, लेकिन है निहायत मक्कार और खोटा आदमी । गुलशन का घर उजाड़ने में उसी का हाथ था । बेचारी गुलशन...

मुंशीजी : मैं ऐसे आदमी के साथ अपने लड़के की दोस्ती बरदाश्त नहीं कर सकता, आने दो साहबजादे को आज ।

लालाजी : गामी खाँ शैतान है ! माधो का क्या क़सूर !

मुंशीजी : माधो का क़सूर क्यों नहीं ! वो क्यों ऐसे आदमी के साथ उठता-बैठता है...

लालाजी : अच्छा ! अच्छा !! समझा दोगे साहब, समझा दोगे । ऐसे नाराज़ होने की क्या जरूरत है ?

मुंशीजी : बस लालाजी साहब । आप रहने दीजिये ! आप ही ने लाड़-प्यार करके उसको सर पर चढ़ा रक्खा है ।

लालाजी : वाह साहब ! यह एक ही रही । आप तो हम पर ही बरस पड़े । अजी हज़रत चलिये गुस्सा न कीजिये । तेवर सँवारिये ! लोगों को न्योते देने है ।

मीर साहब : चलिये मुंशीजी साहब !

मुंशीजी : नत्थू !

नत्थू : जी सरकार !

मुंशीजी : हम बाहर जा रहे हैं, पहलवान से कहना जरा आज हम से मिलले !

[मुंशीजी, मीर साहब और लालाजी बाहर जाते हैं। बाहर डोलीवालों की आवाज सुनाई देती है—डोली उतरवालो ।]

नत्थू : (जनानखाने के करीब जाकर) लालाजी की बहू आई है ।

छोटी बन्नो : (बाहर आकर) चाचीजी आ गई, चाचीजी आ गई !!

[लालाजी की बहू आती हैं। बहूजी जनानखाने से बाहर आती हैं ।]

बहूजी : अरी बहू ! तुमने बहुत राह दिखाई, मैंने सोचा अब आती होगी, अब आती होगी, लेकिन तुम्हें तो फुरसत कहाँ, तीसरे पहर आई हो ।

लालाजी की बहू : अय भाभी, आज तो किसी काम में मन नहीं लगा, सबकी बातें सुन-सुनकर कलेजा दहले है ।

बहूजी : क्या हो गया, मेरी रानी ?

लालाजी की बहू : अय तुमने सुना नहीं ? बड़ा भगड़ा होने वाला है, शोर-सा मच जायेगा ।

बड़ी बन्नो : अशरफी, इमरती कहाँ हैं, चाची ?

लालाजी की बहू : अय क्या बताऊँ, इन लड़कियों को क्या हो गया ! डोली से उतरतीं ही नहीं, डोली में बैठी-बैठी कहारों की बातें सुन रही हैं ।

बड़ी बन्नो : कहारों की बातें ?

लालाजी की बहू : पता नहीं सारे के सारे कहार मरने-मारने पर तुले हैं, कहते हैं कि हम एक-एक फिरंगी का खून पियेंगे ।

बहूजी : इनको पकड़कर न ले जाये दिल्ली का कोतवाल । उसने सुन लिया तो बम गजब हो जायेगा । (लालाजी की लड़कियाँ, अशरफ़ी और इमरती अन्दर आती हैं ।) एलो वो आ गई ! क्यों री लड़कियो ! तुम्हारा गप्पों में बहुत मन लगे है ?

अशरफ़ी : अरी बन्नो, आज बड़ा मजा आया, इन कहारों की बातें सुनने में । सब के सब मिलकर चुपके-चुपके लड़ाई की तैयारियाँ कर रहे है ।

इमरती : कोई बादशाह के गुन गाता है, कोई फिरंगी को कोसता है ।

लालाजी की बहू : मैने तो कह दिया । भगड़ा हुआ और मै यहाँ से रफूचक्कर ! इस भगड़े में औरतों का क्या काम ? मैने तो गोरधन सईस से कह दिया, अपने गाँव में हमारा इन्तजाम कर दे ।

इमरती : बड़ा मजा आयेगा । बाजरे की रोटी और गुड़ खूब खाने को मिलेगा ।

अशरफ़ी : हरे-हरे खेतों में नाचूंगी, पेड़ों पर झूला डालकर झूलूंगी । तू चलेगी ना बन्नो हमारे साथ ?

बड़ी बन्नो : हाँ ! हाँ !! ज़रूर !!!

छोटी बन्नो : मैं तो जाऊँगी नहीं, मै तो यहाँ ही रहूँगी, मैं तो सैर देखूँगी ।

लालाजी की बहू : अब छोड़ो भी ये लड़ाई-भगड़े की बातें ।

बहूजी : क्यों बहू, मुकटलालजी के यहाँ सब अच्छे हैं ? जच्चा-
बच्चा.....

लालाजी की बहू : अय वहीं से तो आ रही हैं ।

[छोटी बन्नो, बड़ी बन्नो, अशरफी, और इमरती नाचने
लगती हैं । स्टेज पर ऊधम-सा मच जाता है ।]

बहूजी : अरी लड़कियो ! यह क्या ऊधम मचा रखा है ? कान-
पड़ी आवाज नहीं सुनाई दे है ।

[लड़कियाँ रुक जाती हैं । कोई अन्दर जाती है, कोई
ऊपर ।]

लालाजी की बहू : मैं कह रही थी कि १५ दिन से जच्चा
खाट पर पड़ी है, अभी तक मेरी बात मानती तो घर का
काम-धन्धा करने लग जाती । पगी हुई मेवा बताई वह
नहीं खाई, दूध-बादाम का निशास्ता बताया वह हलक से
नीचे नहीं उतरा ।

छोटी बन्नो : (लालाजी की बहू के आगे ढोल रखकर) लो
चाची, एक गीत सुनाओ ।

लालाजी की बहू : अय देखो तो सई इन लड़कियों के लच्छन ।

बड़ी बन्नो : हाँ ! चाची ! हाँ ! एक गीत ।

बहूजी : एक होली गा दो ।

अशरफी : अम्माँ को होलियाँ बहुत याद हैं ।

इमरती : हाँ अम्माँ, वो वाली ।

लालाजी की बहू : सभी पंजे भाड़कर मेरे पीछे पड़ गई ।
अच्छा तो सुनो..... (गाती हैं ।)

रंग में कैसे होली खेलूँ या साँवरिया के संग ।
कोरे कोरे माट भराये उसमें घोला रंग,
भर पिचकारी सम्मुख मारी लगी श्याम के अंग ।

रंग में कैसे होली... ..

होली खेलन घर से निकलीं उसने पी लई भंग,
सास ननद की एक न मानी लगी श्याम के अंग ।

रंग में कैसे होली.....

बहूजी : अय देखो तो मही लड़कियो, यह बाहर कौन रोक
रहा है ?

[बड़ी बन्नो जाती है, और फिर तेजी से वापस आती है ।]

बड़ी बन्नो : अम्मा ! अम्मा ! गजब हो गया गजब !! माधो
भैया शराब के नशे में अन्दर आ रहे हैं । भागो ! भागो ।

[सब लड़कियाँ और लालाजी की बहू अन्दर जाती हैं ।]

बहूजी रह जाती है ।]

बहूजी : माधो शराब के नशे में ? (माथा पीटकर) हाय री
किस्मत ! (माधो और गामी खाँ की हँसी सुनाई देती
है) यह तो कोई और भी है माधो के साथ ।

[बहूजी अन्दर चली जाती हैं । माधो आगे-आगे और
गामी खाँ पीछे-पीछे आता है ।]

गामी खाँ : (हँस रहा है और गा रहा है) ही ! ही ! मोरे
भोले ने पी ली भंग कौन जतन होली खेलूँ ? (माधो माथे
पर हाथ रखे लड़खड़ाता हुआ मसनद की तरफ़ जाता है ।)
वाह सरकार वाह ! क्या दुलकी चल रहे हैं ! (पास
जाकर) हुजूर का मिजाज कुछ मुकद्दर पाता हूँ ।

माधो : (मसनद पर बैठते हुए) गामी खाँ ! सर चकरा रहा है, बोलो नहीं !

गामी खाँ : ऐ हुजूर ! ये क्या फरमा रहे हैं आप ?

माधो : मालूम होता है नशा हो गया है ।

गामी खाँ : ही, ही, ही, ही, नशा नहीं, इसे मेरे आका सख्खर कहते हैं, सख्खर ।

माधो : आओ हमारे पास बैठ जाओ, गामी खाँ ।

गामी खाँ : बन्दा तो हुजूर के कदमों में ही ठीक है ।

माधो : आज का दिन भी खूब गुजरा । आज भी हमारी ही जीत रही । मुर्ग और तीतर की सब पालियाँ मारीं ।

गामी खाँ : आपके जानवर की नोंक और दुम भी तो दुरुस्त थी सरकार ।

माधो : और कनकौण के पेंच ! हैं ! देखा तुमने गामी खाँ ? कन्ने मारकर गोता दिया और फिर जो घिस्सा दिया तो वो काटा । देखी उस्तादी हमारी ।

गामी खाँ : क्या बात है ! क्या बात है । कमम मे जवाब नहीं ।

माधो : आदाब अर्ज करता हूँ ।

गामी खाँ : सरकार किसी दिन हमारे नवाब की कुश्ती भी तो देखिये ।

माधो : नवाब कौन ?

गामी खाँ : मेंहदी लगाये, गजरा पहने, मजा-सजाया, दूल्हा बना खड़ा होगा इन्तजार मे ।

माधो : मगर है कौन वो ?

गामी खाँ : नवाबों का नवाब, मेरा मेंढा, उसका उठान,

तेवर और तैयारी देखे । हाय ! हाय ! छक्के छुड़ा देता है, छक्के ! शेर है, शेर !

माधो : शेर ! क्या कहा शेर ! भई गामी खाँ एक बात सुनो यार ।

गामी खाँ : फ़रमाइये ! फ़रमाइये !!

माधो : मियाँ ! हमारा दिल शेर का शिकार खेलने को चाहता है ।

गामी खाँ : शेर का शिकार हुजूर ! आप शेर मारेंगे, वाह ! वाह !! वाह !!! आपकी क्या बात है, आप तो शेर बबर मार सकते हैं । तो फिर आपके लिए बन्दूक का इन्तज़ाम किया जाय ।

माधो : हमको बन्दूक नहीं चाहिए ! हमारे यहाँ कोठे के कोठे बन्दूकों से भरे हैं ।

गामी खाँ : ओ हो ! यह बात है ! आप रईस जो ठहरे ।

माधो : आजकल बहुत तैयारियाँ हो रही हैं, घर-घर हथियार जमा किये जा रहे हैं ।

गामी खाँ : अच्छा यह बात है ? आपके घर में भी है हथियार सरकार.....

माधो : एक लम्बी डाढ़ीवाला मौलवी यहाँ रोज़ रात को आता है, पिताजी से चुपके-चुपके बातें करता है । पता नहीं क्या खुसर-फुसर.....

गामी खाँ : कौन है ये मौलवी ?

माधो : मियाँ तुम से क्या पर्दा । तुम तो अपने जिगरी ठहरे ! इधर आओ ।

[गामी खाँ करीब आता है । माधो उसके कान में]

कुछ कहता है ।]

गामी खाँ : अच्छा, समझ गया ! हैं तो यह बात है !

माधो : यह बात किसी को बताना नहीं ।

गामी खाँ : मजाल है ! लेकिन मुझे क्या, छोड़िये इस मौलवी की बातें ! बताइये फिर शिकार पर कब चलना है ? मेरा ख्याल है, आप हाथी पर चढ़कर शेर का शिकार खेले तो बेहतर होगा ।

माधो : तुम हमारे लिए हाथी का इन्तजाम कर सकते हो गामी खाँ ?

गामी खाँ : अजी साहब ! यह भी कोई मुश्किल बात है ! बड़े साहब से अपना याराना है, चुटकी बजाते ही इन्तजाम हो जावेगा ।

माधो : ना भई ना । इन गोरों से हमें बहुत डर लगता है, इन लाल मुँहवालों को हमारा दूर से ही सलाम ।

गामी खाँ : हऊआ थोड़ी हैं जो खा जायेंगे ? आप डरते क्यों हैं ।

माधो : गामी खाँ ! एक रोज़ एक लाल मुँह का घोड़ा दौड़ाते चाँदनी चौक में आ रहा था—हमने तो कसम से उसे दूर से भाँप लिया । सर पर पैर रखकर भागे और अन्दर ज़नानखाने में जाकर छिप गये ।

गामी खाँ : आप मेरे साथ चलिये बड़े साहब के पास किसी दिन ! आप से मिलकर बहुत खुश होंगे, हो सकता है आपको जागीर ही बख्श दें ।

माधो : अच्छा मियाँ ! ऐसे शरीफ़ हैं बड़े साहब ! हमको जागीर दे देंगे !

गामी खाँ : आप चलिये तो सही मेरे साथ ।

माधो : लेकिन जागीर तो बादशाह सलामत ही दे सकते हैं ।

गामी खाँ : बादशाह ! बादशाह ! यह कोई बादशाह हैं ।

कठपुतली का दूसरा नाम बादशाह है । एक चिराग-सा टिमटिमा रहा है, हवा का भोंका आया और बुझा ।

[पहलवान एक दम अन्दर आ जाता है ।]

पहलवान : (कड़ककर) हजूर जहाँपनाह की शान में यह गुस्ताखी !

माधो : (भौंचक्का होकर) उस्ताद आप ? (माधो ज़नानखाने की तरफ़ भागता है ।)

पहलवान : (माधो से) ठहरो तुम कहाँ भागते हो ? (माधो ठहर जाता है ।)

पहलवान : (गुस्से में) माधो !!

माधो : जी उस्ताद !

पहलवान : शरीफों की औलाद होकर गुण्डों से दोस्ती ?

माधो : उस्ताद माफ़.....

[माधो अन्दर जाता है ।]

पहलवान : (गामी खाँ के करीब जाकर) मुझे मालूम है कि तुम क्या चाहते हो, यहाँ क्यों आये हो, मुंशीजी के मकान में घुसते गर्म नहीं आती ? गुलशन को सताते हो, डूब मरना चाहिए तुम्हें । मैं तुम्हारे इरादों से खूब वाकिफ़ हूँ ?

[गामी खाँ खंजर निकालता है । पहलवान बढ़कर खंजर छीन लेता है ।]

पहलवान : चंद चाँदी के टुकड़ों की खातिर, शराब की एक

बोतल के बदले भेद लेना चाहता है ? खबरदार जो आइन्दा इधर कदम रक्खा । टाँगें तोड़ दूँगा, जासूसी की तो ।

[गामी खाँ बाहर जाता है, नत्थू अन्दर आता है ।]

नत्थू : गामी खाँ भाग गया पहलवान ।

पहलवान : लातों के भूत बातों से नहीं मानते, नत्थूराम !

यह अपनी आदत से बाज़ नहीं आ सकता, यह दिल्ली-वालों को मरवाकर छोड़ेगा ।

नत्थू : उस्ताद ! माधो भैया के बारे में मुशीजी से कुछ न कहना नहीं तो चमड़ी उधेड़ देंगे ।

पहलवान : मैं चुगलखोर नहीं, इलाज करना मुझे भी आता है ।

नत्थू : माधो भैया रोज रात को देर से आते हैं, तमाशबीनी का चस्का लग गया है । इनको गामी खाँ के चक्कर से बचालो पहलवान ।

पहलवान : माधो सुस्त, काहिल, डरपोक और बुजदिल हो गया है । (लालाजी बाहर से मुंशीजी को आवाज़ देते हैं ।) लाला जी आये हैं शायद ।

नत्थू : आवाज़ तो उन्हीं की सी है ।

बहूजी : (ज़नानख़ाने में) नत्थू, अरे ओ नत्थू !

नत्थू : पहलवान ज़रा परदा कर लेना, लालाजी की बहू और लड़कियाँ अपने घर जाना चाहती हैं ।

[नत्थू बाहर जाता है और पहलवान ऊपर । लालाजी की बहू और उनकी लड़कियाँ चादरें ओढ़कर बाहर जाती हैं । मीर साहब और लालाजी अन्दर आते हैं, नत्थू पीछे-पीछे है । पहलवान ऊपर की मंजिल से नीचे जाते हैं ।]

लालाजी : कहो पहलवान, क्या जोर-शोर है ? दंगल हो रहे हैं क्या ?

पहलवान : जी हाँ शामियाने लग रहे हैं । सजावट हो रही है । बैठने का इन्तजाम भी नफ़ीस है । अखाड़ों में गेरू-मेंहदी मिट्टी में मिलाकर डाला जा रहा है । कई-कई जोड़ियाँ साथ छूटेंगी ।

मीर साहब : जनाब लालाजी साहब ! सिद्दीक को कल चितली कब्र के अखाड़े में देखा । भई यकीन जानना मन-मन भर के दण्ड रखे हैं ।

लालाजी : क्यों भई उस्ताद, आज हमारी और मीर साहब की भी जोट करा दो ।

मीर साहब : अरे जाओ, पतली दाल के खाने वालो ! तुम क्या लड़ोगे ?

लालाजी : देखो उस्ताद देखो, तुम गवाह हो, पिछले जुम्मे को अधर मारा था या नहीं मीर साहब को ?

पहलवान : हज़ूर यह तो सच है कि लालाजी कुछ ही खायें-पीयें मगर हड्डे-पसते बड़े कड़े हैं ।

[लालाजी अकड़ जाते हैं और मीर साहब को इशारे से पंजा लड़ाने की दावत देते हैं ।]

लालाजी : हो जाय ।

[मीर साहब और लालाजी पंजाकशी करते हैं और जोर आजमाते हैं । पहलवान दोनों के पंजे देखते हैं ।]

पहलवान : वाह ! वाह ! क्या बात है, लालाजी !

लालाजी : (अपनी उँगलियाँ दबाकर) मीर पंजाकश का शागिर्द हूँ, क्या समझा है ?

पहलवान : साहब, अबके फ़िरंगियों से जंग छिड़ी तो लालाजी, हमारे सिपहसालार.....

लालाजी : क्या बात है पहलवान ? तुम भी बातों में आ गये, जंग पर आमादा हो गये ?

पहलवान : भला ग़ौर फ़रमाइये, ये धर्म और दीन पर हमला कौन बर्दाश्त कर सकता है, यह अंग्रेज हमारे देसी सिपाहियों का दीन व धर्म नहीं बिगाड़ रहे हैं तो क्या कर रहे हैं । कभी कहते हैं, माथे पर तिलक न लगाओ, कानों में मुरकी न पहनो, डाढ़ी-मूँछ.....

मीर साहब : अजी पहलवान तुमने कुछ और भी सुना ?

पहलवान : क्या हज़ूर !

मीर साहब : कारतूस में चर्बी !

लालाजी : कारतूस में चर्बी ?

मीर साहब : जी हाँ कारतूस गाय और सूअर की चर्बी से चिकने किये जा रहे हैं और देसी सिपाहियों से कहा जाता है कि दाँतों से काटो इन्हें ।

लालाजी : राम राम, राम राम, यह नहीं मालूम था मुझे ।

पहलवान : जभी तो सब तरफ से इन्क़लाब के शोले बुलन्द हो रहे हैं ।

मीर साहब : लालाजी साहब हमें आप से बहुत उम्मीद है, वक्त पड़ने पर रसद का सारा इन्तज़ाम आप ही को करना होगा ।

लालाजी : अच्छा साहब ! आपका हुकम सर-आँखों पर, क्यूँ मीर साहब दीवानजी के यहाँ चलियेगा ! हो जाये एक बाजी शतरंज की ।

मीर साहब : जी नहीं ! इस वक़्त तो मुमकिन नहीं, मुंशीजी से ज़रूरी मशवरा करना है ।

लालाजी : पंडितजी कहते थे, चौपड़ खेल लो ।

मीर साहब : बस साहब ! यह तीन काने और पौ बारह आपको ही मुबारक ।

लालाजी : अच्छा मैं चलता हूँ, मीर साहब । आदाब अर्ज ।
(लालाजी जाते हैं ।)

मीर साहब : पहलवान !

पहलवान : जो सरकार !

मीर साहब : मौलवी साहब तशरीफ़ ला रहे हैं क्या ?

पहलवान : जी हाँ, आते ही होंगे ।

मीर साहब : काम ठीक हो रहा है ?

पहलवान : घर-घर में तैयारियाँ हो रही हैं, सरकार !

मीर साहब : ज़रा ध्यान रखना, मौलवी साहब के यहाँ आने की निसबत किसी को पता न चले ।

पहलवान : इन्तज़ाम पूरा है, चौकीदार गली में गश्त लगा रहा है, अपने पट्टे भी पहरा दे रहे हैं ।

मीर साहब : मुहम्मद यूसुफ़ लाहौरी सराफ़ भी आ रहे हैं क्या ?

पहलवान : जी हाँ ! मुहम्मद यूसुफ़ से बातचीत हो गई है, वो आते ही होंगे ।

मीर साहब : उन्होंने यहाँ आने में आनाकानी तो नहीं की ?

पहलवान : जी हाँ ! पूछते तो थे कि इतनी रात में क्यों बुलाया है, मगर गुलशन बहुत होशियार है । उसने बहुत

बाने बनाई । कहा कि मुशीजी को सुबह से पहले जेवरात चाहिए । माधो बेटे की सगाई है कल ।

मीर साहब : मुहम्मद यूसुफ क्राबू में आजाये तो अच्छा है ।

पहलवान : मुहम्मद यूसुफ को हाथ में लाना जरूरी है सरकार । रहीम बख्श मैगजीन का दरबान उसका साथी है ।

मीर साहब : अखबार की कापियाँ बाँट दी ?

पहलवान : जी हाँ ! गली-मुहल्ले के चौकीदारों ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया है । अखबार की २०० कापियाँ सब मकानों की ड्योढ़ियों में डाल दी हैं ।

[मुंशीजी आते हैं ।]

मुंशीजी : तुम आ गये पहलवान ? मीर साहब ! एक काम तो हो गया । (मुंशीजी कपड़े में बँधा एक नक्शा मीर साहब को देते हैं) शहरपनाह का नक्शा तैयार है ।

[मीर साहब नक्शा खोलते हैं । मुशीजी जेब से रुमाल निकालते हैं और एक चपाती हथेली पर रखकर पहलवान को दिखाते हैं ।]

मुंशीजी : जानते हो यह क्या है ?

पहलवान : चपाती हुआर !

मुंशीजी : नहीं पहलवान, यह चपाती नहीं है, इन्क्लाब की निशानी है । आज़ादी की निशानी । देश के तमाम रहने वालों के नाम एक पैगाम । (मुंशीजी पहलवान को चपाती देते हैं, पहलवान उसे आँखों से लगाते हैं ।) यह चपातियाँ गाँव-गाँव बाँटनी है, हिन्दुओं के गाँवों में भी और मुसलमानों के गाँवों में भी, ऐसे कि किसी को खबर न हो । गुलशन यह काम बखूबी कर सकती है, चूड़ियों के टोकरे

में किसी को पता न चलेगा ।

पहलवान : समझ गया ।

मुंशीजी : साये की तरह उसके साथ रहना । उस पर आँच न आने पाये ।

पहलवान : मजाल है सरकार ! अच्छा हज़ूर ! मैं बाहर इन्तज़ार करता हूँ । मौलवी साहब आते होंगे ।

[पहलवान बाहर जाते हैं ।]

मुंशीजी : मुलाहिजा किया यह नक्शा आपने ?

मीर साहब : (नक्शा देखते हुए) जी हाँ ! ठीक है !

मुंशीजी : यह है फ़सील और वह है राजघाट दरवाज़ा ।
(दरवाज़े पर दस्तक की आवाज़) आइये ।

मौलवी साहब : (ड्योड़ी में दाखिल होकर) मुंशीजी साहब !

मुंशीजी : जनाब मौलवी साहब ! (मौलवी साहब आते हैं ।)

मौलवी साहब : (अन्दर आकर) आदाब अर्ज ! फ़ैसला हो गया..... मुलाक़ात कामयाब रही ।

मुंशीजी : फ़ैसला हो गया मौलवी साहब ।

मौलवी साहब : बिठूर के नाना साहब और मौलवी अजीम उल्ला क़िले तशरीफ लाये और हज़ूर जहाँपनाह की ख़िदमत में अर्ज की कि गुलामी की जंजीरों को तोड़ देने के लिए हिन्दुस्तान का एक-एक आदमी तड़प रहा है ।

हिन्दुस्तान की निगाहें दिल्ली के तख्त पर लगी हैं ।

मीर साहब : हज़ूर जहाँपनाह ने क्या इर्शाद फ़रमाया ?

मौलवी साहब : ज़िल्ले सुभानी ने हिन्दुस्तान की क़िस्मत का फ़ैसला मलकए आलिया नवाब जीनत महल पर छोड़ा ।

मुंशीजी : मलकए आलिया पर ?

मौलवी साहब : पीरो मुर्शिद ने फरमाया मलकए आलम जीनत
महल का हुक्म शहंशाह हिन्दुस्तान के सर-आँखों पर होगा ।

मुंशीजी : नवाब जीनत महल का हुक्म !

मौलवी साहब : मलकए आलिया ने फ़ैसला दिया कि या तो
फिरंगी शहंशाह आलम के क्रदमों में पनाह माँगे या फिर
मैदाने जंग में हमारे सामने आयें । मुगलों का खून गुलामों
की मौत नहीं मरेगा नाना साहब से कह दीजिये, हम
इस आज़ादी की जंग में उनके साथ हैं ।

मीर साहब : ज़िन्दाबाद ! मलकये आलम नवाब जीनत महल
ज़िन्दाबाद !!

[दरवाज़े पर दस्तक]

मुंशीजी : (बुलन्द आवाज़ में) कौन है ?

पहलवान : (अन्दर आकर) गरीबपरवर ।

मुंशीजी : क्या बात है पहलवान ?

पहलवान : वो इधर ही आ रहा है ।

मुंशीजी : आने दो आप लोग जरा (हाथ के इशारे से
सबको छिप जाने के लिए कहते हैं । पहलवान गली के
दरवाज़े पर जाकर अपने पट्टों को इशारा करके अन्दर
बुला लेते हैं । सबके हाथों में नंगी तलवारें हैं । वो आड़
में हो जाते हैं ।]

[दरवाज़े पर दस्तक]

मुंशीजी : कौन साहब हैं ! अन्दर तशरीफ़ ले आइये ।

[मुहम्मद यूसुफ़ अन्दर आता है । बगल में बुग़चा है ।]

यूसुफ़ : (दूर से) इजाज़त है ? बन्दा हाज़िर हो सकता है ?
(क़रीब आकर) आदाब अर्ज़ ।

मुंशीजी : जीते रहो मियाँ गाह्वजादे, मैने पहिचाना नहीं ।

यूसुफ़ : खाकसार को मुहम्मद यूसुफ़ कहते है ।

मुंशीजी : जी ।

यूसुफ़ : मेरे अब्बा लाहौर वाले सराफ़ है ।

मुंशीजी : और खानम के बाजार मे रहते है ।

यूसुफ़ : जी हाँ ।

मुंशीजी : मगर तुम्हारे अब्बा कहाँ है ?

यूसुफ़ : बीमार है, मुझे ही आपकी खिदमत मे भेजा है ।

[बुग़चा खोलता है ।]

मुंशीजी : यह क्या ? ... जेवरात ... ? अच्छा समझा माधो
बेटे की शादी के जेवर ।

यूसुफ़ : हज़ूर सतलड़ा तो तैयार है ... बाकी जेवरात भी ...

मुंशीजी : हमें अफ़सोस है कि आपको इस वक़्त तकलीफ़ दी ।

यूसुफ़ : ग़लती हमारी है सरकार काम में देर हुई । हम तो
हज़ूर के नमकख़वार हैं । आधी रात को भी हाज़िर ।

मुंशीजी : हमने सुना है कि तुम हथियारसाज़ी के फ़न में
माहिर हो ।

यूसुफ़ : जी, क्या फ़रमाया ?

मुंशीजी : और दिल्ली के मँगज़ीन में तुम्हारा आना-जाना है ?

यूसुफ़ : जी, मैं समझा नहीं, आपका मतलब ?

[मौलवी साहब सामने आ जाते हैं ।]

मौलवी साहब : तुम मुसलमान हो ?

यूसुफ़ : जी !

मौलवी साहब : तुम्हे अपने दीन से मुहब्बत है ?

यूसुफ़ : हर साहिबे ईमान को होनी चाहिए ।

मौलवी साहब : यह कुरान शरीफ तुम्हारे सामने है । (कलामे पाक दिखाकर) इस पर हाथ रखकर कसम खाओ कि जो काम दीन और ईमान का है उसमें हमारी मदद करोगे, जो काम तुम्हें सौपा जायेगा उसे पूरा करोगे ।

यूसुफ : मगर बगैर मोचे, बिना समझे मैं कैसे कसम खा सकता हूँ ।

मौलवी साहब : मुसलमान होकर डरते हो ? साहिबे ईमान होकर घबराते हो ! मुझे देखो इस उम्र में भी दीन के दुश्मनों से जंग पर आमादा हूँ । और तुम तो माशा अल्ला जवान हो ।

यूसुफ : लेकिन आप मुझसे काम क्या लेना चाहते हैं ?

मौलवी साहब : पहले कुरान पाक पर हाथ रखवो कि

यूसुफ : जी, ये मुझसे नहीं हो सकता ।

[चलने लगता है ।]

मौलवी साहब : (रास्ता रोककर) हाथ रखवो वरना (जोर से) कोई है ?

[पहलवान और उसके पट्ठे निकल आते हैं, तलवारें सूत लेते हैं ।]

यूसुफ : आप समझते हैं, आप मुझे निहत्था पाकर कत्ल कर देगे, अकेला समझकर मार डालेगे, लेकिन आप यह नहीं जानते कि आप ऐसा करके भेद नहीं पा सकते, आज दिल्ली में सिर्फ मुहम्मद यूसुफ ही नहीं सैकड़ों मेरे साथी ऐसे हैं जो इस काम में लगे हैं ; आप किस-किसको मार सकते हैं । आजादी के परवानों की कमी नहीं ।

[मीर साहब बाहर निकल आते हैं ।]

मौर साहब : ठहरिये—मौलवी साहब ! बच्चा समझदार है ।
 इसने गौर नहीं किया कि हम भी दीन और मजहब के
 तरफदार हैं, दुश्मन नहीं । हम भी इसके साथी है, जासूस
 नहीं । मियाँ यूसुफ, तुम बहादुर हो ! हिम्मतवाले
 इन्सान ! हम तुम्हारी तारीफ मुन चुके है—हम वतन की
 भलाई चाहते हैं ।

यूसुफ : माफ कीजिये—मैं गलत समझा ।

मौलवी साहब : मियाँ यूसुफ ! तुम होनहार हो ... अल्ला
 तुम्हारे हर काम में बरकत देगा ।

मुंशीजी : हम यह चाहते है कि

यूसुफ : इरशाद ?

मुंशीजी : हमको मैगजीन के पोशीदा कागजात चाहिए ।

मौलवी साहब : हाँ । वो कागजात जिनमें फिरंगियों ने
 हिन्दुस्तानी सिपाहियों के मजहब खराब करने की तजवीज
 तहरीर की है । फिरंगियों ने सूअर और गाय की चर्बी से
 कारतूस चिकने किये हैं, ताकि जब सिपाही उन्हे दाँतो
 से काटे तो ईमान जाता रहे ।

मुंशीजी : बस, इसका सबूत चाहिए ।

यूसुफ : मैगजीन का दरबान रहीम बख्श मेरा साथी है । मैं
 कोशिश करूँगा, अल्ला ने चाहा तो ...

मौलवी साहब : अल्ला तुम्हें इस कारे मवाब के बदले जन्नत
 दे ।

यूसुफ : अब इजाजत चाहता हूँ ।

[मुहम्मद यूसुफ जाता है । पहलवान और उनके पट्ठे
 भी बाहर जाते हैं ।]

मुंशीजी : मालूम होता है कि दिल्ली के हर घर में खुफ़िया तौर से तैयारियाँ हो रही हैं । मैगजीन पर कब्ज़ा होना मुश्किल नहीं ।

मौलवी साहब : मैगजीन पर कब्ज़ा होना ही चाहिए ।

मीर साहब : होगा और जरूर होगा ।

मौलवी साहब : हर तरफ़ कामयाबी ही कामयाबी नजर आती है । दीन की लड़ाई में अब्बला ताला मददगार है ।

मुंशीजी : जब आप जैसे उलमाये दीन, फकीर, साधु, सन्त, हमारे रहनुमा हों । फतह यकीनी है ।

मौलवी साहब : जिस फकीर की जिन्दगी मुल्क और दीन के काम ना आये वो फकीर नहीं मतलब-परस्त है । मुझे खुशी है कि फौजों में जितने मौलवी और पंडित हैं, दीन की लड़ाई में सबसे आगे हैं । टंकलाब की आग तेजी से फैल रही है, आन की आन में फिरंगियों को भस्म कर डालेगी ।

मुंशीजी : आजादी की जंग शुरू करने के लिए एक तारीख़ मुकर्रर हो जाये तो अच्छा है ।

मौलवी साहब : तारीख़ मुकर्रर हो चुकी है, पलटनों में आदमी घूम रहे हैं, हिन्दुस्तान के एक कोने से दूसरे कोने तक पैगाम भेजे जा रहे हैं । हमारे सिपाही खामोशी से वक्त का इन्तजार कर रहे हैं ।

मीर साहब : तारीख़ मुकर्रर हो चुकी—यानी ?

मौलवी साहब : ३१ मई, इतवार का दिन, हिन्दुस्तान की तारीख़ में एक मुबारक दिन होगा ।

मुंशीजी : ३१ मई, इतवार का दिन—मुनासिब तजबीज़ है ।

मौलवी साहब : फिरंगी गिरजाघर में होंगे, वाम आसानी से

हो जायेगा ।

मुंशीजी : हिन्दुस्तान आज़ाद होगा, फिरंगी पायमाल होगा ।

मौलवी साहब : इन्शा अल्ला !

[पास की मस्जिद से अज़ान सुनाई देती है ।]

मौलवी साहब : फाल नेक है ।

[पर्दा गिरता है ।]

दूसरी मजलिस

[पर्दा उठता है, स्टेज पर अँधेरा है, गली का चौकीदार हाथ में लालटेन लिये अन्दर आता है। पीछे-पीछे पहलवान है। पहलवान ड्योढ़ी के दरवाजे के पास रुक जाता है, चौकीदार दीवानखाने के पास आता है और आहिस्ता से दस्तक देता है।]

चौकीदार : (आहिस्ता से) मुंशीजी साहब.....! मुंशीजी साहब..... ।

[मुंशीजी बाहर आते हैं]

मुंशीजी : कौन ? चौकीदार तुम.....?

चौकीदार : हजूर.....

मुंशीजी : क्या बात है चौकीदार ?

चौकीदार : पहलवान आये हैं, सरकार !

[पहलवान अन्दर आते हैं ।]

मुंशीजी : पहलवान ! तुम ? इतनी रात गये ?

पहलवान : हजूर ! मेरठ से इत्तला आई है कि फ़िसाद हो गया, अंग्रेज़ मारे गये, पलटनों ने फ़िरंगियों को भून डाला ।

मुंशीजी : क्या कहा ? फ़िसाद हो गया ? फ़िरंगियों को भून डाला.....।

पहलवान : जी हाँ ! सच कह रहा हूँ सरकार.....

मुंशीजी : ऐसा कैसे हो सकता है पहलवान ! यह खबर सही नहीं ।

पहलवान : आप मेरी बात मानें हज़ूर । मेरठ से सवार आया है, खबर लाया है ।

मुंशीजी : सवार खबर लाया है ! कहाँ है वह सवार ?

पहलवान : मौलवी साहब के मकान पर है, मौलवी साहब ने जब सुना तो परेशान हो गये, उन्होंने मुझे आपकी खिदमत में भेजा है, वो खुद भी इधर आते ही होंगे ।

[चौकीदार लालटेन रखकर ड्योढ़ी के दरवाजे पर खड़ा हो जाता है और बाहर की ओर देखता है ।]

मुंशीजी : मुझे तो इसमें चाल नज़र आती है । यह कभी नहीं हो सकता, मैं मानने को तैयार नहीं ।

पहलवान : अब मैं क्या अर्ज़ करूँ ?

मुंशीजी : पहलवान, तुम नहीं जानते, शायद तुम्हें नहीं मालूम, तारीख का फ़ैसला हो चुका है, एक दिन, एक वक्त सारे हिन्दुस्तान में जंग शुरू होगी, अभी वह वक्त नहीं आया ।

पहलवान : तारीख ? कौनसी तारीख?

मुंशीजी : ३१ मई, इतवार का दिन ।

पहलवान : (सोचकर) मगर आज तो सिर्फ़ ११ तारीख है ।

मुंशीजी : जभी तो कहता हूँ, यह बात सच नहीं । हो सकता है कि दुश्मन हमें धोखा देना चाहता हो ।

पहलवान : शायद आपका ख्याल ठीक हो मगर सवार भरोसे का आदमी है, दुश्मन नहीं ।

चौकीदार : (अन्दर आकर) मौलवी साहब आ रहे हैं ।

[चौकीदार जाता है । मौलवी साहब का प्रवेश]

मुंशीजी : फ़ैसला तोड़ना नामुमकिन है, हज़ूर जहाँपनाह का फ़ैसला सारे हिन्दुस्तान को मालूम है ।

मौलवी साहब : जनाब मुशीजी साहब । सुना आपने..... ?

मुंशीजी : क्या वाकई ? मुझे तो.....

मौलवी साहब : कुछ समझ में नहीं आता... (इधर-उधर तेज़ी से टहलने लगते हैं) ये कैसे हुआ ?

मुंशीजी : यक़ीन नहीं आता ।

मौलवी साहब : ख़बर पक्की है शक की ज़रा गुंजायश नहीं ।

पहलवान : हिन्दुस्तानी रेजिमेण्टों ने अफ़सरों को मार दिया, बँगलों में आग लगा दी, अब यह बहादुर दिल्ली की तरफ़ यलग़ार कर रहे हैं ।

मुंशीजी : हैं ! दिल्ली की तरफ ?

पहलवान : जी हाँ ! दिल्ली आ रहे हैं ।

मौलवी साहब : दिल्ली चलो ! दिल्ली चलो !! के नारे लगाते हुए ये मेरठ के सिपाही अब पहुँचनेवाले ही होंगे ।

मुंशीजी : अब क्या करना होगा ?

मौलवी साहब : हमें मदद करनी होगी ।

मुंशीजी : लेकिन शहरपनाह के सब दरवाज़े बन्द हैं, इनका शहर में दाख़िल होना मुश्किल होगा ।

मौलवी साहब : क्यों पहलवान ?

पहलवान : मैं जाता हूँ, इन्तज़ाम करता हूँ, राजघाट के दरवाज़े का चौकीदार हमारा साथी है ।

[पहलवान जाता है]

मुंशीजी : आग वक़्त से पहले ही भड़क उठी ।

मौलवी साहब : आग बुझ नहीं सकती, दिल्लीवालों को इन बहादुरों का साथ देना ही होगा ।

[स्टेज पर हलकी सी रोशनी हो जाती है । गुलशन और मुहम्मद यूसुफ आते हैं । मुहम्मद यूसुफ के हाथ में तलवार है ।]
मुंशीजी : यूसुफ मियाँ ।

मौलवी साहब : कहो गुलशन, क्या ख़बर लाई... ?

गुलशन : मेरठ के सवार दम के दम में पहुँचनेवाले होंगे ।

यूसुफ : हमें फ़ेजर साहब के बबर्ची ने सब वता दिया !

मुंशीजी : हैं ! क्या कहा ? कमिश्नर को पता लग गया ।

यूसुफ : आप फ़िक्र न कीजिये, इत्तला आई है, मगर कमिश्नर ने परवाह नहीं की ।

गुलशन : शराब के नशे में धुत पड़ा है । खा-खाकर दुम्बा हो रहा है ।

मौलवी साहब : दिल्ली की फ़ौजों को ख़बर मिल गई तो लड़ाई घमासान की होगी ।

गुलशन : दिल्ली की पलटनें हमारा साथ देगी ।

यूसुफ : हम फ़ौजों में बराबर घूम रहे हैं, फ़ौजी भाई हमारे साथ हैं ।

मौलवी साहब : मेरठ के सिपाहियों को हर तरह मदद करनी चाहिए । मियाँ यूसुफ तुम जाओ और हकीम अहसन-उल्ला खाँ को इत्तला दे दो कि क़िले में सब इन्तज़ाम ठीक कर दें, इन फ़ौजों का क़िले में घुसना ज़रूरी है ।

यूसुफ : क़िले में घुसना मुश्किल नहीं, क़िले के लाहौरी दरवाज़े पर ग़ारद के सब आदमी हमारे साथ हैं ।

मुंशीजी : मैगजीन में क्या हाल है ?

यूसुफ़ : रहीम बख़्श दरबारी ने सब बन्दोबस्त कर लिया है, उसका इशारा पाते ही हम हल्ला बोल देंगे, मैगज़ीन पर कब्ज़ा हो जावेगा । मैगज़ीन में कुल पाँच अंग्रेज़ हैं ।

मुंशीजी : शाबाश ! यूसुफ़ मियाँ शाबाश ! !

मौलवी साहब : देखना एक फ़िरंगी भी बचकर न निकल जाये, सब नाकों पर अपने साथी बैठा दो..... ।

यूसुफ़ : (तलवार उठाकर) अल्ला ने चाहा तो एक फ़िरंगी बचकर नहीं जा सकता ।

[गुलशन और मुहम्मद यूसुफ़ बाहर जाने लगते हैं ।
चौकीदार आता है ।]

चौकीदार : सरकार.....सरकार! फ़ौजें आ गई, सवार आन पहुँचे, वहाँ ! वहाँ, जमना के उस पार बँगले जला डाले ।

मुंशीजी : क्या कहा ? फ़ौजे आ गई ?

यूसुफ़ : (जोश में) अल्ला हो अकबर, अल्ला हो अकबर !!

चौकीदार : हर हर महादेव, हर हर महादेव !!

[सब बाहर चले जाते हैं , सिर्फ़ चौकीदार रह जाता है ।]

चौकीदार : (ऊपर की मंज़िल की तरफ़ देखकर) नत्थू, अरे ओ नत्थू ! हर हर महादेव..... हर हर महादेव (नाच कर आल्हा-ऊदल गाने लगता है ।)

नत्थू : (ऊपर की मंज़िल से) क्या है, क्यों गुल मचा रक्खा है ?

[नत्थू नीचे आता है । चौकीदार जोश में नाच रहा है ।]

चौकीदार : (नत्थू से) फ़ौजें, फ़ौजें, सवार ! सवार !..... जमुना मैया की जय.....जमुना मैया की जय !!.....

[चौकीदार नत्थू को खींचता हुआ बाहर ले जाता है ।]

बहूजी : (जनानखाने की चिक से भाँककर) नत्थू ! अरे ओ नत्थू ! यह कैसा शोर है ? (बाहर आकर) यह कौन गुल मचा रहा था ? हैं ! अभी-अभी तो कोई चिल्ला रहा था, (मरदाने की तरफ जाकर) यह घर है या कबाड़खाना ? अभी तक सफ़ाई नहीं हुई । (सहन में लालटेन रखी देख कर) और चौकीदार को देखो यहाँ बीच सहन में ही लालटेन रखी छोड़ गया । (ऊपर की मंज़िल की तरफ देखकर) नत्थू ! अरे ओ नत्थू ! (छोटी बन्नो माधो की दुलहिन को लेकर बाहर आती है और सहन में बिछे पीढ़े पर बैठती है । दुलहिन घूँघट काढ़कर बैठ जाती है । छोटी बन्नो उसका बनाव-सिगार करती है । छोटी बन्नो के करीब जाकर) अरे बस अब रहने भी दो, हो चुका भाभी का सिगार ! जा ज़रा दहेज के कपड़े और जेवर तो ले जा ! (छोटी बन्नो भाभी से चिपट जाती है ।) जा बेटी जा ले आ । (बड़ी बन्नो हार पिरोती बाहर जाती है । दुलहिन का घूँघट उठाकर) चाँद सा मुखड़ा है पारो का, मेरे कलेजे का टुकड़ा ।

[छोटी बन्नो भाभी को फिर देखना चाहती है, बहूजी उसे धकेलती हैं । छोटी बन्नो अन्दर जाती है । माधो आत है । पंखा झल रहा है ।]

माधो : उफ़, उफ़, किस बला की गर्मी है कि जिगर कबाड़ हुआ जाता है । (दुलहिन के करीब आकर) अम्माँ ! देखो हम भी आ गये । हमें नहीं देखोगी ? क्यों हमार शक्ल अच्छी नहीं ?

बहूजी : माधो बेटा ! अब तो तू इस तरह बोलना छोड़ दे,
अब तू बड़ा हो गया है । सब क्या कहेंगे ?

[माधो दुलहिन की शक्ल देखने के लिये आगे आता है ।
बड़ी बन्नो तेजी से सामने आकर खड़ी हो जाती है ।]

बड़ी बन्नो : खबरदार भैया ! जो इधर आये ! शर्म नहीं
आती ।

माधो : तू कौन है ? जा ! जा !! हार गूँथ मालिन कहीं
की ! हम कहते है, हमारे सामने से हट जाओ । हमारा
गुस्सा खराब है ।

[गामी खाँ बाहर से माधो को आवाज देता है ।]

माधो : आया भाई ! गामी खाँ ! आया ।

[दुलहिन की शक्ल देखना चाहता है लेकिन बड़ी बन्नो
नहीं देखने देती । माधो बड़ी बन्नो की चोटी खींचता है ।]

बड़ी बन्नो : (चीखकर) हाय मैं मरी !

[माधो बाहर भाग जाता है । बड़ी बन्नो दुपट्टे के आँचल
से आँसू पोंछती है ।]

बहूजी : ठहर तो सही जाहिल कही का ! (ड्योढ़ी की तरफ
जाकर) फिर उस गुण्डे के साथ ? (वापिस आकर) चुप
हो जा बेटी !

[लालाजी की बहू—अशरफ़ी—इमरती चादरे ओढ़े
अन्दर आती हैं । पखे भूल रही है ।]

लालाजी की बहू : (चादर उतारते हुए) ऐ भाभी, सुना है
तुमने शहर में क्या हो रहा है ? सारे आदमी जमुनाजी
की तरफ़ भागे जा रहे हैं, डोलीवालों का इन्तज़ार करके

----- है -----

मरे कहाँ चले गए ।

बहूजी : अरे यहाँ ! सुबह-सुबह यहाँ भी कोई आया था । बड़ा शोर मचाया, जमुना मैया की जय, जमुना मैया की जय ! आज काहे के जयकार है, आज तो कोई तीज-त्यौहार भी नहीं है ।

[नत्थू घबराया हुआ दाखिल होता है ।]

नत्थू : दीन की लड़ाई । धर्म की लड़ाई—पाँच सवार…… दीन ……दीन ……दीन !!

[सब नत्थू की तरफ़ देखते हैं, वह इधर-उधर भागता है ।]

बहूजी : अरे क्या बक रहा है ?

नत्थू : दरवाज़ा बन्द कर लो … फाटक……किवाड़…… लड़ाई, लड़ाई……! दीन की लड़ाई !!

लालाजी की बहू : पगला तो नहीं हो गया ?

नत्थू : फ़ौजें आ गयीं । घोड़े…… सवार ! सवार । पाँच सवार !!

[बाहर दूर अल्ला-हो अकबर और हरहर महादेव के नारे लग रहे हैं । सब कान लगाकर सुनते हैं ।]

लालाजी की बहू : हाय राम ! बैठे-बैठाये क्या मुसीबत आ गई है ?

नत्थू : दरवाज़ा बन्द कर लो ! अन्दर जाओ …… अन्दर…… भागो !!

[अल्ला-हो अकबर और हरहर महादेव के नारे अब साफ़ सुनाई देते हैं । औरतें घबड़ा जाती हैं । स्टेज पर कोह-राम मच जाता है । लड़कियाँ ऊपर जाती हैं । लालाजी की

बहू—बहूजी, दुलहिन को लेकर जनानखाने में जाना चाहती हैं। इस भगदड़ में बहूजी के पैर में मोच आ जाती है। वह लँगड़ाती हुई अन्दर जाती हैं।]

लालाजी की बहू : ऐ नत्थू ! जा कहीं से डोली ले आ, पीनस, मझोली कुछ भी मिले ले आ।

नत्थू : आज कोई सवारी नहीं मिलेगी, अन्दर चली जाओ, इस वक्त बाहर जाना ठीक नहीं।

लालाजी की बहू : हाय रे क्या करूँ, कहाँ जाऊँ ?

[लालाजी की बहू दुलहिन के साथ अन्दर आती हैं। बाहर गली में शोर हो रहा है, मारो, मारो, पकड़ो, पकड़ो, दौड़ों की आवाजें सुनाई देती हैं। नत्थू दरवाजा बन्द कर देता है।]

बहूजी : अरी लड़कियो ! नीचे उतर आओ, अन्दर आ जाओ।

छोटी बन्नो : (ऊपर की मंजिल से) वो देखो ! वो ! आग लग रही है। मकान जल रहे हैं।

बहूजी : आ जाओ ! नीचे आ जाओ... जल्दी उतर आओ।

[लड़कियाँ नीचे आकर अन्दर चली जाती हैं, बहूजी भी अन्दर जाती हैं। दरवाजे पर दस्तक होती है।]

एक शहरी : मै हूँ बाँकेलाल, दरवाजा खोल दो। दरवाजा खोल दो। (नत्थू दरवाजा खोलता है। बाँकेलाल आता है।) जमुनाजी का पुल तोड़ दिया। किश्तियाँ खीच ली, सवार राजघाट के दरवाजे से अन्दर आ गये हैं और दरियागज के सारे बंमले जला डाले नत्थू ! शहर में गजब हो रहा है। अब क्या होगा.....?

नत्थू : क्या बताऊँ क्या होगा ! गली का चौकीदार भी

सवारों के साथ हो लिया ।

एक शहरी : खास बाज़ार और खानम के बाज़ार के लाहौरी सराफ़ हथियार ले-लेकर निकल पड़े । मुहम्मद यूसुफ़ उनका सरदार है वो भी सवारों से मिल गये ।

नत्थू : इसी तरह फ़िरगियों को मारते रहे तो शाम तक एक फ़िरंगी भी न बचेगा ।

[बहूजी, जनानखाने से आवाज़ देती हैं, नत्थू जनानखाने की ड्योढ़ी तक जाता है ।]

बहूजी : (अन्दर से) अरे नत्थू ! जरा जाकर डोली, पालकी ले आ । लालाजी की बहू बहुत घबरा रही हैं, अपने घर जाना चाहती हैं ।

नत्थू : (एक शहरी से) क्याँ भई बाँकेलालजी ! कोई डोली मिल जायेगी इस वक़्त ?

एक शहरी : राम का नाम लो, इस वक़्त डोली-पालकी क्या ? एक कहार भी नही मिलेगा सब मारने-मरने में लगे हैं ।

[दूसरा शहरी घबराया हुआ अन्दर आता है ।]

दूसरा शहरी : मार दिया ! मार दिया ! बस मार दिया !!

एक शहरी : क्या हो गया चुन्नीलाल ! किसको मार दिया ?

दूसरा शहरी : मार दिया ! बस मार दिया !

नत्थू : किसको मार दिया ? किसने मार दिया ? कुछ बतायेगा भी ?

दूसरा शहरी : पाँच सवारों में से एक सवार मारा गया, एक सवार मारा गया ।

एक शहरी : हैं ! क्या कहा ? मेरठ के सवार को मार दिया ?

दूसरा शहरी : हाँ हाँ ! फ़ेज़र साहब ने—फ़ेज़र साहब ने

मारा ! उन्होंने एक सवार को निशाना बनाया जो अपने घोड़े समेत वहाँ ढेर हो गया लेकिन सवारों ने भी ऐसी ताककर गोलियाँ मारीं कि एक गोली कप्तान डगलस के पाँव में लगी ।

एक शहरी : फिर क्या हुआ ?

दूसरा शहरी : सवार बराबर उनका पीछा करते रहे, फ्रेजर साहब ने किले के लाहौरी दरवाजे के दरबान को हुक्म दिया, दरवाजे बन्द कर लो, मगर पहर के सूबेदार ने हुक्म न माना, दरवाजा खोल दिया । सवार अन्दर दाखिल हो गये ।

एक शहरी : पहर के सूबेदार सवारों से मिला हुआ होगा । सब इन सवारों से मिल गये हैं । नवाब भञ्जहर की पलटनों ने और किले के सिपाहियों ने भी अंग्रेजों का हुक्म मानने से इनकार कर दिया ।

नत्थू : और सुना है, एक फ़रिश्ता आसमान से उतरा और राजघाट का दरवाजा खोल दिया ।

एक शहरी : हाँ ! राजघाट का चौकीदार भी इन सवारों के साथ था ।

[गली में फिर शोर होता है । चन्द शहरी अन्दर आते हैं । किसी के हाथ में बछ्छी, किसी के हाथ में भाला है, कोई लठ्ठ लिये है तो कोई मुग़दर उठाये है । अल्ला-हो अकबर और दीन पुकारते हैं ।]

तीसरा शहरी : अरे तुम कहाँ छिपे बैठे हो, बाँके और चुन्नी... ?

चौथा शहरी : फ्रेजर और डगलस दोनों का सफ़ाया (जोर-

जोर से हँसता है) सारे अंग्रेजों का सफ़ाया ! (फिर हँसता है) ।

तीसरा शहरी—राजा किशनगढ़ की कोठी में जितने अंग्रेज, मेम और बच्चे छिपे थे सबको भून डाला, साँप और सँपोलियों सब का खातमा ।

नत्थू : हाय ! हाय ! नन्हें बच्चों को मार डाला ! चच .. चच !! यह अच्छा नहीं हुआ ।

तीसरा शहरी : (खौफ़नाक हँसी हँसते हुए) पागल कही का, तेरा ख्याल है, इन फ़िरंगियों की औलाद को अपनी छाती पर मूँग दलने के लिए ज़िन्दा रखेगे ।

[दूर तोपों की आवाज़ें सुनाई देती हैं ।]

एक शहरी : सलामी की तोपे चली, शायद ।

दूसरा शहरी : फिर कहाँ धावा बोला ?

तीसरा शहरी : बस शाम तक दिल्ली हमारी ।

चौथा शहरी : धर्म और दीन का बोलबाला ।

तीसरा शहरी : अल्ला-हो अकबर ! अल्ला-हो अकबर !!

एक शहरी : हर हर महादेव ! हर हर महादेव !! नत्थू जनानखाने की ड्योढ़ी के करीब जाता है । (नारे लगाते सब बाहर जाते हैं । अशरफ़ी तेज़ी से बाहर जाती है । बड़ी बन्नो ने कसकर हाथ पकड़ा है । अशरफ़ी हाथ छुड़ाना चाहती है ।)

अशरफ़ी : मैं जाऊँगी, जरूर जाऊँगी ! छोड़ दे, जाने दे मुझे बन्नो ।

बड़ी बन्नो : अरी पगली हो गई है, क्या ? कैसी बातें कर रही है, ऐसे लड़ाई-दंगे में बाहर जायेगी ?

अशरफी : नहीं, नहीं, नहीं, मैं अपने भाईजी के पास जाऊँगी, जरूर जाऊँगी, लालाजी इन्तजार कर रहे होंगे, वह मेरे बगैर खाना नहीं खा सकते ।

[बहूजी और लालाजी की बहू बाहर आती हैं ।]

बहूजी : आजा बेटी, आजा, आ मेरी रानी आ । (अशरफी, बहूजी से चिपट जाती है और रोने लगती है) ना रो बेटी, ना रो, ना ! अभी थोड़ी देर में चली जाइयो, सवारी मँगा दूँगी ।

लालाजी की बहू : हाये ! क्या करूँ भाभी ?

बहूजी : (बड़ी बन्नो से) अपनी बन्नो बेटी, तुम दुलहिन के पास रहो, बहू घबरा जायेगी बेचारी । (लालाजी की बहू से) घबराओ नहीं ।

[कन्हैया बाहर आता है ।]

कन्हैया : अम्मा ! क्या हो गया अशरफी को, मैं बुला लाऊँ डोलीवाले को ?

बहूजी : ना बेटा ना ! तू बाहर ना जाइयो ! तेरी तबियत अच्छी नहीं । जा, जा अन्दर लेट जा ।

[छोटी बन्नो बाहर जाती है ।]

छोटी बन्नो : वाह री ! मेरी अशरफी इतनी सी देर में घबरा गई, याद नहीं उस बंजारन ने पहले ही कहा था, आँधियाँ चलेंगी, तूफ़ान आयेगे । डरने की क्या बात है, गुलशन ने भी कह दिया था, थोड़े दिनों में हमारा राज होगा ।

कन्हैया : अम्मा ! अम्मा ! अभी-अभी सलामी की तोपें चली थीं, अब तो बाजे बजेंगे, बादशाह की सवारी निकलेगी ।

बहूजी : हाँ, हाँ, ठीक बात है । अब तो हमारा राज होगा । आ, अन्दर आजा । घबरा नहीं ।

[छोटी बन्नो अशरफी को लेकर अन्दर जाती हैं । मीर साहब बाहर से आवाज देते हैं । कन्हैया ड्योढ़ी तक जाता है । लालाजी भी आते हैं ।]

कन्हैया : मीर साहब, आदाब ! चाचा आदाब !

मीर साहब : क्यों लालाजी साहब ! ठीक कहा था ना हमने ? दिल्ली पर कब्जा होना मुश्किल नहीं, अंग्रेज बुरी तरह भाग रहे हैं ।

लालाजी : ताज्जुब है साहब ! लेकिन ख्याल रहे ये अंग्रेज माननेवाले नहीं, फौजें जमा करके फिर आयेंगे ।

मीर साहब : देसी सिपाही तो इनका साथ देंगे नहीं, वो तो आपस में मिल गये हैं ।

लालाजी : क्यों बेटा कन्हैया, मुशीजी कहाँ हैं ?

कन्हैया : किले में होंगे, अभी आये नहीं ।

मीर साहब : पता नहीं, किले में अन्दर क्या हाल होगा, मुशीजी आयें तो पता चले । शहर में तो...

लालाजी : बैक तोड़-फोड़ डाला, गिरजाघर भी साफ़ कर दिया और प्रेस में भी आग लगा दी ।

मीर साहब : बस दिल्ली तो अंग्रेजों के हाथ से गयी समझो ।

कन्हैया : चाचा ! अभी थोड़ी देर हुई बड़ा शोर मचा, गली-मोहल्ले के आदमी निकल-निकलकर भागे, सबके हाथ में तलवारें, बर्छी, भाले थे । यह कहाँ जा रहे थे ?

लालाजी : मैगजीन पर धावा बोलने, कश्मीरी दरवाजे की तरफ़ ।

कन्हैया : जहाँ बहुत सी बारूद है ? तलवार बन्दूकें रक्खी होती हैं ?

मीर साहब : मुहम्मद यूसुफ़ के क्या कहने ! चार हजार आदमियों को साथ लेकर मैगज़ीन पर धावा बोल दिया ।

लालाजी : रहीम बख़्श दरबान उसका साथी था, इशारा पाते ही यूसुफ़ मियाँ रवाना हो गये ।

मीर साहब : मैगज़ीन पर कब्ज़ा हो गया तो बहुत सा सामान हाथ आ जायगा । हथियारों की कमी नहीं रहेगी ।

कन्हैया : चचा, थोड़ी देर हुई तोपें चली थीं न, यह सलामी की तोपें थीं ।

मीर साहब : हाँ बेटा, दिल्ली और मेरठ के सिपाहियों ने मिलकर बादशाह सलामत को सलामी दी ।

कन्हैया : (हँसकर) तोपें सुनकर अशरफ़ी की जान निकल गई, भागी घर से बाहर, रोकर कहने लगी मैं अपने भाईजी के पास जाऊँगी । वह मेरे बग़ैर खाना नहीं खा सकते ।

[लालाजी हँसते हैं ।]

मीर साहब : कहाँ है अशरफ़ी ? बुलाकर लाओ, बिटिया को यहाँ ।

कन्हैया : (अकड़कर) उसे तो मैं यहाँ बैठे-बैठे बुला दूँ ।

मीर साहब : वो कैसे ?

कन्हैया : (लालाजी के कान में कुछ कहता है) क्यों ठीक है न चाचा ?

लालाजी : हाँ, मीर साहब ! कन्हैया को अशरफ़ी की सब बातें मालूम हैं ।

मीर साहब : अच्छा तो फिर दिखाओ, इसी बात पर अपनी

जादूगरी ।

कन्हैया : एक शर्त पर ।

मीर साहब : वह क्या ?

कन्हैया : मुँहमोंगा इनाम मिले तो ।

लालाजी : अच्छी बात है । देखे तुम्हारी वानगी ।

[सौदे वाले की आवाज लगाता है ।]

कन्हैया : रेशम के जाल में हिलाया, कन्द का बना है जलेबा खालो !

अशरफ़ी : (अन्दर से) अरे ओ जलेबे वाले !

(अशरफ़ी और छोटी बन्नो बाहर जाती हैं । अपने बाप को देखकर) भाईजी ! (बाप से चिपट जाती हैं ।)

मीर साहब : (छेड़कर) जाओ बिटिया जाओ, पहले जलेबा तो ले आओ ।

[अशरफ़ी और छोटी बन्नो बाहर ड्योढ़ी तक जाती हैं, गली में इधर-उधर भाँककर वापिस लौटती हैं ।]

छोटी बन्नो : अच्छा ! अब समझी । यह कन्हैया की शरारत है ।

मीर साहब : क्यों साहब ! यह चुपके-चुपके भोली में छिपाये क्या ले जा रही हैं ?

[सब हँस पड़ते हैं ।]

अशरफ़ी : देखिये मीर साहब ! यह कन्हैया बहुत खराब है ।

कन्हैया : क्यों मीर साहब, हो गया इनाम ! बस लाइये एक जोड़ा कबूतर का हमारे लिये ।

मीर साहब : वाह मियाँ वाह ! ऐसी लड़ाई-भगड़ों में तुम्हें कबूतर खूब याद आये ।

छोटी बन्नो : वाह मीर साहब आपके पास बहुत कबूतर हैं ।

मीर साहब : हाँ ! हाँ ! कई सौ ।

छोटी बन्नो : आप हमारे लिए एक लका लाइये ।

मीर साहब : लका, लका कबूतर वोह वोह जो यूँ मुँह फुला-
कर (मुँह फुलाते हैं) नाचता है ।

[अशरफी, छोटी बन्नो और कन्हैया हँस पड़ते हैं ।]

लालाजी : (अशरफी के गाल पर हल्की-सी चपत लगाते हुए ।)

पगली कहीं की ! थोड़ी देर हुई रोती थी ।

[अशरफी भँप जाती है]

मीर साहब : अच्छा लालाजी, हम चल दिये ।

लालाजी : क्यों ? मुंशीजी का इन्तज़ार न कीजियेगा ?

मीर साहब : इन बच्चों ने भी अच्छा कबूतरों का जिक्र छेड़
दिया । लड़ाई-भगड़े में फुरसत नहीं मिली काबुक
देखने की ।

[मीर साहब चलते हैं, मुंशीजी आते हैं ।]

मुंशीजी : आदाब अर्ज मीर साहब, कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे
हैं, आख्खाह, लालाजी भी तशरीफ़ फ़रमाते हैं ।

लालाजी : क्यों साहब ? किले से तशरीफ़ ला रहे हैं क्या ?
किले में क्या हाल है ?

मुंशीजी : ना पूछिये साहब ! पत्ता-पत्ता भूम रहा है, ज़र्रा
ज़र्रा नाच उठा है । शादीयाने बज रहे हैं, मुबारिकबादियाँ
गाई जा रही हैं, जश्न और जलूस की तैयारियाँ हो
रही हैं ।

मीर साहब : हज़ूर जहाँपनाह तो बहुत खुश होंगे, सिपाहियों
की खिदमत से ?

मुंशीजी : देसी सिपाही किले और दरवाजों की निगरानी कर रहे हैं, यह बहादुर अपना सर हज़ूर के क़दमों पर निसार करने के लिए तैयार हैं ।

मीर साहब : या अल्लाह ! तेरी शान, मुसलिया सल्तनत जिन्दाबाद ! शाहे ज़फ़र जिन्दाबाद !!

[एक जोर का धमाका सुनाई देता है ।]

मुंशीजी : हैं ! यह कैसा धमाका ?

लालाजी : कैसी खौफ़नाक आवाज थी ।

मीर साहब : खुदा खैर करे ।

लालाजी : लड़ाई फिर से शुरू हो गई क्या ?

मुंशीजी : मेरा खयाल है बारूद में आग लगी ।

मीर साहब : ठीक सोचा आपने, मैगजीन ही पर कब्ज़ा करने गये थे, सब लोग ।

[गली में शोर बुलन्द होता है ।]

लालाजी : यह कैसा शोर है ? जाकर देखो क्या बात है ।

[लालाजी बाहर गली में जाते हैं ।]

मुंशीजी : मुहम्मद यूसुफ़ और रहीम बख़्श के साथ हज़ारों आदमी हैं, वो मैगजीन तो ज़रूर ही ले लेंगे ।

मीर साहब : शहर कोतवाली में पहुँचकर इन हज़ारों आदमियों ने क़ैदियों को आज़ाद किया और अपने साथ ले लिया । शहर कोतवाल भाग गया ।

[लालाजी घबराये हुए वापस आते हैं ।]

लालाजी : लोग घबराये हुए कश्मीरी दरवाज़े की तरफ़ भाग रहे हैं, कहते हैं मैगजीन में आग लग गई ।

मुंशीजी : मैगजीन में आग लगा दी, जोश में लोग होश खो

बैठे, यूसुफ़ मियाँ ने क्या किया ?

मीर साहब : मैगजीन में आग लगाना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है ।

मुंशीजी : आइये देखिये क्या माजरा है ?

मीर साहब : आप ठहरिये । मैं घोड़े पर जाकर अभी खबर लाता हूँ ।

[मीर साहब बाहर जाते हैं ।]

मुंशीजी : जनाब लालाजी साहब ।

लालाजी : जी मुंशीजी ।

मुंशीजी : शाही खजाना खाली है, रसद का इन्तजाम करना जरूरी है । आप शहर के साहूकारों को इकट्ठा कीजिये और रुपया जमा कीजिये वरना हमारे सिपाही बागी हो जावेंगे ।

[मीर साहब वापिस आते हैं । मुहम्मद यूसुफ़ साथ है । बुरी तरह सर पर पट्टी बँधी है । हाँफ रहा है । कपड़ों पर खून के धब्बे हैं ।]

मुंशीजी : यूसुफ़ मियाँ ?

यूसुफ़ : मैगजीन उड़ गया । मैगजीन उड़ गया । मुंशीजी साहब । मैगजीन उड़ गया !!

मुंशीजी : हैं यूसुफ़ मियाँ.....क्या कह रहे हो, मैगजीन उड़ गया ? क्यों ? किस तरह ? कैसे ?

यूसुफ़ : ग़ज़ब हो गया । सितम हो गया । हज़ारों मारे गये । रहीम बरूश, हाय रहीम बरूश....

मुंशीजी : क्या कहा ? हज़ारों मारे गये....रहीम बरूश को क्या हुआ ?

यूसुफ़ : रहीष बरूश मारा गया । हज़ारों दिल्ली वाले मर गये ।

लालाजी : भई क्या हुआ ? बेटा बताओ तो सही ।

यूसुफ़ : जब सिपाहियों और दिल्लीवालों ने मैंगज़ीन पर हल्ला बोला और उसे घेर लिया तो जो अंग्रेज़ अन्दर थे उन्होंने बारूद में आग लगा दी ।

मीर साहब : बारूद में आग लगा दी और खुद को मार दिया ?

यूसुफ़ : जी हाँ । सिर्फ़ पाँच अंग्रेज़ मैंगज़ीन में थे, उन्होंने हमारी भारी तादाद देखी तो बारूद में आग लगा दी, हमारे साथी - हाय ! हाय ! अब क्या होगा ।

[स्टेज पर हल्का-सा अँधेरा हो जाता है, बाहर गली में लोगों के कराहने की आवाज़ें सुनाई देती हैं, लालाजी ड्योढ़ी से बाहर जाते हैं ।]

मुंशीजी : यह कैसी दर्दनाक आवाज़ें हैं ?

मीर साहब : या इलाही ! यह क्या माजरा है ?

लालाजी : (ड्योढ़ी से) शहर से कहार ज़ख़िमियों को डोलियों में भर-भरकर ला रहे हैं ।

यूसुफ़ : हाय ! सोचा था क्या और क्या हो गया ।

मुंशीजी : बस इतनी-सी बात से घबरा गये यूसुफ़ मियाँ ? बहादुर होकर घबराते हो ! ये जंग है हिम्मत रखो । ज़ख़िमियों की इमदाद के लिए शहर के तमाम शफ़ाख़ाने और दवाख़ाने खुल जाने चाहिएँ । हम बल्लीमारान जाते हैं, हमारे साथ चलिये ।

मीर साहब : जी हाँ ।

पहलवान : (बाहर से) जनाब मुंशीजी साहब !

मुंशीजी : अन्दर आ जाओ पहलवान । (पहलवान अन्दर आता है ।) क्या खबर लाये हो ?

पहलवान : हज़ूर शहर में लूट-मार हो रही है, रात के अँधेरे में शहर के लुच्चे-लफ़ंगे और बदमाश दुकानों और मकानों के ताले तोड़ रहे हैं । दिल्ली वाले खौफ़ के मारे घरों में भाग गये, बाज़ार खुलने का अब कोई इमकान नहीं ।

मुंशीजी : इधर ज़ख़िमियों की चीख-पुकार, उधर लूटमार, इस गुण्डागर्दी और बदअमनी को रोक देना चाहिए ।

पहलवान : शहर कोतवाल भाग गया, बदमाशों को अब किसी का खौफ़ नहीं ।

मुंशीजी : गुण्डों और बदमाशों के साथ सख़्त कार्रवाई की जायेगी । कौन है इनका सरदार ?

पहलवान : गामी खाँ ।

मुंशीजी : गामी खाँ...शहर का गुण्डा । उसे उसके साथियों समेत गिरफ़्तार कर लो । जाने न पावे ।

[गुलशन दाख़िल होती है ।]

गुलशन : दवाख़ाने और शफ़ाख़ाने खुल गये हैं, दिल्ली के हकीम और वैद्य जी-जान से ज़ख़िमियों की मरहम-पट्टी कर रहे हैं, लेकिन पट्टियों के लिए कपड़ा नहीं मिल रहा है, दुकानें बन्द पड़ी हैं ।

मुंशीजी : कपड़े की कमी गुलशन ! जितना कपड़ा घर में मौजूद है ले जाओ (गुलशन ज़नानख़ाने की ड्योढ़ी तक जाती है, चिक के बाहर कपड़े के थान थाम लेती है ।)

गुलशन : आपकी इनायत का शुक्रिया ।

मुंशीजी : ये कपड़ा शहर के बीमारों और जख्मियों के काम न आयेगा तो किसके आयेगा...आइये साहब चलिये ।

[सब बाहर जाते हैं । स्टेज पर हल्की-सी रोशनी है, माधो दबे-पाँव अन्दर आता है, इधर-उधर देखता है, फिर वापस ड्योढ़ी पर जाता है ।]

माधो : आज्ञा यार गामी ! आज्ञा ! मैदान साफ़ है...कोई नहीं है ।

[गामी आता है, कन्धे पर पोटली है ।]

गामी खाँ : आज मेरे दिल की मुराद पूरी हुई, लाला को वो मज्जा चखाया कि याद करेगा । अपनी दौलत पर फूला न समाता था, हमको भिखारी समझा था, पैसा माँगा तो घर से निकाल दिया ।

माधो : बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख ।

गामी खाँ : अब सारे माल से हाथ धो बैठा ।

माधो : हमारे पीछे हाथ धोकर पड़ा था, कहता था कि माधो शराबी-कबाबी हो गया है । जानता नहीं कि हम दिल्ली के तख्त पर बैठनेवाले हैं, क्यों गामी खाँ ।

गामी खाँ : जी हाँ ! हज़ूर सही फ़रमाते हैं ।

माधो : और गामी खाँ तुम हमारे वज़ीर, अच्छा तो अब दिखाओ तुम्हारे खज़ाने में क्या है ?

गामी खाँ : आपको क्या चाहिए सरकार ?

माधो : हम को हार चाहिए अपनी दुल्हन के लिये, हम उसे अपनी मलिका को पहनायेंगे ।

गामी खाँ : हार कौनसा ? ... हार !

माधो : वो जो लालाजी के मकान से उचकाया था ।

[गामी खाँ पोटली खोलकर देखता है ।]

गामी खाँ : हजूर आप के खजाने में हार कहाँ है ?

माधो : देखो मियाँ तुम हमारे वजीर हो हमें गच्चा न दो ।
सूली पर चढ़ा देंगे हम ।

गामी खाँ : (पोटली माधो की तरफ बढ़ाकर) यह लो यह
सारा माल आपका, आप भी क्या कहेंगे किस रईस से
पाला पड़ा है ।

[माधो पोटली खून्द मारता है ।]

माधो : बायें हाथ से दे दो उस्ताद । हम से आनाकानी न करो,
हमारा गुस्सा खराब है, इस पोटली में ना अशरफियाँ
हैं न जेवर ।

गामी खाँ . आपको तो वहम हो गया है हजूर ।

[माधो खंजर निकाल लेता है, गामी जाने लगता है ।]

माधो : (गामी खाँ का रास्ता रोककर) मैं जाने नहीं दूँगा
गामी खाँ, खून खच्चर हो जायेगा । अकेले-अकेले माल
हजम करना चाहते हो ।

गामी खाँ : (जोर-जोर से हँसता है) बस बिगड़ गये ? इतनी
सी देर में, यह लो हार ! (हार जमीन पर फेंकता है,
माधो हार उठाने के लिये झुकता है, गामी खाँ खंजर
छीन लेता है ।) अब बोल क्या कहता है, हार प्यारा है
या जान प्यारी है ? माँग क्या माँगता है……? हमारी
बिल्ली हमों से म्याऊँ ?

[पहलवान और उसके पट्टे नंगी तलवारें लिये आ जाते
हैं । माधो मौक़ा पाकर गामी खाँ की ज़ब से बाहर हो
जाता है ।]

गामी खाँ : कौन ? तुम ?

पहलवान : गिरफ्तार कर लो इन दोनों को और ले चलो क़िले में ।

[माधो अन्दर भाग जाता है, गामी खाँ को पकड़कर सब बाहर ले जाते हैं । नत्थू आता है और पीछे-पीछे बाहर जाता है । लालाजी आते हैं ।]

लालाजी : कहाँ है माधो ? माधो ! सुनता है या नहीं ।
(जनानखाने की ड्योढ़ी के करीब जाकर) माधो ! बाहर आ ।

[कन्हैया आता है ।]

कन्हैया : चाचा आप (लालाजी के करीब आता है)
लालाजी कन्हैया को धक्का देते हैं ।

[कन्हैया डरकर भागता है ।]

लालाजी : कहाँ है तेरा भाई ? लुच्चा कहीं का ! चोर !
बदमाश !!

[अशरफ़ी बाहर आती है ।]

अशरफ़ी : भाईजी !

लालाजी : अशरफ़ी, बुला लाओ अपनी बहन और माँ को,
और चलो मेरे साथ ।

अशरफ़ी : आप तो नाराज़ हो रहे हैं ।

लालाजी : सुना नहीं मैंने क्या कहा ? चलो मेरे साथ घर ।
अब मैं इस घर में एक पल नहीं ठहर सकता ।

[लालाजी की बहू आती है, स्टेज के एक तरफ़ घूँघट निकालकर खड़ी हो जाती है ।]

लालाजी की बहू : क्या हो गया ? आप किस पर खफ़ा हो

रहे हैं ।

लालाजी : मैं लुट गया ! बरबाद हो गया !! हमारी दुकान,
हमारा मकान इन बदमाशों ने लूट लिया ।

अशरफ़ी : हैं ! हमारा मकान लूट लिया !

लालाजी की बहू : क्या कहा, दुकान लूट ली !

लालाजी : मैं इस मुंशी की बात में आ गया । मैंने आँख
मीचकर इसकी मदद की और इसकी औलाद ने मुझे
साँप बनकर डस लिया ।

लालाजी की बहू : आप क्या कह रहे हैं ! कुछ समझ में नहीं
आता !

लालाजी : आज मैं इस माधो के बच्चे को बन्दूक से मार
डालूँगा । मैं इसकी हड्डी-पसली तोड़ दूँगा । (छोटी बन्नो,
बड़ी बन्नो, इमरती भी बाहर आती है) मेरा घर उजाड़
डाला । मेरी एक-एक चीज़ लूट ली ।

लालाजी की बहू : माधो ने ।

लालाजी : हाँ ! हाँ ! इस लुच्चे ने ! गामी खाँ के शागिर्द
ने । बड़ा शरीफ़ का बच्चा बना फिरता है । अब मैं यहाँ
नहीं ठहर सकता, यह माधो जहरी है ।

छोटी बन्नो : हैं भय्या !

लालाजी : मैं कहता हूँ आप खड़ी-खड़ी क्या सोच रही हैं,
फ़ौरन यहाँ से निकल चलो । यह मकान मुझे काट
रहा है ।

लालाजी की बहू : जा बेटी ! मेरी चादर ले आ, अन्दर से ।

लालाजी : नहीं हमें कुछ नहीं चाहिए ! पड़ी रहने दो चादर !
आयेगी इन्हीं के कफ़न के काम ।

लालाजी की बहू : हाय रे हमारा सब कुछ लुट गया । हम बरबाद हो गये ।

[इमरती, अशरफ़ी लालाजी की बहू से चिपट जाती हैं ।]

बहूजी : (जनानखाने में) ऐ बहू क्या हो गया ?

लालाजी की बहू : सुनली अपने बेटे की ! अपने लाडले की करतूत ! लूट का माल घर में भर लिया ? अब तो कलेजे को ठंडक मिल गई !

बहूजी : ऐ बहू यह क्या कह रही हो ? तुम तो यहाँ सुबह से बैठी हो, हमें तो पता भी नहीं ।

लालाजी की बहू : अभी पता नहीं तो थोड़ी देर में पता चल जायेगा, जब तुम्हारा लाडला भोलियाँ भर-भरकर अश-फ़ियाँ तुम्हारे कदमों में डालेगा ।

बहूजी : ना करे भगवान्, हम किसी का माल चुरायें । ना करे परमात्मा, हमारे ऐसे दिन आयें, हम कोई चोर-डाकू थोड़ा ही है ।

लालाजी की बहू : पूछ लो ना अपनी औलाद से, माधो अन्दर हो तो हैं । हमें हमारा माल मिल जाना चाहिये..... चलो बेटा चलो.....ये कहाँ दिवाल ।

बहूजी : ऐ बहू, ठहरो तो मैं तुम्हारा सब कुछ दिलवा दूंगी । ऐसे मत जाओ, यूँ खफ़ा मत हो ।

[लालाजी, लालाजी की बहू, अशरफ़ी, इमरती बाहर जाती हैं ।]

बहूजी : (बाहर आकर) हाय राम ! अब क्या होगा ? इस माधो ने तो हमारी नाक कटवा दी । हमारे माथे पर कलंक का टीका लग गया ।

कन्हैया : अम्मा, माधो भैया ने चोरी कर ली ।

छोटी बन्नो : और चाचा को लूट लिया ।

बड़ी बन्नो : अब अशरफी, इमरती हम से कभी नहीं बोलेंगी ।
वो हम से कुट्टी कर देंगी ।

[नत्थू आता है, कंधे पर बोरी है । ऊपर की मंजिल में जाता है ।]

बहूजी : अरे नत्थू, ए नत्थू ! (नत्थू सीढ़ी पर चढ़ता है) देखो
बेटा कन्हैया, यह नत्थू क्या ले जा रहा है ? यह क्या है
उसके पास ?

कन्हैया : (जोर से) क्यों रे नत्थू, क्या है तेरे पास ?

छोटी बन्नो : अम्मा, नत्थू भी किसी को लूट लाया ।

बड़ी बन्नो : क्यों रे तूने भी चोरी की है क्या ?

बहूजी : हाय रे यह क्या हो गया ! यह कैसे दिन आ गये ?
क्रिस्मत फूट गई हमारी ।

[कन्हैया तेजी से नत्थू के पीछे जाता है ।]

कन्हैया : दिखा दिखा क्या है इस बोरी मे ? (कन्हैया भाग
कर वापिस आता है) अम्मा ! अम्मा ! देखो देखो
(बच्चे का जूता दिखाता है) देखो यह क्या ?

बहूजी : है, यह तो किसी बच्चे का जूता है । जूते चुरा लाया
किसी के ।

कन्हैया : नहीं अम्मा नहीं.....नत्थू बच्चे चुरा लाया है ।

बहूजी : हैं क्या कहा । बच्चे.....?

[ऊपर की मंजिल से बच्चे के रोने की आवाज़ आती
है । छोटी-बड़ी बन्नो भागकर सीढ़ियों की तरफ़ जाती हैं ।]

बहूजी : क्यों रे नत्थू ! ये किसके बच्चे हैं, नीचे तो आ

कम्बख्त ! ये क्या ले आया ?

[छोटी बन्नो नत्थू के पीछे जाती है ।]

छोटी बन्नो : (ऊपर की मंज़िल से) अम्मा, अम्मा ! दो नन्हें नन्हें बच्चे.....फ़िरंगियों के बच्चे ।

[माधो दीवानखाने से बाहर आता है ।]

माधो : जो फ़िरंगियों को घर में छिपायेगा उसका सिर कलम कर देंगे । कहाँ हैं फ़िरंगी-बच्चे ? किसने छिपाये हैं, बताओ ?

बहूजी : माधो बेटा ! माधो ।

छोटी बन्नो : माधो भैया, लालाजी रुठ गये हम से ।

बड़ी बन्नो : और चाची बहुत गुस्से में थी ।

छोटी बन्नो : अशरफ़ी, इमरती फिर कभी नहीं आयेंगी ।

माधो : तो फिर मैं क्या करूँ, मारो गोली सबके ।

बहूजी : बेटा ! यह तूने क्या किया ? लालाजी को दुकान लूट ली । मकान का ताला.....

माधो : (बात काटकर) कौन कहता है ? झूठा कहीं का, हम कोई चोर-डाकू हैं क्या ?

बहूजी : हाँ ! बेटा हाँ, तू कोई चोर-डाकू थोड़े ही है । तो फिर किसने लूटा लालाजी को ?

माधो : हमें क्या मालूम ? हमने क्या ज़माने भर का ठेका लिया है ।

बहूजी : यह ग़ामी खाँ कौन है ? तेरा दोस्त है ?

माधो : हम कुछ नहीं जानते, होगा कोई ?

बहूजी : बतादे, बेटा बतादे । देख तू तो मेरा चाँद है आँखों का तारा ।

[मुंशीजी गुस्से में आते हैं ।]

मुंशीजी : यह ऐसे नहीं बतायेगा, जब तक हंटरों से सूड़ा नहीं जायेगा । बताओ माल कहाँ है ? आवारागर्द ! चोर !! उचक्का !!! शर्म नहीं आती दुकानों के ताले तोड़ते हुए । मकानों में डाके डालते हुए ।

माधो : पिताजी.....

मुंशीजी : पिताजी का बच्चा ! मैं तेरी नस-नस से वाकिफ़ हूँ । मुझे तेरी हर बात का पता है । आध घण्टे के अन्दर-अन्दर यहाँ सब माल लाकर रख दो वरना...

माधो : जी, जी मैंने किसी का माल नहीं चुराया ।

मुंशीजी : चोरी और सीनाजोरी...! कन्हैया ! जाओ अन्दर से मेरा हंटर उठा लाओ ।

[कन्हैया दीवानखाने में जाता है ।]

बहूजी : बतादे बेटा ! बतादे ।

मुंशीजी : तुम मत बोलो । बीच में से हट जाओ । मैं आज इसकी खाल उधेड़ दूंगा । बताओ लालाजी के जेवर और अशफियाँ कहाँ हैं ?

छोटी बन्नो : हैं जेवर ?

बड़ी बन्नो : अशफियाँ ...

मुंशीजी : इस चोर-डाकू ने पाँच हजार अशफियाँ चुराई हैं और लालाजी का तमाम जेवर मार लिया ।

बहूजी : हैं ! यह क्या किया तूने बेटा ?

[कन्हैया हंटर लेकर आता है । मुंशीजी हंटर ले लेते हैं ।]

मुंशीजी : (हंटर को जमीन पर पटककर) बोल !

बहूजी : (रोकर) ऐ बेटा कन्हैया, जा जल्दी से जा मीर साहब

को बुला ला । ये मार डालेंगे मेरे बेटे को । लालाजी से कह दे हम तुम्हारी पाई-पाई चुका देंगे । जा बेटा, जल्दी जा, भागकर जा ।

[कन्हैया जाता है]

मुंशीजी : (माधो के करीब आकर) जवाब दो ।

माधो : गामी खाँ ने शहर से दूर जंगल में छिपा दिया है ।

मुंशीजी : अच्छा, तुम्हारा फ़ैसला अभी हुआ जाता है । (जोर से आवाज देकर) पहलवान अन्दर आ जाओ । गामी खाँ को बाहर पहलवान ने पकड़ रक्खा है, अन्दर बुलाता हूँ भूठ-सच का पता चल जायेगा ।

बहूजी : आप माधो को माफ़ कर दीजिये । वह बच्चा है, अब ऐसा नहीं करेगा ।

मुंशीजी : (डांटकर) मैं कह चुका हूँ तुम इसमें दखल न दो । इसका फ़ैसला तुम्हारे और मेरे हाथ में नहीं है । शहर वाले ही इसका फ़ैसला कर सकते हैं । तुम सब अन्दर चली जाओ ।

[बहूजी और लड़कियाँ जाती हैं । पहलवान गामी खाँ की मुश्कें कसे अन्दर आते हैं । चन्द शहरी भी साथ हैं ।]

एक शहरी : यही है हज़ूर वो बदमाश जिसने मेरी बच्ची की कानों की बालियाँ उतारी हैं ।

दूसरा शहरी : और हज़ूर, यह मेरे तमाम बर्तन-भाँडे उठा कर ले गया ।

एक शहरी : इसी के इशारे पर तमाम गुण्डों ने मेरा गल्ला लूट लिया ।

दूसरा शहरी : हाय ! अब मैं क्या करूँ ? मेरे पास तो जो कुछ था सब लुट गया । मैं दाने-दाने को मौहताज हो

गया ।

एक शहरी : गामी खाँ को मौत की सज़ा मिलनी चाहिए ।

दूसरा शहरी : इसे दरख्त से उलटा लटका दिया जाये ।

तीसरा शहरी : इसे तोप के मुँह से बाँध के उड़ाया जाये ।

मुंशीजी : गामी खाँ ! बताओ, यह सब माल कहाँ है ?

गामी खाँ : हज़ूर, मैं बेकसूर हूँ । माधो को सब कुछ मालूम है ।

माधो : मुझे क्या मालूम ?

एक शहरी : भूठ बोलता है ।

दूसरा शहरी : यही सबका सरगना है ।

एक शहरी : लूट का माल इसके ही पास है ।

मुंशीजी : गामी खाँ ! तुम जानते हो इसका नतीजा अच्छा नहीं । इन सबका माल दे दो । वरना.....

गामी खाँ : हज़ूर ! माल मेरे पास नहीं । मैं सच कह रहा हूँ । माल तो माधो ने आँने-पौने दामों पर बेच दिया । इन्हीं से पूछिये ।

माधो : गामी खाँ ! इतना भूठ ?

मुंशीजी : चुप रहो माधो ! डाकू तुम भी हो । जो सज़ा गामी खाँ को मिलेगी वही तुम्हें भी दी जायेगी । (सबसे मुख़ातिब होकर) मैं हज़ूर जहाँपनाह की खिदमत में हाज़िर होकर आप सबकी तकलीफ़ात बयान करूँगा और सिफ़ारिश करूँगा कि इन सब बदमाशों को तोप से उड़ा दिया जाय । (जनानख़ाने से बहूजी की चीख सुनाई देती है । जनानख़ाने की ड्योढ़ी के करीब जाकर) ख़बरदार, जो किसी ने मुँह से आवाज़ निकाली ।...पहलवान ! देखते क्या हो इस बेईमान की भी मुश्कें कसलो और ले चलो ।

[पट्टे और पहलवान, माधो की मुश्कें कस लेते हैं और तलाशी लेते हैं । मीर साहब आते हैं, पीछे-पीछे कन्हैया भी ।]

मीर साहब : अये भई, यह क्या तमाशा है ? यह कैसी कच-हरी लगी है । (शहरियों की तरफ़ देखकर) क्यों जनाब, आपका कुछ नुक़सान हो गया ?

मुंशीजी : गामी खाँ और माधो ने मिलकर शहर को लूट लिया ।

तीसरा शहरी : मेरी दुकान लूट ली । सारा गल्ला ले गये ।

दूसरा शहरी : मेरे पास खाने को भी नहीं रहा ।

मीर साहब : आप फ़िक्र न कीजिये । आपकी पाई-पाई चुका दी जायेगी, हम हज़ूर जहाँपनाह से आपका सब कुछ दिलवा देंगे ।

दूसरा शहरी : मीर साहब ! आपका शुक्रिया । अब हम चलें आपके साथ ।

मुंशीजी : गामी खाँ और माधो को क़िले के मैदान में ले चलो पहलवान ! चीज़े ये चुरायें और सबका माल बादशाह सलामत भरें । ये नहीं हो सकता । माल इन्हीं को वापस देना होगा । वरना इनकी खैर नहीं ।

पहलवान : (मुंशीजी को हार दिखाता है) माधो भैया के पास तो सिर्फ़ यह हार ही था । वोह मैं लालाजी के पास पहुँचा दूँगा ।

मुंशीजी : (हार लेकर) बस तो साबित हो गया कि माधो ने भी चोरी की है ।

[लालाजी आते हैं ।]

लालाजी : जनाब मुंशीजी साहब ! हमने रसद का इंतज़ाम

कर लिया है । हम अभी-अभी किले से आ रहे हैं । हज़ूर जहाँपनाह शहर तशरीफ ला रहे हैं । उनकी सवारी निकलेगी । वो सबकी दुकानें खुलवाने आ रहे हैं । (शहरियों से) आप इतमीनान रखे आपका सब माल मिल जायेगा ।

मीर साहब : क्या हज़ूरे वाला शहर के इन्तज़ाम के लिए खुद तशरीफ ला रहे हैं ?

लालाजी : बस सवारी निकलनेवाली है (शहरियों से) आप लोग अपने घर जायें । आपके माल का मैं ज़िम्मेदार हूँ ।

एक शहरी : आपका शुक्रिया ।

[सब शहरी जाते हैं ।]

मुंशीजी : लालाजी साहब ! मैं नादिम हूँ, जो सज़ा आप चाहें इन्हें दे सकते हैं । मुलज़िम हाज़िर हैं ।

लालाजी : इन्सान से भूल हो जाती है, माधो अभी बच्चा है । गामी खाँ के चक्कर में फँस गया । पहलवान माधो की मुश्कें खोल दो । आइन्दा ऐसा नहीं करेगा ।

मुंशीजी : लालाजी साहब, ये आप क्या फ़रमा रहे है । यह इन्साफ़ नहीं है । माधो और गामी खाँ दोनों मुलज़िम हैं ।

मीर साहब : माधो ने हार दे दिया । गामी खाँ चाहे तो वो भी छूट सकता है । लालाजी का माल दे दे ।

मुंशीजी : (गामी खाँ के पास जाकर) देखो गामी खाँ ! मेरी इज़्ज़त तुम्हारे हाथ है । मैं तुमसे इल्तिज़ा करता हूँ । लालाजी का माल वापिस कर दो । (गामी खाँ हाँ कर देता है) शाबाश तुमने मेरी इज़्ज़त रखली । गामी खाँ की मुश्कें खोल दो । (पहलवान गामी खाँ और माधो की मुश्कें खोलते हैं । गामी खाँ बाहर और माधो अन्दर भागता

है । ढंढोरी पिटती है ।)

ढंढोरची : (बाहर सड़क पर) खलकत खुदा की, मुल्क बाद-
शाह का, हुक्म बादशाह का...

लालाजी : हज़ूर जहाँपनाह की सवारी आ रही है ।

[पहलवान के पट्टे बाहर जाते हैं ।]

मीर साहब : मुंशीजी साहब, क्या सोच में पड़ गये ? आइये,
आइये सवारी में शरीक हो जाइये चलिये—चलिये ।

[मीर साहब, लालाजी, मुंशीजी बाहर जाते हैं । नत्थू
पहलवान को रोक लेता है ।]

पहलवान : (नत्थू से) मुंशीजी ने गामी खाँ को छुड़ाकर
अच्छा नहीं किया, वो क्रौम और मुल्क का दुश्मन है ।
इसको आज़ाद रखना खतरे से खाली नहीं ।

नत्थू : अगर गामी खाँ आज़ाद ना होता तो माधो भैया भी
तोप से उड़ा दिये जाते ।

पहलवान : माधो और गामी खाँ की दोस्ती अच्छी नहीं ।
गामी खाँ पर कड़ी नज़र रखने की ज़रूरत है । काला
नाग है, इसका काटा पानी नहीं माँगता ।

नत्थू : भई पहलवान एक बात है ।

पहलवान : क्या बात है नत्थू ?

नत्थू : तुम्हें तो बच्चों से बहुत प्यार है ना, तुम अगर चाहो
तो इन बच्चों को बचा सकते हो ।

पहलवान : किन बच्चों को... किसके बच्चों को...

नत्थू : पहलवान, तुम मेरी मदद कर सकते हो । तुम इन दोनों
बच्चों को छुपा लो ।

पहलवान : कौनसे बच्चे ? कैसे बच्चे...यह क्या कह रहे हो
नत्थू ?

नत्थू : मैं दो फ़िरंगी बच्चों को उठा लाया हूँ । उन्हें बचा लो ।

पहलवान : कहाँ हैं वो ?

नत्थू : ऊपर मेरी कोठरी में ।

पहलवान : किसी ने देखा तो नहीं ।

नत्थू : माधो भैया जानते हैं, मुझे डर है गामी खाँ से न कह दें ।

पहलवान : मुशीजी के मकान की तलाशी हो गयी तो ये बच्चे बेमौत मारे जायेंगे ।

नत्थू : जभी तो चाहता हूँ कि बच्चों को कहीं और छिपा दूँ ।

पहलवान : कहाँ छिपाना चाहते हो ?

नत्थू : पहलवान ! इन्हें अखाड़े में छिपा दूँ ?

पहलवान : वहाँ तो खुले मैदान की रेवड़ियाँ हैं । वहाँ कहाँ छुपाओगे । वह जगह ठीक नहीं ।

नत्थू : तुम्हारे मकान में तो तहखाना भी है ?

पहलवान : है तो सही मगर...

नत्थू : पहलवान ! तुम्हारा कोई क्या बिगाड़ सकता है, तुम्हें किसका डर ?

पहलवान : (चारों तरफ़ देखकर) कहाँ हैं बच्चे ?

नत्थू : अभी लाया ।

[नत्थू ऊपर जाता है और कन्हैया आता है]

कन्हैया : उस्ताद !

पहलवान : कन्हैया बेटा ।

कन्हैया : भैया बच गये ! भैया बच गये !

पहलवान : हाँ ! कन्हैया, लालाजी ने बचा लिया वरना...

कन्हैया : और मीर साहब ने भी तो...

[गुलशन का बेटा शेखू कन्हैया को बाहर से आवाज देता है ।]

पहलवान : कौन आया है ?

कन्हैया : गुलशन का बेटा शेखू । मेरा साथी । बछेरा पलटन का सिपाही ।

[कन्हैया बाहर जाता है । नत्थू बोरी लिये नीचे आता है । पहलवान को बोरी देकर]

नत्थू : मैं तुम्हारा जिन्दगी भर एहसान नहीं भूलूँगा, पहलवान ।

पहलवान : नत्थू यह क्या कह रहे हो तुम ? मजाल है जो किसी को पता चल जाये । जान भी चली जाये लेकिन इसका भेद किसी को न दूँगा ।

[पहलवान जाता है । गुलशन आती है]

गुलशन : नत्थू, अरे ओ नत्थू ! सुना तूने, हजूर जहाँपनाह की सवारी आ रही है ?

नत्थू : ढँढोरी तो पिटी थी ।

गुलशन : ढँढोरी नहीं...सवारी किले से चल दी । आती ही होगी ।

[शेखू और कन्हैया अन्दर आते हैं ।]

नत्थू : वाह ! क्या जोड़ी है !

गुलशन : बछेरा पलटन के सिपाही हैं । आज बहुत खुश हैं दोनों ।

[नौबत, नफ़ीरी बज रही हैं । बादशाह की सवारी आ रही है ।]

कन्हैया : हम भी अब रोज़ जश्न मनायेंगे ।

गुलशन : हाँ क्यों नहीं, अब तो हँसी-खुशी के दिन फिर आ गये ।

कन्हैया : किले में मुशायरा होता है और हमें कोई नहीं बुलाता ।

गुलशन : समझते भी हो शेर किस चिड़िया का नाम होता है ?

कन्हैया : हमारे घर में भी मुशायरा होगा ।

गुलशन : शायर आ रहे हैं क्या ?

शेखू : अजी हम क्या किसी से कम है ।

गुलशन : शायर ना शायर की दुम ।

शेखू : जनाब ! सब दौर के शायर इकट्ठे होंगे । जो इस दुनियाँ में है और जो नहीं भी है ।

गुलशन : क्या मतलब ?

शेखू : मीर तक़ी मीर और इंशा भी होंगे । हजरते जौक, मिर्जा ग़ालिब और जनाबे दाग ।

गुलशन : यह तो खूब तज़वीज की है ।

कन्हैया : उधर किले में असली मुशायरा होगा और यहाँ ..

गुलशन : नक़ली ।

[शहनाई और बाजों की आवाज़ें साफ़ सुनाई देती हैं ।]

कन्हैया : (चिक के करीब जाकर) बन्नो ! बाहर आजाओ । सवारी आ रही है ।

[छोटी बन्नो बड़ी बन्नो, दुलहिन और बहूजी बाहर आती हैं । कन्हैया और शेखू मुँह फेरकर खड़े हो जाते हैं । लड़कियाँ और दुलहिन ऊपर की मंज़िल में चली जाती हैं ।]

बहूजी : (लँगड़ातो हुई पीढ़े तक जाती हैं) अरे नत्थू, ओ नत्थू ! गरम पानी का पतीला ले आ ।

गुलशन : क्या हो गया बहूजी ?

बहूजी : पैर में मोच आ गई गुलशन ! एँ गुलशन यह शेखू है तुम्हारा बेटा ? (शेखू करीब आता है ।)

शेखू : आदाब अर्ज ।

बहूजी : जीते रहो बेटा !

कन्हैया : चल भई शेखू, चल सवारी में शामिल हो जायें ।

[नत्थू गर्म पानी का पतीला लाकर रखता है, बहूजी पैर पानी में रखती हैं ।]

गुलशन : जरा सा नमक डाल लो पानी में, ठीक हो जाओगी ।

छोटी बन्नो : (ऊपर की मंजिल से) अम्मा ! अम्मा ! निशान का हाथी आ रहा है ।

बड़ी बन्नो : हज़ूर बादशाह । मौला बख्श हाथी पर सवार हैं ।

गुलशन : क्या बात है । मौला बख्श हाथी की भी ।

बहूजी : हाथी क्या है इंसान की अक़ल रखता है ।

छोटी बन्नो : एक बहुत बड़ा चाँदी का हुक्का हाथी के सर पर रक्खा है ।

बड़ी बन्नो : और महावत के कन्धे पर पेचवान की सटक रक्खी है ।

गुलशन : फ़ौजदार खाँ ठाठ से बैठे होंगे ।

छोटी बन्नो : बादशाह हुक्का पी रहे हैं ।

बहूजी : कैसा मज़ा आ रहा है इन लड़कियों को ।

गुलशन : कितने अरसे बाद यह मंज़ूर देखने को नसीब हुआ ।

बड़ी बन्नो : अम्मा ! अम्मा ! वह देखो । वह देखो, पलटनें भी आ रही हैं । बाजे बज रहे हैं ।

गुलशन : सब शहज़ादे पलटनों के सरदार हैं । सुना है नवाब

जीनत महल साहिबा ने भी बल्लमटेर पलटन को अपनी मातहती में ले लिया है ।

छोटी बन्नो : सब दुकानें खोल रहे हैं । अहा हा हा...हा हा हा । (खुशी से तालियाँ बजाती हैं ।)

बड़ी बन्नो : खूब चहल-पहल है, बड़ा मजा आ रहा है ।

गुलशन : (दुआइया अन्दाज़ में) या परवरदिगार तेरा लाख-लाख शुक्र है ।

[पर्दा गिरता है]

तीसरी मजलिस

पहला सीन

[पर्दा उठता है, चन्द छोटे-छोटे लड़के शायरों के लिबास में अन्दर आते हैं, इधर-उधर देखते हैं और मसनद पर बैठ जाते हैं।]

शेखू : (ड्योढ़ी से भाँककर) क्यों भाई कन्हैया, आ जायें ?

कन्हैया : आ जाओ शेखू आ जाओ, मतला साफ़ है।

शेखू : फिर क्या देर है। हो जाये मुशायरा शुरू.....बुलाओ मियाँ नक़ीब को, कहाँ हैं ?

नक़ीब : (ऊँची आवाज़ में) लीजिये शमए महफ़िल बुल-बुले हिन्दुस्तान जनाव मिर्जा खाँ दाग़ देहलवी के ख़बर पेश की जाती है।

[नक़ीब शमा को उठाकर उस लड़के के सामने जो दाग़ के लिबास में होता है रख देता है और पीछे जाकर खड़ा हो जाता है।]

दाग़ : इजाज़त है बन्दा परवर यहाँ उस्तादाने फ़न जमा हैं, इजाज़त चाहता हूँ।

सब शोरा : बिसमिल्ला.....बिसमिल्ला.....

दाग़ : अर्ज़ किया है

फिरे राह से वो यहाँ आते-आते,
अजल मर रही तू कहाँ आते-आते।
मुझे याद करने से ये मुद्दआ था,
निकल जाये दम हिचकियाँ आते-आते।

मिरे आशियाँ के तो थे चार तिनके,
चमन उड़ गया आँधियाँ आते-आते ।
नहीं सहल ऐ दाग यारों से कह दो,
कि आती है उर्दू जबाँ आते-आते ।

सब शोरा : वाह ! वाह ...सुभान अल्ला...क्या बात है, क्या बात है ?

दाग : आदाब अर्ज, तसलीमात !

नक़ीब : अब शमए महफ़िल उस्ताद उस्मुलतान मलिक
उश्शोरा खाकानिय हिन्द शेख मुहम्मद इब्राहीम जौक के
आगे पेश की जाती है ।

[नक़ीब शमा को उस लड़के के सामने, जो जौक के
लिबास में है, रखता है और पीछे जाकर खड़ा हो जाता है ।]

जौक : लाई हयात आय क़ज़ा से चली चले,
अपनी खुशी ना आये ना अपनी खुशी चले ।
बेहतर तो है येही कि ना दुनिया से दिल लगे,
पर क्या करे जो काम न बेदिलगी चले ।
दुनिया ने किसका राहे फ़ना में दिया है साथ,
तुम भी चले चलो यूँ ही जब तक चली चले ।

शोरा : सुभान अल्ला...सुभान अल्ला !

नक़ीब : अब शमए महफ़िल सैयद इशा अल्ला खाँ इंशा के
रुबरू आती है ।

[नक़ीब शमा को उस लड़के के सामने, जो इंशा के लिबास
में है, रख देता है और पीछे जाकर खड़ा हो जाता है ।]

इंशा : कमर बाँधे हुए चलने को, याँ सब यार बैठे हैं,
बहुत आये गये बाक़ी जो हैं तैयार बैठे हैं ।

ना छोड़ ऐं निकहते बादे बहारी राह लग अपनी,
तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं हम बेज़ार बैठे हैं ।

नक़ीब : अब शमए महफिल नजमुद्दौला दबीर उल्मुल्क
नवाब मिर्जा असद उल्ला खाँ ग़ालिब देहलवी के सामने
पेश की जाती है ।

[नक़ीब शमा को, उस लड़के के सामने, जो ग़ालिब के
लिबास में है, रखता है और पीछे जाकर खड़ा हो जाता है ।]

ग़ालिब : आह

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक,
कौन जीता है तिरी जुल्फ़ के सर होने तक ।
हमने माना के तगाफ़ुल न करोगे लेकिन,
खाक हो जायेंगे हम तुम को ख़बर होने तक ।
शमे हस्ती का असद किससे हो जुज्जुमर्ग़ इलाज,
शमा हर रंग में जलती है सहर होने तक ।

एक शायर : (दबी ज़बान से) सुभान अल्ला !

नक़ीब : अब शमा खुदाये सुखन मीर मुहम्मद तकी मीर
देहलवी की जनाब में जलवारेज़ है ।

[नक़ीब शमा को उस लड़के के सामने जो मीर के
लिबास में है रखता है, और पीछे जाकर खड़ा हो जाता है ।]

मीर : भई हम क्या और हमारा कलाम क्या, मगर खैर अर्ज़
किया है ।

मुंह तका ही करें है जिस-तिस का,
हैरती है ये आइना किसका ।
शाम ही से बुझा सा रहता है,
दिल है गोया चिराग़ है मुक़लिस का ।

ताब किसको जो हाले मीर सुने,

हाल कुछ और ही है मजलिस का ।

शोरा : क्या जबान है ! क्या अन्दाजे बयान है ! क्या सोजो

गुदाज है, क्या दर्द है, क्या खूब फ़रमाया है ।

मीर : ये जरर्नवाजी है वरना मन आनम कि मन दानम ।

गामी खाँ : (बाहर से) माधो...माधो ..

नक़ीब : (ड्योढ़ी से भाँककर) अरे भागो बाहर गामी खाँ खड़ा है ।

[सब लड़के बाहर भाग जाते हैं]

गामी खाँ : (हँसता हुआ अन्दर आता है) भाग गये ..डर गये...शायरी कर रहे थे ।

[माधो आता है ।]

माधो : फिर आ गये यार तुम ।

गामी खाँ : हम गये कहाँ थे, जो आते । हम तो तुम्हारे क़दमों में ही हैं ।

माधो : दोस्ती हो तो ऐसी हो ।

गामी खाँ : भई इस पहलवान ने नाक में दम कर रक्खा है ।

जी में आता है इसके सीने में खंजर भाँक दूँ । कमबख्त कुछ करने नहीं देता ।

माधो : मियाँ हमको भी ऐसे जोर से जकड़ा उस रोज़, अध-मुँआ कर दिया इस बेईमान ने ।

गामी खाँ : जिधर जाता हूँ पीछा करता है ।

माधो : पहलवान की जान मेरी मुट्ठी में है । जो हम चाहें कर सकते हैं ।

गामी खाँ : सच कह रहे हैं सरकार, कुछ हमें भी तो बताइये ।

माधो : हम भी क्रयामत की नज़र रखते हैं ।

गामी खाँ : कुछ बताइयेगा भी या यूँ ही तरसाइयेगा ।

माधो : बस एक न एक दिन उसके मकान पर धावा बोलना पड़ेगा । सब इसकी बोटियाँ ना नोच लें तो बात ।

गामी खाँ : भई हम आपको सलाम भुकाते हैं, मान जाओ बता दो बात ।

माधो : आप कुछ अशफियाँ इनायत फ़रमायें तो बताया जाये, आप पर भरोसा कम है ।

गामी खाँ : हम तो आपके खादिम हैं, मान जाओ कहना ।
(ठोड़ी पकड़कर) भाई मेरे, अच्छे भाई...

माधो : भाई ना भैया सबसे बड़ा रुपैयाँ नक़द नारायण...

गामी खाँ : सच कहता हूँ, बहुत दिन से कोई शिकार नहीं मिला ।

माधो : हमको चराते हो, खजाने के खजाने हड़प कर गये ।
कहाँ हैं अशफियाँ ?

गामी खाँ : अशफियाँ कहाँ, लालाजी की तो पाई-पाई चुकानी पड़ी ।

माधो : हमने सिर्फ़ लालाजो का माल ही थोड़े लूटा था, दिल्ली में और भी तो अमीर रहते हैं ।

[गामी खाँ जेब से थैली निकालता है ।]

माधो : शाबाश ! बात हुई ना, ऐसे ही मिल-बाँटकर खाते रहे तो फिर कभी बदहज़मी नहीं होगी ।

गामी खाँ : (थैली देने से पहले) बात बताओ ।

माधो : क्या ख़ूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले ।

गामी खाँ : (थैली पकड़ाकर) बताओ भी, बता भी चुको ।

माधो : (गामी खाँ के कान में कुछ कहता है) समझे... कहना नहीं किसी से ।

गामी खाँ : क्या कहा... फ़िरंगी पहलवान के घर में ।

माधो : आहिस्ता बोलो मियाँ आहिस्ता, अपनी आँखों से देखा है हमने ।

मुंशीजी : (बाहर से) नत्थू ! (माधो अन्दर भागता है गामी खाँ सटपटा जाता है । मुंशीजी आते हैं । (कड़क-कर) गामी खाँ तुम मेरे मकान में ! तुम्हारी ये हिम्मत !

गामी खाँ : हजूर...हजूर...

मुंशीजी : मेरे मकान का भी ताला तोड़ना चाहते थे ।

गामी खाँ : नहीं...नहीं सरकार ये बात नहीं ।

मुंशीजी : फिर यहाँ क्यों आये ?

गामी खाँ : हुजूर का शुक्रिया अदा करने ।

मुंशीजी : क्या मतलब ?

गामी खाँ : आपने उस रोज़ मेरी जान बचा ली ।

मुंशीजी : बातें न बनाओ । साफ-साफ बताओ, यहाँ क्यों आये ?

गामी खाँ : मैं सच कह रहा हूँ, हजूर !

मुंशीजी : अच्छा अब तुम जा सकते हो ।

गामी खाँ : हजूर मैंने कसम खा ली है अब कोई बुरा काम न करूँगा ।

मुंशीजी : नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली ।

गामी खाँ : आपके सर की कसम मैंने तोबा कर ली है ।

मुंशीजी : अच्छा किया ।

गामी खाँ : मैं आपका खादिम हूँ, कुछ मेरे लायक काम बताइये ।

मुंशीजी : तुम दिल्लीवालों पर बहुत बड़ा एहसान कर सकते हो ।

गामी खाँ : वो कैसे ! बताइये...बताइये ।

मुंशीजी : लूट-मार छोड़ दो, जासूसी न करो ।

गामी खाँ : जासूसी, मैं जासूस हूँ, नहीं सरकार यह आपकी भूल है ।

मुंशीजी : जो अंग्रेजों से साज-बाज करेगा, शहर की खबरें बाओटे की पहाड़ी पर पहुँचायेगा, तो हम उसकी चमड़ी उधेड़ देंगे । खाल में भुम भरवा देंगे ।

गामी खाँ : अगर मैं आपको उनके नाम बात दूँ तो.....

मुंशीजी : तुम जासूसों को जानते हो क्या ?

गामी खाँ : खूब अच्छी तरह और यह भी जानता हूँ शहर में किस-किसने फिरंगियों को अपने घर में छिपा रक्खा है ।

मुंशीजी : कौन है वो लोग जो ऐसा कर रहे है ?

गामी खाँ : आप उन्हें जानते हैं हजूर ।

मुंशीजी : खबरदार, मुँह सँभालकर बात करो । तुम्हारा मत-लब है, हम भी जासूसों से मिले हैं ।

गामी खाँ : नहीं सरकार ! आप मेरी बात नहीं समझे ।

मुंशीजी : फिर क्या कहना चाहते हो ?

गामी खाँ : नाम बता दूँगा सरकार, लेकिन आप नाराज तो ना होंगे ?

मुंशीजी : नाराज ? नाराज क्यों हूँगा, मगर हाँ, अगर तुमने भूठ बोला तो देख लेना । इसका नतीजा बुरा होगा ।

गामी खाँ : हजूर ! गद्दारों को पकड़वाना मेरा काम है ।

मुंशीजी : कौन है जो मुल्क से गद्दारी कर रहा है ? हम उसे

सख्त-से-सख्त सजा देगे ।

गामी खाँ : सरकार !

मुंशीजी : बोलते क्यों नहीं ।

गामी खाँ : पहलवान बहुत टेढ़े आदमी हैं.....

मुंशीजी : पहलवान ! पहलवान...पहलवान—क्या कहा ?

गामी खाँ : पहलवान जो कुछ कर रहे हैं आप सुनकर दंग रह जायेंगे ।

मुंशीजी : यह क्या कह रहे हो गामी खाँ ! जबान सँभाल कर बात करो...पहलवान के खिलाफ़ अगर एक लफ़्ज़ भी मुँह से निकाला...तो...

गामी खाँ : माफ़ कीजियेगा । मैं जानता था, आप पहलवान के खिलाफ़ कुछ सुनना पसन्द नहीं करेंगे...अच्छा इजाजत दीजिए ।

[गामी खाँ जाने लगता है ।]

मुंशीजी : (सोचकर) गामी खाँ ठहरो ! (गामी खाँ ठहर जाता है) बताओ, पहलवान ने क्या किया ? मगर सोच लो...जान की बाज़ी लगाई है तुमने ?

गामी खाँ : जान हाज़िर है हज़ूर, मुल्क और बादशाह के लिए मेरा सर भी क़लम हो जाये तो परवाह नहीं ।

मुंशीजी : फ़िरंगी कहाँ-कहाँ छिपे हैं ?

गामी खाँ : पहलवान के मकान में है, हज़ूर !

मुंशीजी : पहलवान के मकान में ! सुनी सुनाई-कहते हो या अपनी आँखों से देखा है ?

गामी खाँ : सरकार ! अपनी आँखों से देखा है । यही नहीं बल्कि वो पहाड़ी पर खबरें भी भेज रहे हैं ।

[मुंशीजी तैश में आ जाते हैं और गामी खाँ का गरेबान पकड़ लेते हैं ।]

मुंशीजी : (जोर से) यह क्या बक रहे हो ? पागल तो नहीं हो गये, पहलवान और भेदी ?

गामी खाँ : साँच को आँच क्या !

मुंशीजी : हम समझ गये । तुम पहलवान से बदला लेना चाहते हो, भूठी शिकायत करते हो, क्यों ?

गामी खाँ : सरकार ! अल्लाह गवाह है ।

लालाजी : (बाहर से) जनाब मुंशीजी साहब !

मुंशीजी : लालाजी आये हैं शायद !

गामी खाँ : सरकार ! मैं जाऊँ ?

मुंशीजी : नहीं, तुम नहीं जा सकते ।

गामी खाँ : जैसे आपकी मर्जी ।

मुंशीजी : अच्छा तुम अन्दर दीवानखाने के उस तरफ चले जाओ और जब हम आवाज़ दे आ जाना । समझे ?

गामी खाँ : बहुत बेहतर हज़ूर ।

[गामी खाँ जाता है ।]

मुंशीजी : (ड्योढ़ी के करीब जाकर) आ जाइये लालाजी साहब ! अन्दर तशरीफ़ ले आइये ।

[लालाजी और मीर साहब बातें करते दाखिल होते हैं ।]

लालाजी : २३ जून की लड़ाई में हम हार गये और प्लासी का बदला न ले सके, मगर अब हम जरूर जीत जायेंगे ।

मीर साहब : जी हाँ । बख्त खाँ ने पासा पलट दिया । अंग्रेज उससे डरते हैं । अंग्रेजों को दिन में तारे नज़र आने लगे हैं ।

लालाजी : बड़ा होशियार और अक्लमन्द सिपहसालार है !

मीर साहब : हज़ूर जहाँपनाह भी बहुत खुश हैं । हज़ूरवाला जानते हैं बख्त खाँ बहादुर है, दिलेर और हौसलेवाला है, वो अंग्रेज़ों को मुल्क से निकाल सकता है ।

मुंशीजी : मीर साहब ! यह तो सही है लेकिन शहज़ादे बख्त खाँ से जलते हैं । उसके काम में रोड़े अटकाते हैं, उसके खिलाफ़ सिपाहियों को भड़काते हैं ।

लालाजी : शहज़ादों की बात जाने दीजिये । निकम्मे हैं निकम्मे मिर्ज़ा मुग़ल को ही लीजिये, हर वक़्त उस क़ाबिल सिपहसालार की हज़ूर जहाँपनाह से शिकायत करता है ।

मीर साहब : एक म्यान में दो तलवार कैसे रह सकती हैं ! मिर्ज़ा मुग़ल की बजाय अगर बख्त खाँ ही सारी कमान अपने हाथ में ले ले तो अच्छा हो ।

लालाजी : मैं तो रसद का सब सामान बख्त खाँ के पास ही भेज रहा हूँ ।

मीर साहब : जभी तो मिर्ज़ा मुग़ल आपकी जान के दुश्मन हो गये हैं, कहते थे बख्त खाँ रसद का सामान खुद खा जाते हैं, हमारे सिपाहियों को कुछ नहीं देते ।

मुंशीजी : हमें बख्त खाँ का ही साथ देना चाहिए ।

मीर साहब : अब अपने साथियों को भी समझा लीजिये ना ।

मुंशीजी : कौनसे साथी ?

मीर साहब : वो जो हर वक़्त मिर्ज़ा मुग़ल के साथ रहते हैं, उन पर जान छिड़कते हैं ।

लालाजी : यूसुफ़ मियाँ ।

मुंशीजी : हैं ! मुहम्मद यूसुफ़ ! वो तो समझदार है, उसे तो

बरन खाँ का ही साथ देना चाहिए ।

मीर साहब : मुहम्मद यूसुफ किसी की नहीं सुनता । उसको किसी ने बहका दिया, वह कहता है बख्त खाँ हज़ूर जहाँपनाह की जगह गद्दी पर बैठना चाहता है ।

मुंशीजी : यह बिलकुल भूठ है, ऐसा नहीं हो सकता ! बादशाह सलामत इन बातों में नहीं आयेगे ।

लालाजी : जी हाँ ! यह सिर्फ़ ख्याली पुलाव है ! किसी के दिमाग की खराबी ।

मीर साहब : भई लालाजी ! जिस काम के लिए आये थे वो तो भूल ही गये !

लालाजी : वो तो बहुत जरूरी काम है, आप बताइये ना, मुंशीजी को !

मीर साहब : साहब ! हमको पता चला है, शहर में बहुत से लोगों ने अंग्रेज़ों को अपने मकानों में छिपा रक्खा है, और ये जासूसी कर रहे हैं ।

मुंशीजी : जी हाँ । सुना तो मैंने भी है ।

लालाजी : अंग्रेज़ों को बाग़ोटे की पहाड़ी पर खबरें भेज रहे हैं ।

मुंशीजी : मैं पहलवान को बुलवाता हूँ । इस बात का पता लगाये । (आवाज़ देकर) नत्थू, अरे ओ नत्थू...!

[नत्थू आता है ।]

नत्थू : जी सरकार !

मुंशीजी : जाओ, ज़रा पहलवान को बुलाना...हाँ ! और देखना, जल्दी आना ।

[नत्थू जाता है ।]

मीर साहब : जासूसों को पकड़कर बख्त खाँ के हवाले कर दीजिये तो अच्छा है ।

लालाजी : अब कोई लूट-मार नहीं कर सकता ! नाक, कान कटवा देते है गुण्डों के !

मुंशीजी : शहर कोतवाल के पास भी हुक्म भेज दिया है कि शहर में लूट-मार हुई तो कोतवाल को फाँसी दे दी जावेगी ।

लालाजी : ढिंढोरा पिट गया है कि सारे दुकानदार अपने पास हथियार रखें, जिसके पास हथियार न हो वो हथियार मुफ्त ले सकता है ।

मीर साहब : अरे हाँ ! याद आया मुझे तो किले पहुँचना है, सब याद कर रहे होंगे । क्यों लालाजी चलियेगा !

लालाजी : जी हाँ ! चलिये ।

[लालाजी और मीर साहब बाहर जाते हैं, पहलवान आवाज़ देता है ।]

मुंशीजी : आ जाओ, पहलवान अन्दर आ जाओ ! अच्छा हुआ तुम आ गये, मैंने तो नत्थू को भेजा है तुम्हें बुलाने के लिए ।

पहलवान : (चारों तरफ़ देखकर) हज़ूर !

मुंशीजी : चारों तरफ़ क्या देख रहे हो, कोई नहीं हैं !

पहलवान : अंग्रेज़ों को कुमक पर कुमक मिल रही है , रियासतों के लश्कर करनाल की सड़क से बाओटे की पहाड़ी पर पहुँच गये हैं ।

मुंशीजी : तुम्हें कैसे मालूम ?

पहलवान : हमारे साथी बराबर ख़बरें ला रहे हैं ।

मुंशीजी : हैं ।

पहलवान : हमारे सिपाहियों में भी आपस में फूट पड़ गई है, कोई किसी का हुक्म नहीं मानता, जो जी में आता है करते हैं ।

मुंशीजी : देसी गिपाहियों के बारे में ऐसा कहना ठीक नहीं, ये वो बहादुर हैं जिन्होंने देश आजाद कराया, हमारा झण्डा गाड़ दिया !

पहलवान : हज़ूर ! आप ठीक कह रहे हैं, लेकिन इन नींद के मातों ने दिल्ली को फिर खो दिया तो क्या होगा ?

मुंशीजी : हमारे सिपाही बहुत होशियारी से लड़ रहे हैं, उन्होंने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये ।

पहलवान : सब्जी मण्डी की लड़ाई में भी हम हार गये । हमारे एक हज़ार साथी मारे गये । ज्योतिषियों की बात ग़लत हो गयी, प्लासी के सौ बरस बाद भी लड़ाई हो रही है !

मुंशीजी : मौत से न डरो पहलवान ! लड़ाई में कभी किसी का पलड़ा भारी होता है कभी किसी का, आखिर में जीत हमारी होगी ।

पहलवान : शहर में लूट-मार बन्द है लेकिन...

मुंशीजी : लेकिन क्या ?

पहलवान : सिपाही जिस मकान में चाहते हैं, घुस जाते हैं ।

मुंशीजी : वह क्यों ?

पहलवान : फ़िरंगियों को ढूँढने का बहाना करते हैं !

मुंशीजी : इसमें तुम्हें क्या एतराज़ है ? फ़िरंगियों को घर में छिपाना जुर्म है, उनसे साज़-बाज़ रखना मुल्क से ग़दारी है ।

पहलवान : खामरुवाह किसी को तंग करना भी तो ठी नहीं सरकार !

मुंशीजी : हमने कह दिया जो अपने घर में फ़िरंगियों व छिपायेगा या उनसे मेल-मिलाप रखेगा, हम उसको सख्त सज़ा दिलवायेंगे ! जाओ मालूम करो कि कौन लोग ऐसे कर रहे हैं ।

पहलवान : मैं इस बात का पता लगाऊँगा ।

मुंशीजी : हमने सुना है, तुम्हें इन बातों का पहले ही पता है ।

पहलवान : यह आपसे किसने कहा सरकार ?

मुंशीजी : कोई भी कहे, काला चोर सही ! तुम्हें इससे क्या मतलब ?

पहलवान : आज तो आप बहुत नाराज़ मालूम होते हैं ।

[नत्थू आता है]

मुंशीजी : क्या ये सच है कि तुम्हारे घर में भी फ़िरंगी छि हैं ?

पहलवान : मेरे घर में...?

मुंशीजी : हाँ, हाँ, तुम्हारे घर में । मैं जो कुछ पूछ रहा हूँ जवाब दो !!

[नत्थू हाथ के इशारे से पहलवान को जवाब देने से रोकता है ।]

पहलवान : मैं इस वक़्त कुछ नहीं कह सकता ।

मुंशीजी : क्यों ?

पहलवान : मैं मजबूर हूँ ।

नत्थू : बात यह है सरकार...

मुंशीजी : खबरदार ! जो तुमने बीच में दखल दिया, बताते क्यों नहीं पहलवान ?

पहलवान : फिर कभी बता दूँगा ।

मुंशीजी : नहीं, इस बात का जवाब अभी देना होगा ।
(पहलवान खामोश रहता है ।) तुम कैसे जवाब दे सकते हो, बात ठीक निकली ! अभी तुम सिपाहियों की बुराई कर रहे थे और मुझे भड़का रहे थे ।

पहलवान : देसी सिपाहियों की बुराई...?

मुंशीजी : और फिरंगी की तारीफ...

पहलवान : मैंने तो फिरंगी की तारीफ नहीं की...मैंने तो आपको.....

मुंशीजी : खैर, खैर, जाने दो इन बातों को, तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते, हमसे गलती हुई जो तुम पर एतबार किया.....जाओ मेरी आँखों से दूर हो जाओ.....

पहलवान : यह क्या कह रहे हैं आप, कुछ सोचिये तो सही !

मुंशीजी : बस, बस रहने दो, अब हम कुछ नहीं सुनना चाहते. तुम जा सकते हो ।

पहलवान : मैं आपकी इज्जत करता हूँ आप

मुंशीजी : इज्जत, इज्जत ! दो कौड़ी की इज्जत कर दी, हमारी इज्जत-आबरू मिट्टी में मिला दी । (पहलवान जाता है, मुंशीजी गुस्से में इधर-उधर टहलते हैं । नत्थू पहलवान के पीछे-पीछे बाहर जाने लगता है) खबरदार नत्थू, जो तुमने पहलवान से बात की, जाने दो उसको !

नत्थू : सरकार ! पहलवान बिलकुल बेकसूर है ।

मुंशीजी : मैं कहता हूँ, निकल जाओ यहाँ से बेकसूर क

बच्चा ! खबरदार जो एक लफ़्ज़ भी ज़बान से निकाला, जाओ…… (नत्थू जाता है, मुंशीजी अफ़सोस करते माथा पकड़े मसनद की तरफ़ जाते हैं, गामी खाँ दीवानख़ाने की तरफ़ से बाहर आता है, और दबे-पाँव ड्योढ़ी की तरफ़ जाता है ।) ठहरो गामी खाँ—! (गामी खाँ ठहर जाता है ।) तुम सच कहते थे, गामी खाँ । हमारी आँखों के आगे पर्दा था, आज तुमने हमारी आँखें खोल दीं, हम दोस्त और दुश्मन में तमीज़ न कर सके । पहलवान वाक़ई भेदी है, तुमने हमें वक़्त पर जितला दिया, हम तुम्हारे ममनून है । तुम एक नेक इंसान हो ।

गामी खाँ : आपकी ज़र्रा नवाज़ी है, बन्दा किस लायक़ है, खाक़सार तो हज़ूर का खादिम है । आपके इशारे का मुन्तज़िर है ।

मुंशीजी : पहलवान पर कड़ी नज़र रखो, हर वक़्त उसकी ताक में रहो, शहर की ख़बरें देने से रोको ।

गामी खाँ : जो हुक्म सरकार ।

मुंशीजी : शाबाश ! तुम वाक़ई बहादुर हो ! ख़याल रखना, कोई जासूसी न करने पाये ।

गामी खाँ : वो कुन्दी करूँगा कि होश ठिकाने आ जायेंगे ।

[एक शहरी बाहर से मुंशीजी को आवाज़ देता है ।]

मुंशीजी : यह तो चुन्नीलाल की आवाज़ मालूम होती है !

[गामी खाँ बाहर की तरफ़ भाँकता है ।]

गामी खाँ : शहरवाले आये हैं ।

मुंशीजी : बुला लाओ अन्दर ।

गामी खाँ : हज़ूर ! अगर इजाज़त हो तो कुछ अज़ करूँ ।

मुंशीजी : हाँ ! हाँ !

गामी खाँ : इन शहर वालों को हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठना चाहिए, ये सब हट्टे-कट्टे जवान हैं, इन सबको लड़ाई में शामिल हो जाना चाहिए ।

मुंशीजी : तुम ठीक कहते हो—गामी खाँ ।

गामी खाँ : और आप हमारे रहनुमा ।

मुंशीजी : हमारे सिपहसालार बख्त खाँ हैं !

गामी खाँ : बख्त खाँ की क्या बात है । वो तो बड़े जरनैल हैं, हज़ूर बादशाह सलामत ने तो आधा बादशाह बना दिया ।

मुंशीजी : बख्त खाँ माहिरे जंग हैं, और सुलभे हुए सिपाही...!

गामीखाँ : हमें उन्ही का हुक्म मानना चाहिये, मैं अपने साथियों समेत उनकी खिदमत में हाज़िर हूँगा..... अच्छा इजाजत है ।

मुंशीजी : मैं भी थोड़ी देर में किले जाऊँगा ! वहाँ मिलना !
(गामी खाँ जाता है, माधो बन्दूक की नाली साफ़ करता अन्दर आता है ।) माधो बेटा !

माधो : जी पिताजी ।

मुंशीजी : शाबाश ! आज हम तुमसे बहुत खुश हैं, तुम्हारे हाथ में बन्दूक देखकर हमारा खून बढ़ गया ।

माधो : पिताजी ! मैं भी बख्त खाँ का सिपाही बनना चाहता हूँ ।

मुंशीजी : सिर्फ़ सिपाहियों से लड़ाई नहीं जीती जा सकती, अब सबको मैदाने जंग में कूदना होगा । जाओ और गामी खाँ के साथियों समेत फ़ौज में शामिल हो जाओ ।

माधो : गामी खाँ के साथ ।

मुंशीजी : हाँ, हाँ, हम भी किले जा रहे हैं, गामी खाँ बख्त खाँ के पास गये हैं । बाहर शहरवाले खड़े हैं, उन्हें यहाँ बैठाना, हम तैयार होकर आते हैं । (माधो चलता है, मुंशीजी दीवानखाने में जाते हैं । शहरी अन्दर आते हैं ।)

एक शहरी : यह शख्स मानने वाला नहीं ।

दूसरा शहरी : चोर चोरी से जाता है, हेरा-फेरी से नहीं ।

एक शहरी : मुंशीजी से इसकी शिकायत करनी पड़ेगी ।

दूसरा शहरी : मगर मुंशीजी के मकान में इसे घुसने की हिम्मत हुई कैसे ?

एक शहरी : नीयत का खोटा है ।

दूसरा शहरी : नीयत खरी कब थी ?

तीसरा शहरी : पक्का जासूस है ।

दूसरा शहरी : मुखबिर, है मुखबिर ।

एक शहरी : पहाड़ी पर अंग्रेजों से मेल-मिलाप कर लिया है, शहर की तमाम खबरें पहुँचा रहा है ।

दूसरा शहरी : तुम से घबराता है, देखते ही कैसा भीगी बिल्ली बन गया ।

तीसरा शहरी : पूछना तो सही मुंशीजी से ये यहाँ क्यों आया ? पूछकर क्या करूँगा । मुंशीजी इसकी नस-नस से वाकिफ हैं ।

एक शहरी : एक दफ़ा तो क़ाबू में आ गया लेकिन बच गया ।

दूसरा शहरी : अच्छा होता, अगर तोप से उड़ा दिया जाता ।

एक शहरी : फिर सही बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी ।

तीसरा शहरी : गामी खाँ का आज्ञाद फिरना खतरे से खाली नहीं ।

दूसरा शहरी : गुण्डा है, गुण्डा !

एक शहरी : गुण्डा नहीं, शैतान !

[मुंशीजी तलवार हाथ में लिये बाहर आते हैं ।]

एक शहरी : हैं ! मुंशीजी साहब ! आपके हाथ में तलवार ?

मुंशीजी : उठानी हो पड़ेगी आपको भी...

दूसरा शहरी : हमारे सिपाही बहुत जीदारी से लड़ रहे हैं ।

मुंशीजी : सिपाही अकेले कुछ नहीं कर सकते, जब तक हम साथ न दें ।

तीसरा शहरी : आप ठीक कहते हैं ।

दूसरा शहरी : तो फिर क्या देखते हो । चलो हम भी फ़ौज में भरती हो जाये ।

तीसरा शहरी : हाँ भई, सब दिल्ली वालों को लड़ना ही होगा ।

मुंशीजी : आप लोग अन्दर कोठरी में चले जाइये और जो हथियार पसन्द हों ले लीजिये..... मैं क़िले जा रहा हूँ, आप सब वहाँ आ जाइये ।

[मुंशीजी जाते हैं ।]

एक शहरी : आओ भई चुन्नीलाल हथियार चुन लें । (एक-दो शहरी अन्दर कोठरी में जाते हैं । मुहम्मद यूसुफ़ हाथ में तलवार लिये अन्दर आते हैं ।)

मुहम्मद यूसुफ़ : बाँके लाला !

एक शहरी : कौन यूसुफ़ मियाँ ।

मुहम्मद यूसुफ़ : गुलशन तो नहीं आई इधर ?

एक शहरी : नहीं तो ।

[चन्द शहरी हथियार लिये कोठी से बाहर आते हैं ।]

मुहम्मद यूसुफ़ : गुलशन लड़ाई की आग में कूद पड़ी है । हाथ में तलवार है, कन्धे पर बन्दूक है, घोड़े पर सवार है ।

तीसरा शहरी : हैं क्या कहा ? गुलशन घोड़े पर सवार है ? फ़िरगियों से लड़ रही है ?

मुहम्मद यूसुफ़ : वो मरदाना वार लड़ रही है । हजारों दिल्लीवाले उसके साथ हैं !

चौथा शहरी : फिर तो बेड़ा पार है ।

मुहम्मद यूसुफ़ : गुलशन की जीदारी से हमारे साथियों के हौसले और भी बुलन्द हो गये हैं । वो बिजली की तरह दुश्मन पर टूट पड़ती है ।

चौथा शहरी : या अल्ला ! तेरी शान ।

मुहम्मद यूसुफ़ : आओ चलें हम भी उनका साथ दें ।

एक शहरी : हम सब आपके साथ हैं ।

दूसरा शहरी : आप हमारे रहनुमा हैं ।

मुहम्मद यूसुफ़ : मिर्जा मुग़ल हमारे रहनुमा हैं ।

एक शहरी : हम सब मिर्जा मुग़ल के सिपाही हैं । उनके भण्डे तले जमा हो जाओ । हम उन्हीं का साथ देंगे । किसी और की नहीं सुनेंगे ।

दूसरा शहरी : वो एक बहादुर जरनैल हैं, अंग्रेज़ उनसे काँपते हैं ।

तीसरा शहरी : वो ही मुल्क को आज़ाद करा सकते हैं और अंग्रेज़ों का खात्मा कर सकते हैं ।

चौथा शहरी : कम्पनी राज मुर्दाबाद ।

तीसरा शहरी : हिन्दुस्तान जिन्दाबाद ।

मुहम्मद यूसुफ़ : कसम खाओ कि अब हम पीछे नहीं हटेंगे ।

दुश्मन का डटकर मुकाबला करेंगे ।

[सब शहरी तलवारें सूत लेते हैं ।]

एक शहरी : (बहुत जोश में) धावा बोल दो । अंग्रेजों को मार भगाओ ।

दूसरा शहरी : दुश्मन के छक्के छुड़ा दो ।

तीसरा शहरी : हम अंग्रेजों से प्लासी का बदला लेकर छोड़ेंगे ।

चौथा शहरी : हम इन फिरंगियों का नामोनिशान मिटा देंगे ।

[गली में शोर बुलन्द होता है, अल्ला हो अकबर... हर-हर महादेव, के नारे सुनाई देते हैं । गुलशन हाथ में तलवार लिये हुए चन्द शहरियों के साथ दाखिल होती है ।]

गुलशन : (आगे बढ़कर और गरजकर) आओ चलो, खुदा ने तुम्हें बहिश्त में बुलाया है ।

[अल्ला हो अकबर... और हर-हर महादेव के नारे फिर बुलन्द होते हैं । सब गुलशन और मुहम्मद यूसुफ के पाछे बाहर जाते हैं । स्टेज पर अंधेरा-सा हो जाता है । माधो सब तरफ देखता अन्दर आता है ।]

माधो : (हाथ का इशारा करके) अन्दर आ जाओ गामी खाँ ! यहाँ कोई नहीं है ।

[गामी खाँ आता है]

माधो : मान गये यार तुमको भी ।

गामी खाँ : हाथ ला उस्ताद क्यूँ कैसी कही ?

माधो : जब फिरंगी मर रहे थे तो देसी सिपाहियों के साथ मिल गये और दिल्ली को खूब लूटा । अब फिरंगियों का पलड़ा भारी है तो उनके यारगार बन गये !

गामी खाँ : मुर्दा दोजख में जाये या जन्नत में, हमें क्या मत-
लब ? हमें तो अपने हल्वे-माण्डे से काम ।

माधो : कप्तान डगलस अगर ज़िन्दा होता तो तुम्हारी खैर
न थी ।

गामी खाँ : वो क्यों ?

माधो : कप्तान डगलस के दोस्त होकर भी उसके काम न
आये ।

गामी खाँ : मैं उसके काम क्या आता, वो तो खुदी काम आ-
गया ।

माधो : बख्त खाँ से डरते रहना, तुम्हारी गुद्दी नाप लेगा !

गामी खाँ : बख्त खाँ नहीं कमबख्त खाँ है ।

माधो : वाह प्यारे ! वाह ! क्या छाँटकर नाम रक्खा,
है, कमबख्त खाँ । तो फिर मिर्जा मुग़ल से मिल जाओ !

गामी खाँ : मियाँ अपने तो दोनों ही दोस्त हैं ।

माधो : कभी इधर, कभी उधर, खूब ।

गामी खाँ : मिर्जा मुग़ल को बख्त खाँ एक आँख नहीं भाता,
मेरा ख्याल है दोनों की फ़ौजें आपस में कट-कटकर
मर जायेंगी, इसलिए इस वक़्त फ़िरंगी को भेद बताना
सबसे अच्छी बात है ।

माधो : पिताजी कहते हैं बख्त खाँ के सिपाही बन जाओ,
वो बहादुर जनरैल हैं ।

गामी खाँ : घसखुदा है मियाँ घसखुदा !

माधो : ये क्या फरमाया आपने ?

गामी खाँ : सर पर अँगोछा, गले में क्रिच, पीछे हाल खुला,
ये सिपहसालार का लिबास है या घसखुदे का ।

माधो : मियाँ तुम ठीक कहते हो । मरने दो इन सबको, हम क्यों अपनी जान गँवायें ?

गामी खाँ : जिसकी आई है टल नहीं सकती ?

माधो : लम्बी तान के सो जाओ प्यारे ।

गामी खाँ : यह सोने का वक्त नहीं है सरकार ! सोया सो खोया । इस वक्त तो चौकन्ने रहना चाहिए । थोड़े दिन में देखना अपने यहाँ दौलत बरसेगी ।

माधो : हमारे घर भी धन बरसेगा ।

गामी खाँ : अल्लाह छप्पर फाड़कर देता है, आस लगाए बैठे हैं ।

माधो : ये सब शहरी हमारे हथियार लेकर कहाँ गए हैं ?

गामी खाँ : मुहम्मद यूसुफ़ और गुलशन के साथ मिर्जा मुग़ल की फौज में भरती होने ।

माधो : पिताजी को पता चल गया तो यूसुफ़ मियाँ की खैर नहीं !

गामी खाँ : पता न चला तो हम किस काम आयेंगे । खोपड़ी से खोपड़ी और ईट से ईट बजा दूँगा ।

माधो : गुलशन को देखो । हाथ में तलवार लिये कैसी खौफ़नाक मालूम होती थी ।

गामी खाँ : चींटी के पर निकल आये हैं ।

माधो : आओ ! चलो ! मरने का तमाशा देखें ।

[दोनों बाहर जाते हैं ।]

दूसरा सीन

[स्टेज पर उजाला हो जाता है। बहूजी ज़नानख़ाने से बाहर आती हैं और दीवानख़ाने की तरफ़ जाती हैं। छोटी-बड़ी बन्नो ज़नानख़ाने से बाहर आती हैं।]

छोटी बन्नो : अम्मा आज बहुत परेशान हैं।

बड़ी बन्नो : पिताजी का कुछ पता नहीं चला, कहाँ हैं।

छोटी बन्नो : न जाने अब क्या होगा ? (बहूजी दीवानख़ाने की तरफ़ आकर पीढ़े पर बैठ जाती हैं।) अम्मा घबराओ मत, सब ठीक हो जाएगा !

बड़ी बन्नो : अम्मा, यहाँ बैठ जाओ, मसनद पर।

बहूजी : अरी बेटी, कहाँ बैठूँ, कहाँ न बैठूँ, आज मेरा दिल बैठ जा रहा है।

छोटी बन्नो : अम्मा घबराने से क्या फ़ायदा, आख़िर में जीत हमारी होगी, हमारी फ़ौज फ़िरंगियों को ज़रूर मार भगायेगी।

बड़ी बन्नो : शायद ईरान का बादशाह आ जाये।

छोटी बन्नो : और रूस की फ़ौजें भी।

बहूजी : यह सब मनगढ़न्त है, दिल का बहलावा है। कोई आया न आयेगा, ज्योतिषियों की बात भी ग़लत हो गई। दिल्ली के हज़ारों आदमी मारे गये।

छोटी बन्नो : भगवान जाने कब आयेगे, आज कितने ही दिन हो गये, घर से गये।

[नत्थू घबराया हुआ आता है।]

नत्थू : ग़ज़ब हो गया ! सितम हो गया ! फ़िरंगी जीत गये। हमारी फ़ौजें हार गईं।

बहूजी : हैं ! क्या कह रहे हो नत्थू ? कौन हार गया, कौन जीत गया ?

नत्थू : फ़िरंगी कश्मीरी दरवाज़े से शहर में दाख़िल हो गये । हम हार गये ।

बहूजी : हाय राम, अब क्या होगा ?

[छोटी-बड़ी बन्नो छत पर चली जाती हैं ।]

नत्थू : अंग्रेज़ी लश्कर शहर में घुस आया, अब यहाँ ठहरना ठीक नहीं ।

बहूजी : मैं अपना घर छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी ।

नत्थू : यह क्या कह रही हैं आप ? घर छोड़ना ही पड़ेगा, दिल्लीवाले सब शहर छोड़कर जा रहे हैं । लालाजी और उनके सब बच्चे बहलियों में बैठकर गाँव चले गये ।

बहूजी : नहीं, नहीं, नहीं, मैं नहीं जाऊँगी !

छोटी बन्नो : (ऊपर की मंज़िल से) अम्मा ! अम्मा ! वो देखो, वो देखो ! सब तरफ़ धुएँ के बादल छाये हैं, मकान जल रहे हैं । शोले उठ रहे हैं ।

बहूजी : मैं उन्हें (मुंशीजी) छोड़कर नहीं जाऊँगी ।

नत्थू : इज़्ज़त-आबरू का सवाल है, बहूजी आप मेरा कहना मान जायें (छत की तरफ़ देखकर) ऐ बीबी ! ऐ बन्नो, आ जाओ, नीचे उतर आओ !

[कन्हैया अन्दर आता है ।]

कन्हैया : अम्मा ! अम्मा ! भाग जाओ ! छुप जाओ, लोग पिताजी की तलाश में फिर रहे हैं । बहुत गुस्से में हैं, उन्हें मारना चाहते हैं ।

बहूजी : हे मेरे भगवान् ! ये बैठे-बैठाये क्या मुसीबत आई !

...कहाँ हैं ये ?

कन्हैया : तुम पिताजी का फ़िक्र मत करो, सबको लेकर भाग जाओ, बहलियाँ बाहर खड़ी हैं !

बहूजी : ऐ मेरी दुलहिने कहाँ है, बेचारी ने एक दिन भी सुख नहीं देखा, जब से आई है, मारपीट, धामक-धैया हो रही है ।

[बहूजी जनानखाने में जाती हैं ।]

कन्हैया : ऐ बन्नो, नीचे उतर आओ, हम जा रहे हैं, फ़ौरन आ जाओ ! (छोटी बन्नो, बड़ी बन्नो नीचे आती हैं ।)

जल्दी आ जाओ, जल्दी !

छोटी बन्नो : (नीचे आकर) हम कहाँ जा रहे हैं ?

कन्हैया : दिल्ली के बाहर एक गाँव में...जाओ जाओ... जाओ, चादरें ओढ़ लो, और आ जाओ ।

[बहूजी दुलहिन को लेकर आती हैं ।]

बहूजी : लो बेटा, ये लो, चादर ओढ़ लो...चल बेटा कन्हैया !

चल हमारे साथ ! अरे नत्थू, ज़रा घर का ख़याल रखियो, और माधो बेटे का भी ।

कन्हैया : अम्मा ! चलो । चलो ! देर हो रही है । नत्थू, मैं इन सब को दिल्ली दरवाज़े के बाहर तक पहुँचाकर अभी आया ।

नत्थू : नहीं, नहीं, ऐसा न करना, तुम भी गाँव चले जाओ...

[सब बाहर चले जाते हैं, नत्थू जनानखाने के दरवाज़े की कुण्डी लगाता है, चन्द शहरी गुल मचाते अन्दर दाख़िल होते हैं ।]

एक शहरी : पकड़ लो ।

दूसरा शहरी : लूट लो ।

तीसरा शहरी : आग लगा दो ।

चौथा शहरी : मार दो !!

दूसरा शहरी : कहाँ है ये मुंशी ? (नत्थू से) क्यों रे, कहाँ है तेरा मालिक ?

नत्थू : जबान सँभालकर बात करो, बेअदबी से न बोलो !

तीसरा शहरी : अदब-आदाब सिखाता है, क्यों ? (नत्थू को धक्का देकर) बता कहाँ है वो मुंशी का बच्चा ? (नत्थू खामोश रहता है !) अच्छा, नहीं बतायेगा, मुश्के कस लो इसकी और ले चलो फाँसी के तख्ते पर ।

एक शहरी : दीवानखाने में न छिपा हो ।

दूसरा शहरी : (गुस्से से) हम इस मुंशी से पहलवान का बदला लेकर छोड़ेंगे । पहलवान को फाँसी पर लटकाने वाला ये मुंशी ही है । इसी के इशारे पर गामी खाँ ने पहलवान का घर जला डाला, इसके बच्चों को मार डाला ।

तीसरा शहरी : पहलवान को जासूस कहने वाला यही शैतान है ।

एक शहरी : पहलवान ने वतन की खातिर जान की बाजी लगाई । मुश्किल से मुश्किल काम को पूरा किया । अंग्रेजों के खिलाफ़ हर मोर्चे पर लड़ा लेकिन ..

तीसरा शहरी : मुंशी गद्दार है, मुल्क और क़ौम का दुश्मन, इसे मार डालो पकड़ लो, जाने न पाये ।

[एक शहरी ड्योढ़ी की तरफ़ और बाकी दीवानखाने और ज़नानखाने में जाते हैं ।]

दूसरा शहरी : हैं ! मकान खाली है, सब भाग गये ।

चौथा शहरी : सारा शहर छान डालो ।

तीसरा शहरी : देखो मुंशीजी के जितने साथी हैं, उनमें मे एक भी बचकर न जाने पाये ।

[ड्योढ़ी पर खड़ा शहरी, बाहर गली में भाँकता है और फिर तेजी से अन्दर आता है ।]

एक शहरी : कोई इधर आ रहा है ।

दूसरा शहरी : कौन है वो ?

तीसरा शहरी : मुंशी है क्या ?

एक शहरी : मुंशी नहीं । मौलवी । लम्बी दाढ़ी वाला मौलवी ।

दूसरा शहरी : ये मौलवी भी मुंशी के साथ था ।

तीसरा शहरी : दीवानखाने में चले जाओ, और नत्थू को भी अन्दर बन्द कर दो ।

[शहरी नत्थू को घसीटते हुए दीवानखाने की कोठरी में ले जाते हैं, मुहम्मद यूसुफ और मौलवी साहब आते हैं ।]

मुहम्मद यूसुफ : (दबे-पाँव अन्दर आकर इधर-उधर देखकर)

यहाँ तो कोई नहीं है । मालूम होता है सब भाग गये !

(जनानखाने में भाँककर) सब तरफ सुनसान है ।

मौलवी साहब : अच्छा किया. घर छोड़ दिया, औरतों और बच्चों का यहाँ ठहरना ठीक न था ।

मुहम्मद यूसुफ : शहर में खून की नदियाँ बह रही हैं, तमाम रास्ते लाशों से पटे पड़े हैं, और एक क्रयामत बरपा है ।

मौलवी साहब : यह सब आपस की नाइत्तफाकी का नतीजा है, अंग्रेज ठीक कहता है, फूट हिन्दुस्तान का मेवा है ।

मुहम्मद यूसुफ : हमने अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार ली,

दिल्ली बरबाद हो गयी, किला खाली हो गया, हज़ूर ज़िल्लेसुभानी अपने खानदान के शहजादों और शहजादियों समेत हुमायूँ के मक़बरे रवाना हो गये । मुग़लों का नाम मिट गया, अंग्रेज़ों ने अपना झंडा गाड़ दिया ।

[घर के अन्दर छिपे शहरी शोर मचाते बाहर निकल आते हैं ।]

एक शहरी : पकड़ लो, यही है वो मौलवी । जाने न पाये !

मुहम्मद यूसुफ़ : खबरदार ! जो किसी ने मौलवी साहब पर हाथ उठाया ।

तीसरा शहरी : तू कौन होता है मौलवी साहब का ?

दूसरा शहरी : इसे भी गिरफ़्तार कर लो और मुश्कें कस लो !

चौथा शहरी : और ले चलो फाँसी के तख्ते पर !

दूसरा शहरी : बताओ, मीर और मुंशी कहाँ हैं ?

एक शहरी : कहाँ छिपे हैं ।

मौलवी साहब : तुम पागल हो गये हो !

दूसरा शहरी : गाली देता है, अच्छा ठहर ।

चौथा शहरी : देखते क्या हो, बाँध लो इसको भी और ले चलो चाँदनी चौक ! (दो शहरी मौलवी साहब को बाँधने के लिये आगे आते हैं, मुहम्मद यूसुफ़ उनको परे धकेलता है ।) बोलो यूसुफ़ तुम क्या चाहते हो ? जान की ख़ैर या फाँसी का तख्ता ।

मुहम्मद यूसुफ़ : तुम फ़िरंगियों के कुत्ते हो ! मुल्क और कौम के दुश्मन ।

चौथा शहरी : इसके मुँह में कपड़ा ठूस दो । जबान दराज़ी

करता है ।

एक शहरी : बस, अब देर न करो, ले चलो इन्हें, इनका इलाज
फाँसी के सिवाय और कुछ नहीं !

मौलवी साहब : यूसुफ बेटा ! घबराना नहीं, खुदा तुम्हें
जजाय खैर देगा, हम शहीदों की मौत मरेंगे ।

[शहरी, मुहम्मद यूसुफ और मौलवी साहब को गिरफ्तार
करके ले जाते हैं । नत्थू दीवानखाने से बाहर आता है ।
हाथों में बँधी रस्सी खोलना चाहता है, मीर साहब बदहवासी
के आलम में दाखिल होते हैं, कन्हैया साथ है, बिलकुल सहमा
हुआ है, बार-बार मीर साहब से चिपट जाता है ।]

मीर साहब : बेटा कन्हैया ! तुम ठहरो मैं जाता हूँ । तुम्हारा
मेरे पास रहना ठीक नहीं । (नत्थू को देखकर) हैं ! ये
क्या ! ये तो नत्थू है । (नत्थू के पास जाकर) तुम्हे
किसने बाँधा ?

[मीर साहब नत्थू के हाथों की रस्सियाँ खोलते हैं ।]

नत्थू : बेटा कन्हैया ! तुम माने नहीं ! भाग आये ! मीर
साहब आप यहाँ से फौरन चले जाइये और कन्हैया को
ले जाइये ! गामी खाँ सबको फाँसी दिलवा रहा है ।
अभी-अभी सब मौलवी साहब और यूसुफ मियाँ को भी
पकड़कर ले गये ।

मीर साहब : क्या कहा ! मौलवी साहब और यूसुफ मियाँ
पकड़े गये ।

नत्थू : ये जासूस और मुखबिर किसी को नहीं छोड़ेंगे, ये
सबको चुन-चुनकर मरवा डालेंगे ।

कन्हैया : (रो-रोकर) नत्थू बाबा ! पिताजी कहाँ हैं ?

नत्थू : मीर साहब ! आप भाग जाइये, नहीं तो ये आपको मार डालेंगे ।

मीर साहब : अब मैं जिन्दा रहकर क्या करूँगा, जब सब साथी फाँसी पा गये ।

नत्थू : परमात्मा के लिये ऐसा ना कहिये । आप छुप जाइये, ये आपकी तलाश में हैं आपको जिन्दा न छोड़ेंगे ।

मीर साहब : तुम क्यों डरते हो नत्थू ! मैं मरने से नहीं डरता ! मैं मरना चाहता हूँ लेकिन जानते हो किसके हाथों से ?

नत्थू : किसके हाथों से मरकार ?

मीर साहब : माधो के ! अपने बेटे माधो के हाथों से ! वो जिसे इन हाथों ने पाला और बड़ा किया, गोदियों में खिलाया, आज मेरे खून का प्यामा है, मेरी जान का लेवा है ।

कन्हैया : माधो भैया आपको मारना चाहते हैं मीर साहब ! नहीं, नहीं, नहीं मैं उन्हें ऐसा नहीं करने दूँगा ।

मीर साहब : गली-गली कूचे-कूचे में मुझे ढूँढ़ रहा है, वो मेरी तलाश में है, मैं उसे परेशान नहीं करूँगा, मैं खुद ही उसके मकान पर आ गया, वो मुझे शौक से मार सकता है ।

नत्थू : नहीं हज़ूर ! ऐसा ना कहिये, माधो आपको नहीं मार सकता, वो आप पर कैसे हाथ उठा सकता है ?

[बाहर गली में शोर होता है, माधो दाखिल होता है, हाथ में तलवार है, कन्हैया अन्दर भाग जाता है ।]

माधो : (खौफ़नाक हँसी हँसते हुए) हा, हा, हा ! जी हाँ !!

मीर साहब किवला को कौन मार सकता है ? इन पर कौन हाथ उठा सकता है ?

नत्थू : कौन ! माधो बेटा ? तुम आ गये ... ?

माधो : ओ बूढे ! तू मत बोल ! खबरदार जो बीच में दखल दिया ।

[नत्थू, माधो के करीब जाता है, माधो नत्थू को धक्का दे देता है ।]

मीर साहब : वाह ! क्या बात है । माधो । वाह ! वाह ! वाह !

माधो : दाद दे रहे है हजूर . ?

नत्थू : माधो बेटा तुमने शराब पी रखी है, तुम अन्धे हो गये हो, तुम्हें कुछ नहीं दिखाई देता । देखो, मैं...मैं नत्थू, तुम्हारा...

[नत्थू उठने की कोशिश करता है मगर माधो फिर ढकेल देता है ।]

माधो : आइये बन्दानवाज तशरीफ़ ले चलिये, फाँसी का तरुता आपका मुतजिर है ।

नत्थू : बेटा माधो ! मीर साहब को भूल गये क्या ?

माधो : हम क्या जानें ये कौन है ?

[गामी खाँ अन्दर आता है ।]

गामी खाँ : हम तो सिर्फ़ नावें को पहिचानते हैं, खोलो अण्टी !

नत्थू : भाई गामी खाँ ! मैं हाथ जोड़ता हूँ, मीर साहब को छोड़ दो ।

मीर साहब : न नत्थू ! घबराने की कोई बात नहीं, इनके जी में जो आये कर लेने दो ।

गामी खाँ : अच्छा नत्थू ! तुम्हारी सिकारिश मजूर, बोलो मीर साहब से क्या दिलवाते हो ?

नत्थू : शर्म नहीं आती रिश्वत माँगते ? बुरा बोल बोलते ।

गामी खाँ : अच्छा भई नहीं मानते तो न सही, फिर तो हम मजबूर हैं ।

[नत्थू उठकर गामी खाँ के करीब जाता है, उसके पैरों से लिपट जाता है, माधो उसे परे धकेलता है । नत्थू गामी खाँ की टाँगें मजबूती से पकड़ लेता है, गामी खाँ उसके बाजू में खंजर घोंप बेता है, नत्थू ज़रमी हो जाता है । गामी खाँ और माधो जोर-जोर से हँसते हुए । मीर साहब को धकेलते हुए बाहर ले जाते हैं ।]

[स्टेज पर अँधेरा हो जाता है । नत्थू कराहता रहता है । मुंशीजी लड़खड़ाते दाखिल होते हैं । पैर में जूती नहीं, कुरता फटा है, मैला पाजामा है, खून के धब्बे कपड़ों पर लगे हैं, बाल बिखरे हैं, हाथ में तलवार है ।]

मुंशीजी : (ड्योढ़ी से) नत्थू ।

नत्थू : आह ! आह ! आह !!! हाय ! हाय !

[मुंशीजी नत्थू के करीब आते हैं ।]

मुंशीजी : हैं ! ये क्या ? तुम्हें किसने ज़रमी किया ?

नत्थू : हाय ! हाय ! ... मुंशीजी सा ... हब ... !

मुंशीजी : (नत्थू के पास बैठकर) नत्थू, बोल—बोलो—क्या कहना चाहते हो—?

[कन्हैया जनानखाने से दौड़कर बाहर आता है ।]

कन्हैया : (मुंशीजी से चिपटकर) पिताजी—! पिताजी—आप आ गये—ये क्या ? आप तो खून में नहा रहे हैं ।

(रोकर) पिताजी.....पिताजी ! माधो भैया, मीर साहब को पकड़कर ले गये, वो उन्हें फाँसी दे देंगे, वो उन्हें मार डालेंगे... चलिये . चलिये...पिताजी ! मीर साहब को बचा लीजिये . मीर साहब को बचा लीजिये—पिताजी—!

[कन्हैया बेअस्तियार रोने लगता है ।]

मुंशीजी : ना रो मेरे बेटे, ना रो—तुम यहाँ ठहरो मैं जाता हूँ ।

कन्हैया : मैं भी आपके साथ चलूँगा ।

नत्थू : (मुंशीजी को जाते देखकर) नहीं, नहीं, नहीं आप... ना...जाइये... वो ...आप ... को मार डालेंगे ।

[मुंशीजी नत्थू का हाथ थाम लेते हैं । कुछ देर उसकी तरफ़ देखते हैं, और फिर उठकर चलने लगते हैं । गुलशन दाखिल होती है । बाल खुले हैं, भयानक शक्ल है, हाथ में खंजर है ।]

गुलशन : आज मैं किसी का खून पीऊँगी ! आज मैं किसी को जिन्दा नहीं छोड़ूँगी । (कन्हैया डर के मारे मुंशीजी से फिर चिपट जाता है) उन्होने मुझे समझा क्या है, मैं अब किसी की बात न मानूँगी । गामी खाँ गद्दार, वतन का दुश्मन...

मुंशीजी : गुलशन ।

[गुलशन आहिस्ता-आहिस्ता मुंशीजी की तरफ़ बढ़ती है ।]

गुलशन : मैं अपने शेखू का बदला लेकर रहूँगी...शेखू, बेटा शेखू... (गुलशन मुंशीजी के करीब पहुँचकर खंजर उठाती है और फिर फूट-फूटकर रोने लगती है) मुंशीजी साहब ! मैं मर गई ! बरबाद हो गयी !! तबाह हो गयी !!! मेरा घर खोद डाला...मेरे बच्चे को छीनकर ले गये...

उन्होंने मेरे बच्चे को मार डाला...शेखू...मेरा चाँद...मेरा लाडला !! (गुलशन की हिचकियाँ बँध जाती हैं) हाय ! हाय !! मुंशीजी साहब—! दिल्ली मिट गयी, दिल्ली बरबाद हो गयी...मर गयी दिल्ली...

मुंशीजी : (गुलशन के अलफ़ाज़ दोहराकर) दिल्ली मिट गयी...दिल्ली बरबाद हो गयी...मर गयी दिल्ली...नहीं... नहीं...नहीं... ऐसा हरगिज नहीं हो सकता । (स्टेज पर हल्की-सी रोशनी हो जाती है) दिल्ली नहीं मर सकती...दिल्ली नहीं मर सकती...दिल्ली कभी नहीं मर सकती...वो देखो...वो देखो...उजाला हो रहा है...शहीदों के खून से धरती लाल हो रही है...इस मिट्टी में आज़ादी का बीज उगेगा...दिल्ली जिन्दा रहेगी...दिल्ली हमेशा हमेशा जिन्दा रहेगी.....(मुंशीजी निढाल हो जाते हैं) हिन्दुस्तान आज़ाद होगा...

[मुंशीजी दम तोड़ देते हैं । गुलशन कन्हैया को सीने से लगा लेती है ।]

[पर्दा गिरता है]

